परामर्शदान

Counselling

लेखक

डॉ० रमराज डैविड

Creation Autonomous Academy

आभार

सर्वप्रथम मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे अपनी बुद्धि और समझ प्रदान की कि मैं परामर्शदान पर कुछ लिख सकूं। तत्पश्चात मैं अपने शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने मुझे इतनी गहनता से वचन की शिक्षा प्रदान किया। जिन्होंने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया। में उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक के लेखन, संशोधन, टाइपिंग, और अंतिम रुप देने में, मुझे सहयोग प्रदान किया। उन मित्रों का भी मैं आभारी हूं जिनका स्नेह और सहयोग मुझे हमेंशा मिलता रहा।

Creation Autonomous Academy

लेखक का प्राक्कथन

आज के समय में कलीसिया में पास्तरीय देखरेख और परामर्शदान की अत्यंत आवश्यकता है। यह सेवा अधिक समय की मांग करती है।

ऐसी स्थिति में इस विषय पर हिन्दी में बहुत कम सामग्री उपलब्ध है। जो कुछ उपलब्ध है भी वह नगन्य है और आम पास्टरों की पहुंच से बाहर है।

यह अध्ययन इस बात पर ध्यान केन्द्रित करेगा कि किस प्रकार पवित्र आत्मा की अगुवाई में परिश्रम पूर्वक सही प्रकार से कलीसिया की देखभाल किया जाए एवं समस्याग्रस्त लोगों को सही परामर्श दिया जाए। लेखक ने स्वयं पास्तरीय सेवकाई करते हुए विभिन्न बातों का अनुभव किया है। जिनको इस अध्ययन में शामिल किया है।

'पास्तरीय देखरेख और परामर्शदान' नामक यह पुस्तक अनेक वर्षों के अध्ययन-अध्यापन एवं पास्तरीय सेवकाई के अनुभव के उपरान्त हिन्दी भाषी पास्टरों की आवश्यकता के अनुसार तैयार की गयी है। यह पुस्तक पास्टरों की सेवा में मार्गदर्शन के लिए लिखी गयी है। ताकि कलीसिया के विश्वासियों को उनकी आवश्यकता के अनुसार देखरेख किया जा सके और उचित परामर्श दिया जा सके। यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए सरल, रोचक एवं व्यवहारिक है। पुस्तक में उदाहरणों का समुचित प्रयोग किया गया है।

मेरी इच्छा है कि भारतीय पास्टर इस पुस्तक से सहायता प्राप्त करें। सही व्यवहारिक पास्तरीय देखरेख और परामर्शदान हेतु इस पुस्तक का उपयोग करें। मैं वस्तुतः इस पुस्तक को प्रस्तुत करने के द्वारा पाठकों से यह आशा करता हूं कि वे इसका भरपूर उपयोग अपनी कलीसियाओं की देखरेख व परामर्शदान की सेवा में करेंगे।

डॉ० रामराज डेविड

Creation Autonomous Academy

विषय-सूची

भूमिका 05

अध्याय-1 बाइबल में अच्छे चरवाहे का विचार 07
अध्याय-2 लोगों को समझना 13
अध्याय-3 स्वयं को समझना 15
अध्याय-4 परामर्शदान का अर्थ, रुप एवं लक्षण 19
अध्याय-5 परामर्शदान की आवश्यकता 22
अध्याय-6 पास्तर के कार्य में परामर्शदान का स्थान 24
अध्याय-7 परामर्शदान हेतु लोगों की आवश्यकताओं का ज्ञान 29
अध्याय-8 परामर्शदान के लिए पास्टर की भूमिका 31
अध्याय-9 परामर्शदान में आत्मिक साधन 33
अध्याय-10 परामर्शदाता को विभिन्न प्रकार के दुःखो के ज्ञान की आवश्यकता 42
अध्याय-11 परामर्शदान की मूल मान्यताएं 44
अध्याय-12 पास्तरीय परामर्शदाता के गुण एवं योग्यताएं 46
अध्याय-13 परामर्शदान हेतु कुछ सामान्य समस्याएं 48
अध्याय-14 पास्तरीय देखरेख की हमारी सेवा का मूल्यांकन 63

बिब्लियोग्राफी 64

Creation Autonomous Academy

भूमिका

यीशु ने उनसे फिर कहा, ''मैं तुमसे सच-सच कहता हूँ, भेड़ो का द्वार मै हूँ। जितने मुझसे पहले आए वे सब चोर और डाकू--।'' पास्तरीय दायित्व की अभिव्यक्ति नया नियम की पुस्तकों में है। पास्तरीय दायित्व को नया नियम में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

सुसमाचारों में जो वर्णन हैं उनसे अत्यन्त स्पष्ट है कि प्रभु यीशु व्यक्तियों से सीधा और घनिष्ट व्यक्तिगत सम्बन्ध स्थापित करता है। यीशु प्रत्येक व्यक्ति को बेजोड़ व्यक्ति मानता था जो परमेश्वर के समक्ष अमोल है। बारह चेलों के प्रशिक्षण में यीशु ने प्रत्येक व्यक्ति पर ध्यान दिया। इसी व्यक्तिगत ध्यान के कारण ये चेले उस नये आन्दोलन के प्रेरित बन पाए जिसे यीशु मसीह ने आरम्भ किया और जो अब संसार के सब देशों में फैल गया है। कलीसिया को धर्म सेवा के उस आदर्श का पोषण और पालन करना है जिसे मसीह ने प्रस्तुत किया है। व्यक्तिगत सेवा और व्यक्तिगत परामर्शदान इन दोनों तत्वों को धर्म -सेवा के महत्वपूर्ण कार्य मानना चाहिए।

झुण्ड के देखरेख करने वाले चरवाहे के तरीके का प्रयोग स्वयं प्रभु यीशु ने किया । वह इसे अपने शिष्यों और विश्वासयोग्य अनुयाइयों (पीछे चलने वालों) के साथ अपने सम्बन्ध के रुप में प्रस्तुत करता है। ''हे छोटे झुण्ड मत डर ! क्योंकि तुम्हारे पिता ने प्रसन्नतापूर्वक तुम्हें राज्य देना चाहा है।'' (लूका 12:32), इसलिए यीशु ने उनसे फिर कहा, ''मैं तुमसे सच सच कहता हूँ, भेड़ों का द्वार मैं हूँ। जितने मुझसे पहले आए वे सब चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी। द्वार मैं हूँ । यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश करता है तो वह उद्धार पाएगा और भीतर - बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा। चोर केवल चोरी करने, मार डालने और नाश करने को आता है। मैं इसलिए आया हूँ कि वे जीवन पाएं और बहुतायत से पाएं । अच्छा चरवाहा मैं हूँ, अच्छा चरवाहा अपने भेड़ों के लिए अपना प्राण देता है। वह जो मजदूर है पर चरवाहा नहीं, और न ही भेड़ों का मालिक है, भेड़िए को आते देख भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है और भेड़िया झपट कर उन्हें तितर-बितर कर देता है। वह इसलिए भाग जाता है क्योंकि वह मजदूर है और उसे भेडों कि चिन्ता नहीं। अच्छा चरवाहा मैं हूँ । मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं - वैसे ही जैसे पिता मुझे जानता है और मैं पिता को जानता हूँ - और मैं अपने भेड़ों के लिए अपना प्राण देता हूँ। मेरी और भी भेड़ें है जो इस भेड़शाला में की नहीं । मुझे उनको भी लाना अवश्य है। और वो मेरी आवाज सुनेंगी, तब उनका एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा होगा ।'' (यूहन्ना 10:7-16)।

इस सम्बन्ध के अन्तर्गत शिष्य, अगुवे और कलीसिया के सभी सदस्य आते थे। अतः जब वे नाश्ता कर चुके, तो यीशु ने शमौन पतरस से कहा, ''हे शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू इनसे बढ़कर मुझसे प्रेम करता है? पतरस ने यीशु से कहा, हाँ प्रभु, तू तो जानता है कि मैं तुझसे प्रीति रखता हूँ ।'' यीशु ने पतरस से कहा, '' मेरे मेमनों को चरा।'' यीशु ने फिर दूसरी बार पतरस से कहा, '' शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रेम करता है?'' पतरस ने यीशु से कहा, हाँ प्रभु तू तो जानता है, कि मैं तुझसे प्रीति रखता हूँ।'' यीशु ने पतरस से कहा, '' मेरी भेड़ों की रखवाली कर ।'' यीशु ने तीसरी बार पतरस से कहा, ''शमौन, यूहन्ना के पुत्र, क्या तू मुझसे प्रीति करता है?'' पतरस ने यीशु से कहा, '' हे प्रभु, तू सब कुझ जानता है, तू यह भी जानता है कि मैं तुझसे प्रीति करता हूँ।'' यीशु ने उससे कहा, ''तू मेरी भेड़ों को चरा।'' (यूहन्ना 21:15-17)

पतरस को प्रभु यीशु ने झुण्ड अर्थात कलीसिया के देखरेख की सेवा सौंपा ।

पतरस ने भी धर्मवृद्धों को लिखा, ''मेरा अपने साथी धर्मवृद्धों से, जो तुम्हारे मध्य हैं, आग्रह है कि परमेश्वर के झुण्ड की रखवाली करो। यह सेवा परवशता से नहीं किन्तु स्वेच्छा से, अनुचित लाभ की दृष्टि से नहीं किन्तु उत्साह से, सौंपे हुए लोगों पर प्रभुता जताते हुए नहीं, परन्तु झुण्ड के लिए आदर्श बन कर होनी चाहिए । जब प्रधान मेषपाल प्रकट होंगे तो तुम्हें महिमा - मण्डित मुकुट प्राप्त होगा ।'' (1 पतरस 5:2)

इफिसुस के धर्म-वृद्धों को जब पौलुस प्रेरित ने उत्तरदायित्व सौंपा तब यह कहा, ''इसलिए अपनी और अपने पूरे झुण्ड की रखवाली करो जिसके मध्य पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की उस कलीसिया की रखवाली करो जिसे उसने अपने ही लहू से खरीदा है। '' (प्रेरितो० 20:28)

यीशु मसीह अच्छा और प्रधान चरवाहा है। भजन 23 और यहेजकेल 34 अध्याय में दिव्य रखवाले का वर्णन है।

पास्तरीय सेवा अपने स्वरुप और कार्य में अद्वितीय है।

भजन 23 में चरवाहे के गुण -

1- चराता है- भोजन खिलाता है।

2- पानी पिलाता है।

3- शान्ति लाता है ।

4- अगुवाई करता है।

5- निर्भय बनाता है।

6- मेजबानी करता है ।

यहेजकेल 34 में चरवाहे के गुण-

1- छुड़ायेगा ।

2- खोजेगा।

3- इकट्ठा करेगा।

4- निज देश में ले जाएगा।

5- चराएगा ।

6- बैठाएगा।

7- खोई हुई को खोजेगा ।

8- भटकी हुई को वापस लाएगा ।

9- घायल को पट्टी बांधेगा।

10- बीमार को सम्भालेगा।

11- नुकसान पहुँचाने वालो को नष्ट करेगा।

12- न्याय करेगा।

13- चरवाहा नियुक्त करेगा।

14- सुरक्षित करेगा ।

15- आशीष का कारण बनाएगा।

व्यक्तिगत सेवा और व्यक्तिगत परामर्शदान “ पास्तरीय देखरेख और परामर्शदान ” धर्म- सेवक का एक मौलिक कार्य है। धर्म सेवक इन सेवाओं के प्रति सजग रहें, साधन सम्पन्न एवं तैयार रहें।” यही इस विषय के अध्यापन का मुख्य उद्देश्य है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-1
बाइबल में अच्छे चरवाहे का विचार

चरवाहे और झुण्ड की चित्रात्मक भाषा का अर्थ सब जगह पर स्पष्ट नहीं है। क्योंकि जो लोग शहरों में रहते हैं वहां कोई भेंड़ नहीं होती है। अथवा जो लोग कस्बों अथवा बड़ी अरबन एरिया में रहते हैं वहां भी भेंड़ नहीं होती। हम इसे चरवाहे के कार्य से समझ सकते हैं।

चरवाहे का कार्यः-

चरवाहे और झुण्ड की चित्रात्मक भाषा का अर्थ हम पूर्ण रुप से तभी समझ सकते हैं जब हम यह जानें कि एक चरवाहा वास्तव में क्या-क्या करता है।

एक चरवाहे के मुख्य कार्य निम्नलिखित हैं।-

1- अगुवाई करना :-

वह अपने झुण्ड की एक अच्छी चरागाह एवं सुरक्षित विश्राम स्थान में जाने में अगुवाई करता है। (यशा० 40:11)

‘‘ वह चरवाहे के समान अपने झुण्ड को चराएगाः वह मेमनों को अपनी बाहों में समेट लेगा और गोद में लिए रहेगा। तथा दूध पिलाने वाली भेड़ों को धीरे - धीरे ले चलेगा।’’ (यशायाह 40:11)

Creation Autonomous Academy

2- हर एक आवश्यकताओं के लिए प्रबन्ध करनाः-

वह भेड़ों को भोजन खिलाएगा और उनकी प्रत्येक आवश्यकताओं के लिए प्रबन्ध करेगा। वह देखेगा कि उनके लिए पीने के लिए पानी हो और वे पुनः बल प्राप्त कर सकें। (भजन 23)

3- रखवाली करना :-

वह अपने झुण्ड का रखवाला है। वह शत्रु पशुओं, चोर अथवा अन्य खतरों से उनकी सुरक्षा करेगा। यहाँ तक कि जब उनके ऊपर खतरा आएगा तो वह उनके लिए जोखिम उठाएगा। (1 शमु० 17:34-35) ‘‘परन्तु दाऊद ने शाऊल से कहा, तेरा दास अपने पिता की भेड़-बकरियों को चराया करता था। जब कभी कोई सिंह या भालू आकर झुण्ड में से किसी मेमने को उठा लेता, तब मैं उसके पीछे दौड़कर उस पर आक्रमण करता और उसके मुँह से छुड़ा लेता था । और

जब वह मुझ पर हमला करता तो मैं उसकी दाढ़ी पकडकर प्रहार करता और उसे मार डालता था।'' (1 शमु० 17:34-35)

4- भटके हुओं को खोजना -

वह अपनी खोई हुई भेंड़ को ढूँढ़ता है जब तक कि वह मिल नहीं जाती। इसका अर्थ है कि वह इस कार्य में कठिन और खतरनाक स्थानों में जाता है। चाहे अन्धकार हो, रात हो अथवा खराब मौसम हो वह अपनी खोई हुई भेड़ को तब तक ढूँढता है जब तक कि खोई हुई भेंड़ उसे मिल नहीं जाती (मत्ती 18:12)

'' तुम क्या सोचते हो ? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हो और उनमें से एक भटक जाए तो क्या वह निन्यानवे को पहाड़ पर छोड़कर उस एक को ढूँढ़ने न जाएगा। जो भटक रही है?'' (मत्ती 18:12)

5- प्रत्येक को व्यक्तिगत रुप से जानता है:-

वह व्यक्तिगत रुप से प्रत्येक भेंड़ को नाम से जानता है, अतः वे उसकी आवाज को जानती -पहचानती हैं और जब वह उन्हें बुलाता हैं वे उसके पीछे चलती हैं। (यूहन्ना 10:1-4)

''मैं तुमसे सच -सच कहता हूँ, वह जो द्वार से भेंड़शाला में प्रवेश नहीं करता, परन्तु किसी दूसरी ओर से चढ़ जाता है, वह चोर और डाकू है। परन्तु जो द्वार से प्रवेश करता, वह भेंड़ो का चरवाहा है। द्वार पाल उसके लिए द्वार खोलता है और भेड़ें उसकी आवाज पहचानती हैं। और वह अपनी भेंड़ो के नाम लेकर पुकारता है और उन्हें बाहर ले जाता है । जब वह अपनी सब भेंड़ो को बाहर निकाल लेता है तो उनके आगे -आगे चलता है, और भेड़ें उसके पीछे हो लेती हैं, क्योंकि वे उसकी आवाज पहचानती हैं। (यूहन्ना 10:1-4)

6- एक नर्स की भाँति देखभाल करना :-

वह सभी भेड़ों की देखभाल करता है। वे जो बीमार या कमजोर हैं, और एक नर्स (धाय) की भाँति मेमनों की विशेष देखभाल करता है। (उत्पत्ति 33:13-14)

परन्तु उसने उससे कहा, 'मेरा स्वामी तो जानता है कि बच्चे सुकुमार हैं और दूध पिलाने वाली भेड़, बकरियाँ और गाएँ हैं जिनका बोझ मुझी पर है। यदि वे एक दिन भी अधिक हाँके जाएं, तो सब भेड़ - बकरियाँ मर जाएँगी । इसलिए मेरा प्रभु अपने दास के आगे बढ़ जाए। और मैं अपने पशुओं की चाल के अनुसार जो मेरे सामने हैं और बाल बच्चों की चाल के अनुसार धीरे-धीरे चलता हुआ अपने प्रभु से सेईर में आ मिलूँगा।' (उत्पत्ति 33:13-14)

इस प्रकार हम देखते हैं कि एक चरवाहा बनने का अर्थ है झुण्ड की देखरेख और विकास में व्यक्तिगत रुप से एक गहरी रुचि लेना । झुण्ड की सभी भेड़ों में प्रत्येक के साथ व्यक्तिगत रुप से गहरी रुचि लेना । यह बुलाहट है मजबूती और उत्साह के लिए, धैर्य और आत्म बलिदान के लिए। एक अच्छा चरवाहा अपने झुण्ड के कल्याण (आवास एवं आराम) को हमेशा स्वयं के आराम से पहले रखता है। इसका अर्थ है कि वह नींद त्यागता है और व्यक्तिगत खतरे अथवा मृत्यु तक का सामना करता है।

Creation Autonomous Academy

कलीसिया में अगुए का कार्य इसी प्रकार से है। नये मसीहियों को खिलाना सत्य के साथ, गलत शिक्षा और रिक्तता के विरुद्ध उनकी सुरक्षा करना, आवश्यकता के समय उनकी देखरेख करना। जो विश्वास में कमजोर हैं उनको उत्साहित करना, आज्ञाकारी बनाना और अनुशासित रखना, अगुवाई करना और आत्मिक निर्देशन करना। (यूहन्ना 21:15-17, प्रेरितों 20:28-31, 1 थिस्स० 5:2-15, 2 तीमु० 4:1-5) इन सब क्रियाओं (कार्य - कलाप) को ''परमेश्वर के झुण्ड को चराने '' के विचार में सम्मिलित करना है। (1 पतरस 5:2)

‘‘अपने मध्य स्थित परमेश्वर के झुण्ड की रखवाली करो - और यह किसी दबाव से नहीं, पर स्वेच्छा से तथा परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, तुच्छ कमाई के लिए नहीं वरन् उत्साहपूर्वक करो।’’ (1 पतरस 5:2)

प्रभु यीशु द्वारा अपनाया गया तरीका :-

प्रभु यीशु का जीवन और उसकी सेवा व्यक्तिगत रुप से मसीहियों के लिए, सम्पूर्ण कलीसिया के जीवन के लिए और विशेष रुप से कलीसिया के अगुवों के जीवन और कार्य के लिए एक तरीका है। यीशु मात्र संदेश ले जाने और ले आने वाला नहीं था वह स्वयं एक संदेश था। अपने जीवनशैली के द्वारा, चरित्र गुणों के द्वारा, लोगों की आवश्यकता में उनके निकट आने में दया और तैयारी के द्वारा, यीशु ने अपने पीछे चलने वालों के लिए एक तरीके को अपनाया । प्रभु यीशु की जीवनशैली के अनुसार जीवन जीने के लिए कलीसिया के संगति में सभी मसीही बुलाए गये हैं। सभी मसीही बुलाए गये हैं ‘जीवित पत्र बनने के लिए जिसे प्रत्येक जाने और पढ़े ।’ (2 कुरि० 3:1-3)

प्रभु और स्वामी के रुप में यीशु सेवक भी था । अगुवाई के विचार में अपने समय के अन्य अगुवों के समक्ष यीशु ने नया अर्थ दिया। जिनकी उसने अगुवाई की उनके साथ रहकर उसने उनकी सेवा किया, उनके द्वारा सेवा नहीं लिया। (मर० 10:45) मसीही सेवकाई के सभी रुपों के लिए उसने नया तरीका अपनाया। ‘सेवक चरवाहे’ के रुप में अपने आप को प्रस्तुत किया । (लूका 22:25-27, यूहन्ना 13:13-16) उसने यही तरीका अपने पीछे चलने वालों, अपने शिष्यों को भी बताया और सेवक बनने के लिए बुलाया। (मर० 10:42-44) स्वेच्छा से प्रभु का सेवक (1 कुरि० 4:1), परमेश्वर का सेवक (1 कुरि० 3:5) और लोगों का सेवक बनने के लिए बुलाया। (2 कुरि० 4:5)

अपने स्वयं के जीवन और सेवा द्वारा यीशु ने बहुत स्पष्टता से दिखाया कि एक ‘ सेवक’ बनने का क्या अर्थ है। उसने इसे दो तरीके से स्पष्ट किया ।-

(क) शिक्षा द्वारा

(ख) व्यवहार द्वारा

(क) शिक्षा द्वारा : लोगों के साथ एकरुप होना :-

यीशु ने अपने समय के नियमों और साधारण जीवन के बारे में पूर्ण रुप से बताया। वह वास्ताविक मनुष्य के रुप में आया, सेवक के स्वभाव को लिया । एक मनुष्य के रुप में आया और सामान्य मानवीय जीवन में भाग लिया । वह नम्र था, यहाँ तक की मृत्यु के समय भी आज्ञाकारिता के रास्ते पर चला। (फिलि० 2:7) एक सेवक के रुप में यीशु ने अपने आप को मानवीय अनुभव एवं आवश्यकता से अलग नहीं रखा । वह आया और पुरुषों और स्त्रियों के बीच में रहकर सामान्य जीवन जिया। (यूहन्ना 1:14) उसने पाप की तरफ ले जाने वाले रास्ते का अनुसरण नहीं किया। (इब्रा० 2:14-17) एक मनुष्य की तरह उसने परीक्षा का सामना किया (इब्रा० 2:14-18), सुख, दुख, भूख, दर्द, क्रोध, थकान, निराशा आदि का अनुभव किया। (यूहन्ना 2:1-11, 11:33-36) अपने शिष्यों और निकट सम्बन्धियों मित्रों की संगति का आनन्द उठाया। अपने चारों ओर के लोगों के साथ रहकर जीवन जीने के गहरे से गहरे एवं सम्भव तरीकों के विषय में बताया। उसने यह जाना कि कैसे और क्यों लोग सोचते और आक्रमण करते हैं। (यूहन्ना 2:25) लोगों के पाप और कमजोरी का ज्ञान प्रभु यीशु को लोगों के साथ पूर्ण भागेदारी करने से पीछे नहीं ले जा सका । उसने परमेश्वर पर सृष्टिकर्ता और प्रेमी पिता के रुप में भरोसा किया और पाप और मृत्यु के विषय में उसके प्रेम और भलाई को जाना । लेकिन यह भरोसा एक सही यहूदी बनने, नासरत का एक जवान मनुष्य जो मरेगा बनने में बाधा नहीं बना। उसके पास एक बुलाहट थी, ‘‘ औरों के लिए जीने और मरने की जिससे कि दूसरे स्वतंत्रता और आनन्द के साथ रहें। ’’ पुनरुत्थित यीशु ने अपने शिष्यों को संसार में सेवा करने के लिए तैयार किया । उसने कहा, ‘जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे मैं तुम्हें भेजता हूँ।’ (यूहन्ना २० २१-२२) प्रभु यीशु ने अपने चेलों को संसार में भेजा कि वे लोगों के साथ रहते हुए उनके जीवनचर्या में भागीदार हों।’ अपने को लोगों के साथ एकरुप करें।

Creation Autonomous Academy

(ख) व्यवहार : लोगों के साथ यीशु का व्यवहार :-

मनुष्य के लिए सम्भव नहीं है कि वह प्रभु यीशु के चरित्र, जीवन और सेवा को पूर्ण रुप से समझ सके । परन्तु कैसे उसने शिष्यों को उदाहरण बनने के लिए बुलाया उन कुछ तरीकों के बारे में हम समझ सकते हैं। मसीही जानते हैं कि प्रभु यीशु मानवीय सम्बन्धों का स्वामी है । उसने अपने व्यवहार से लोगों को 'सेवक चरवाहे' के कार्य का एक गहरा अर्थ दिया। सभी समयों के लिए पास्तरीय देखरेख की सेवा हेतु एक नमूना दिया। प्रभु यीशु ने जीवित सामर्थ्य से सहायता किया । यीशु ने अपने व्यवहार से चेलों को सिखाया, चेले स्वयं और दूसरों के साथ सम्बन्धों में उनमें से कुछ व्यवहार प्रदर्शित करते हैं।

यीशु कौन और क्या था यह उसका सम्पूर्ण चित्र नहीं है। परन्तु यीशु की सेवा में व्यवहार के कुछ बिन्दु निम्नलिखित हैं।

1- परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता :-

इसके लिए प्रभु यीशु ने लोगों को नियमों, उपनियमों से नहीं बांधा। बल्कि उन्हें स्वेच्छा से परमेश्वर की आज्ञा पालन करने के लिए प्रेरित किया। उसने आज्ञाकारिता के लिए लोगों को स्वतन्त्रता दी। (लूका 4:16-21, यशा० 61:1-2)

यीशु ने लोगों से कहा, 'वह व्यवस्था को नष्ट करने नहीं बल्कि पूरा करने आया है। (मत्ती 5:17) यीशु ने बताया कि आज्ञा पालन करने के लिए परमेश्वर ने जो व्यवस्था दी है उसका आशय क्या है। उसने यहूदी व्यवस्था के कुछ विवरणों का अर्थानुवाद किया उदाहरण के लिए सब्त (प्रेरितों० 13:38-39, मरकुस 2:23-25)। उसने बार -बार अपने श्रोताओं को व्यवस्था के सही अर्थ की शिक्षा दिया । (मत्ती 5:21-28, 22:35-40)

2- लोगों के लिए गहरी तरस :-

यीशु ने सभी लोगों पर तरस खाया, विशेषकर उनके ऊपर जो हतास और असहाय थे। (मत्ती 9:35-36, 15:32, मरकुस 1:40-42)

3- अधिकारपूर्ण शिक्षा :-

प्रभु ने अधिकार के साथ शिक्षा दिया । (मत्ती 7:28-29) जब जरुरत थी तो उसने लोगों का विरोध किया और उन्हें सही किया । जैसे लोग अधिकार का उपयोग कर एक कलब में मार पीट करते हैं वैसे नहीं बल्कि उसने लोगों को सही करने का कार्य तरस के साथ किया ।

4- लोग जिस स्थिति में थे प्रभु यीशु ने उन्हें वैसे ही स्वीकार किया।:-

Creation Autonomous Academy

एक व्यक्ति को एक व्यक्ति के रुप में स्वीकार किया। वह उनके व्यवहार, विचार, समझ से क्रोधित नहीं हुआ। यीशु ने गलत व्यवहार को सहमति नहीं दी, बल्कि गलत व्यवहार को छोड़ने में उनकी सहायता किया। व्यभिचार में पड़ी महिला की प्रभु ने सहायता की, उसे बचाया परन्तु उसी समय उसे चेतावनी दी, 'अब से पाप मत करना ।' (यूहन्ना 8:1-11) लोगों को उनके पाप के विषय में उसने ईमानदारीपूर्वक बताया । क्योंकि वह उनसे प्रेम करता था और उन्हें स्वीकार करता था। जो वास्तव में सहायता चाहते थे उन सब की सहायता करने और चंगाई देने के लिए वह उपलब्ध था। यीशु सभी जातियों और पापियों का मित्र था । (लूका 25:1-12), वह अन्यजातियों, कुछ धनी और सामर्थी लोगों का भी मित्र था अतः वह मित्रतापूर्वक उन्हें स्वीकार करने के लिए भी उपलब्ध था । और विभिन्न प्रकार से उनकी सहायता करने के लिए भी उपलब्ध था। सताए हुए लोग (लूका 7:36-50), चुंगी लेने वाले (लूका 19:1-10), भिखारी (लूका 18:35-43), उच्च वर्ग के धार्मिक अगुवे (यूहन्ना 3:1-10) सभी को उसने प्रेमपूर्वक स्वीकार किया और पाप की

दलदल से निकलने में उनकी सहायता की । लोगों की सहायता करने के लिए उसने सताव, लिंगभेद, जाति भेद, वर्गभेद, सामाजिक रुढ़ि एवं विषमता आदि सभी बाधाओं को पार किया।

5- प्रभु यीशु निष्पक्ष था :-

प्रभु यीशु ने किसी भी विशेष व्यक्ति अथवा समूँह का पक्ष नहीं लिया । गरीब, धनी और प्रसिद्ध अगुवों सभी के साथ समान व्यवहार किया। (मत्ती 8:10-14)

6- आवश्यकतामन्द लोगों की सहायता के लिए समय निकालाः-

जब वह थका हुआ अथवा व्यस्त था तब भी उसने सहायता के लिए समय निकाला। (मर० 1:32-34) उसने समय के अनुशासित उपयोग के साथ उपलब्ध होने को संतुलित किया। भीड़, से निकलकर प्रार्थना और मनन के समय को क्रमबद्ध किया। (मरकुस 1:35-39, 6:30-32, लुका 11: 1-4)

7- यीशु ने सहायता करने और परामर्श देने को व्यक्तिगत रुप से बड़ा महत्व दियाः-

प्रारम्भिक सेवा में, यीशु का प्रचार बहुत लोकप्रिय था। भीड़ ने उसका अनुशरण किया जो उसके संदेश को सुनने के लिए प्रतीक्षा कर रही थी। बात इतनी फैल गई कि वह खुले रुप में एक नगर में प्रवेश नहीं कर सकता था। लेकिन प्रभु यीशु नगर के बाहर था और लोग सभी तरफ से आए थे (मरकुस 1:40-45, 2:2-3, 3:7-9, 19,20) जब कभी भी यीशु ने प्रचार किया उसने अपने संदेश को लोगों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर लागू किया। (मर० 4:1-9) उसने व्यक्तिगत अथवा छोटे समूह के लिए सेवा की। अधिकांश उसके दृष्टान्त आत्मिक समस्याओं पर केन्द्रित हैं, यह व्यक्तिगत अनुभव हैं। यीशु ने सिखाया कि परमेश्वर के लिए प्रत्येक व्यक्ति बहुत ही महत्वपूर्ण है। ‘‘स्वर्ग में उन निन्यानवे धर्मियों की अपेक्षा एक मन फिराने वाले पापी के लिए अधिक आनन्द मनाया जाएगा। (लूका 15:3-5)

8- प्रभु यीशु ने अलग-अलग प्रकार के लोगों की सहायता हेतु अलग-अलग विधियों का उपयोग किया :-

उसने लोगों तक पहुँचने के लिए मात्र एक ही तरीके को नहीं अपनाया बल्कि अलग-अलग अनेक तरीके अपनाए। प्रभु यीशु ने जो विशेष तरीके अपनाया, वह था बातचीत (वार्तालाप) अथवा व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार का तरीका। लोगों के जीवन से सम्बन्धित आधारभूत समस्याओं में उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रश्न- कला का उपयोग किया। इस तरीके को अन्य दर्शनशास्त्रियों ने भी उपयोग किया। उदाहरण के लिए यूनानी विचारक सुकरात ने साधारण प्रश्न और उत्तर की विधी का उपयोग किया । लेकिन सत्य की बौद्धिक समझ पर विश्वास करने वाले विचारकों से यीशु भिन्न है। उन विचारकों की बातचीत और प्रश्न सतही स्तर के थे। उनका सम्बन्ध लक्ष्य की अपेक्षा लोगों के विचार, अनुभव, अथवा व्यवहार से सम्बन्धित था। यीशु इसके विपरीत था। उसके प्रश्नों की दिशा लोगों के सम्पूर्ण भावनाओं और व्यक्तिगत सम्बन्धों व उनके विचारों की तरफ थी। उसने सिखाया कि यदि लोग परमेश्वर के नियम-व्यवस्था की आज्ञा के अनुसार जीवन जीते हैं। तब वे समझ पाएँगे कि मस्तिष्क हृदय की आज्ञा से मिलकर कार्य करता है। धनी युवक यीशु के पास आया व्यवस्था के विषय में बौद्धिक समझ और नियमों के साथ, लेकिन वह प्रेम पूर्वक आज्ञाकारिता से जुड़ा नहीं था और न ही आत्मबलिदान से, जो कि उसका वास्तविक जीवन था। (मरकुस 10:17-22) लोगों में परिवर्तन लाने के लिए यीशु उपलब्ध था, केवल उनके विचारों में रिक्तता को दिखाने के द्वारा नहीं, बल्कि मन फिराव के योग्य फल लाने वाला और परमेश्वर के राज्य की आज्ञाओं के प्रति समर्पण द्वारा। (मत्ती 4:17-22, लुका 19:1-10)

Creation Autonomous Academy

प्रभु यीशु की विधि का एक बड़ा भाग बातचीत का अच्छी तरह से सुनना था। जब लोग बोलना चाहते थे तब उसने सुना। कई दृष्टान्त अर्थ प्राप्त किए क्योंकि उसने उनका अन्त एक प्रश्न के साथ किया। तब उसने सुना कि लोग उसके व्याख्या का अर्थ कैसे समझते हैं। जब एक व्यवस्थापक ने यीशु से पूछा, '' हे गुरु, अनन्त जीवन का उत्तराधिकारी होने के लिए मैं क्या करुँ?'' यीशु ने उसकी तरफ प्रश्न घुमायाः '' व्यवस्था में क्या लिखा है?'' तब उसने सुना कि मनुष्य स्वयं के लिए कैसे उत्तर देता है। (लुका 10:25-26)

यीशु ने जिनको शिक्षा दिया उनसे कहा, 'सुनो और समझो '। विशेष रुप से जब वह अपने शिष्यों को सेवा के लिए प्रशिक्षित कर रहा था, इस बात को सिखाया कि लोग सुनें, लेकिन उन्होंने सही तरीके से समझने के लिए नहीं सुना। (मरकुस 7:14-23, 8:14-18)

9- यीशु ने उत्साह और धन्यवाद के लिए शीघ्रता से आमंत्रित किया :-

विशेष रुप से जब वह आत्मिक रुप से कमजोर लोगों को मजबूत कर रहा था, उनमें आत्मिक गुणों को भर रहा था उत्साह और धन्यवाद के लिए शीघ्रता से आमंत्रित किया। उदाहरणस्वरुप सतपति सूबेदार की आज्ञाकारिता अथवा सरुफिनी स्त्री का नम्र विश्वास । (मत्ती 8:5-13, 15:21-28) उसने लोगों का समर्थन प्राप्त करने के लिए उन पर दबाब नहीं डाला, परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने के लिए उसने उन्हें ईमानदारीपूर्वक समझाया। उसने शास्त्रियों और फरीसियों की आत्मिक उच्छृंखलता का विरोध किया जो अपनी मौखिक व्यवस्था और अपने बनाए नियमों का तो पालन करते थे, लेकिन व्यवस्था की वास्तविक आज्ञा न्याय, दया और विश्वास को अनदेखा करते थे। (मत्ती 23:13-28)

10- शारीरिक और आत्मिक चंगाई के बीच यीशु ने एक बहुत निकट सम्बन्ध देखा :-

वह लोगों की मात्र आत्मिक आवश्यकता पर केन्द्रित नहीं था अथवा न ही शारीरिक आवश्यकता भोजन और चंगाई पर केन्द्रित था। उसने देह, प्राण, आत्मा तीनो को चंगाई दी, लोगों को पूर्ण रुप से चंगाई प्रदान किया। उसने शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार की चंगाई देने के लिए बुलायाः क्या सरल है, यह कहना कि, 'तेरे पाप क्षमा हुए' अथवा यह कहना, ' उठ और चल फिर ?' लेकिन तुम जानते हो कि मनुष्य के पुत्र को इस पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है- तब उसने लकवे के मारे से कहा, 'उठ अपनी खाट उठा और घर जा' (मत्ती 9:5-6)। यीशु ने दोनों प्रकार की आवश्यकताओं में अपनी ईश्वरीय सामर्थ का अपयोग किया। उसने आत्मिक स्वास्थ्य को महत्व दिया। जैसे नीकुदेमुस को बताया, 'तुम्हें नया जन्म लेना आवश्यक है। (यूहन्ना 3:1-10) शारीरिक विश्राम और शान्ति से आत्मिक विश्राम और शान्ति जुड़ा है, दोनों में सम्बन्ध है।, 'हे सब थके और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूँगा।' (मत्ती 11:28-30)

इस पाठ में प्रभु यीशु के सम्पूर्ण व्यवहार का विवरण तो नहीं है, परन्तु इससे हम पास्तरीय देखरेख के आधारभूत नियम और परामर्शदान के आधारभूत नियम प्राप्त कर सकते हैं।

Creation Autonomous Academy

अध्याय - 2

लोगों को समझना

पास्टर और उसके लोग :-

1- लोगों के विषय में सभी तथ्यों का अध्ययन करें और समझें :-

एक पास्टर के लिए आवश्यक है कि वह लोगों के विषय में सभी तथ्यों का अध्ययन करे और समझे कि वे किस तरह से सोचते और व्यवहार करते हैं। यह प्रभावशाली परामर्शदान के लिए एक आधार है। वह जाने कि विवेकपूर्ण और अविवेकपूर्ण तथ्य प्रतिदिन के जीवन में लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव डालते हैं। एक परामर्शदाता की बातचीत के परिणामस्वरुप विचार, भावनाएं एवं शुभकामनाएं प्राप्त होती हैं।

2- लोगों को समझे :-

पास्टर का लोगों के साथ स्वयं का सम्बन्ध यह है कि वह परामर्श देने के लिए उन्हें समझे । शोकित स्थिति में सुरक्षा दे, घमंड की भावना को स्थान न दे, जो सहायता प्राप्त करने वाले हैं उनसे अपने आप को ऊँचा न समझे।

3- लोगों की समस्याओं का निदान, 'एक व्यक्ति के रुप में' समझकर करें:-

सभी प्रकार की समस्याओं के निदान में 'एक व्यक्ति के रुप ' में समझकर उसका निदान करें 'एक वस्तु' समझकर नहीं।

लोग कई वस्तुओं के साथ काम करते हुए जीवन यापन करते हैं। एक निर्माणकर्ता ईंटो के साथ कार्य करता है, एक लिपिक (कलर्क) कागज और कलम के साथ अथवा टंकण मशीन (टाइप राइटर) के साथ कार्य करता है। यदि हम सावधान न रहें तो कई बार हम लोगों की सोच को ऐसे पाएंगे जैसे वे वस्तु थे। यहाँ एक खतरा है कि हम लोगों की समस्याओं का ऐसे निदान कर सकते हैं जैसे वे मानव की अपेक्षा कम हैं।

(क) कारखना प्रबन्ध :-

एक कारखाना प्रबन्धक अपने कर्मचारियों के विषय में ठीक उसी तरह से सोचता है जैसे कि वह अपनी मशीन (यन्त्र) के विषय में सोचता है। वह कार्य का ऐसे प्रबन्धक करता है जिससे लाभ हो अन्यथा वे भाग जाएंगे।

(ख) कार्यालय प्रबन्धक :-

Creation Autonomous Academy

एक कार्यालय प्रबन्धक अपने स्टाफ के साथ ऐसे व्यवहार करता है जैसे उनके पास अपना स्वयं का दिमाग नहीं है। वह किसी को भी निर्णय लेने और जिम्मेदारी लेने की अनुमति अथवा छूट नहीं देता।

(ग) शिक्षक :-

एक शिक्षक अपने छात्रों के साथ ऐसा व्यवहार करता है कि उनको ज्ञान से भरपूर करना है। वह किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं देता अथवा अपने बारे में सोचता है।

(घ) एक पति :-

एक पति अपनी पत्नी के साथ ऐसा व्यवहार करता है कि पत्नी उसकी आज्ञा का पालन करे। यदि वह ऐसा नहीं करती तो पति उसे पीटता है। इसी प्रकार कभी-कभी पति के साथ पत्नियाँ भी व्यवहार करती हैं।

ये सब उदाहरण सम्बन्ध के विषय में हैं जहाँ लोग, 'एक व्यक्ति' के रुप में लोगों के साथ व्यवहार करने में असफल हैं। जो उनके प्रति आदर एवं प्रेम का व्यवहार करते हैं ।

बाइबल के समय में यहूदियों ने अन्यजातियों को 'कुत्ते' कहा। इसी प्रकार के अनेक अपमानजनक शब्दों के प्रयोग विभिन्न देशों में होते हैं।

हिटलर ने विश्वयुद्ध के समय सहस्रों यहूदियों को इसलिए मरवा दिया क्योंकि वे उसके अनुसार साथ जीने लायक नहीं थे।

4- प्रत्येक व्यक्ति हेतु प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वरीय व्यवहार :-

प्रभु यीशु ने ईश्वरीय व्यवहार को सिखाया। (यूहन्ना 14:9) प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रत्येक परिस्थिति में महान उपलब्धता दिखायी । उसने अपने लाभ के लिए लोगों पर नियन्त्रण करने का प्रयास नहीं किया।

5- परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ परिपक्व सम्बन्ध :-

प्रभु यीशु सेवक के रुप में लोगों की सहायता करने, परिपक्व स्त्री-पुरुष के रुप में उन्हें विकसित करने, उनके सम्बन्ध परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ विकसित करने, ''परमेश्वर के साथ और एक दूसरे के साथ'' लोगों के अन्दर परिपक्व सम्बन्ध विकसित करने आया।

6- मानव बुद्धि और ज्ञान की जानकारी होना आवश्यक है :-

यीशु के सेवक के रुप में पास्टर अपना व्यक्तिगत समर्पण करता है और उनके साथ जो सेवा करते हैं। लेकिन यह सत्य, तथ्य है कि लोगों के साथ बात करने में और उन्हें सुधारने में वह हरेक तरफ से परीक्षाओं का सामना करता है। क्योंकि बहुत ही सरल है शीघ्र पक्षपात कर बैठना, धैर्य और समझ खो बैठना।

Creation Autonomous Academy

इसलिए एक पास्टर को मानव बुद्धि और उसके ज्ञान का जिनकी वह सहायता कर रहा है जानकारी होना आवश्यक है। गहरी से गहरी समस्या का उत्तर मानव बुद्धि के बाहर से नहीं आता। जिनके पास बुद्धि और ज्ञान है वे इसी प्रकार की समस्याओं से प्रभावित होते हैं। वे परमेश्वर और एक दूसरे के साथ गलत सम्बन्ध की समस्या से प्रभावित होते हैं। यीशु मानव बुद्धि के मूल्य को जानता था लेकिन उसने मानव बुद्धि की सीमितताओं को दिखाया। (लूका 6:39)

अध्याय -3
स्वयं को समझना

पास्टर और उसकी अन्तर्दृष्टि :-

एक पास्टर की भूमिका की अपनी समझ और उपलब्धता की निश्चितता, पास्टर की भूमिका को पूरा करती है।

1- कमजोर अन्तर्दृष्टि :-

यदि हम सोचते हैं कि हम द्वितीय श्रेणी के हैं। उपलब्धता, अवसर, आवश्यकता, कमी में बदलाव असम्भव है। तब हमारी अर्न्तदृष्टि प्रभाव डालेगी कि हम दूसरों के साथ क्या व्यवहार करें और दूसरे हमारे साथ कैसा व्यवहार करें।

(क) हमारी कमजोर अर्न्तदृष्टि हमारे कार्य में हमारे सोच-विचार और विश्वास को कमजोर करेगी।
(ख) यह लोगों के विश्वास को कमजोर करेगी जिनकी हम सहायता कर रहे हैं।
(ग) भूमिका को भय से देखने पर पास्टर अपनी उपलब्धता और विश्वास को खो देगा।
(घ) लोग उस पर से अपना विश्वास खो देंगे।
(ङ) पास्टर लोगों की समस्याओं में उनकी सहायता करने के लिए उपलब्ध नहीं होगा।

2- सकारात्मक अर्न्तदृष्टि :-

एक पास्टर के कार्य का बड़ा भाग दूसरों की सहायता करने में लगता है। एक व्यक्ति के रुप में इस भूमिका को पूरा करने में और भूमिका को समझने के लिए यह विशेष रुप से उसके लिए महत्वपूर्ण है।

(क) सकारात्मक अर्न्तदृष्टि हमारी सहायता करती है कि हम क्या हैं।
(ख) वह जिम्मेदारी स्वीकार करने के तरफ ले जाती है।
(ग) लोगों को विश्वास देती है।

क्योंकि हम सकारात्मक रुप से देखते और समझते हैं।

Creation Autonomous Academy

3- पास्टर अच्छा डॉक्टर जैसा हो :-

एक पास्टर ऐसे हो जैसे एक अच्छा डॉक्टर जो अपने चिकित्सा के ज्ञान में उपलब्ध है और उस पर विश्वास रखता है। वह विश्वास पूर्वक रोगी को समझाता है एवं पुनः स्वास्थ्य प्राप्त करने में रोगी की सहायता कर सकता है। यदि डॉक्टर दवाओं के ज्ञान में अथवा रोगी के इलाज में विश्वास खो देता है, तो लोग उसकी सहायता तो लेंगे परन्तु उसकी सलाह को नहीं मानेंगे। यदि डॉक्टर अपने ऊपर ज्यादा विश्वास रखता है, यद्यपि उसकी अर्न्तदृष्टि अच्छी है लेकिन वह वास्तव में उपलब्ध नहीं हो पाता यह उसकी कमजोरी है। ऐसी स्थिति में वह रोगी का इलाज अपनी पसन्द से करेगा ।

अपनी इच्छा के अनुसार करेगा रोगी की स्थिति और बीमारी के अनुसार नहीं। यही पास्टर के लिए भी सत्य है। यदि हम अपनी क्षमता का सर्वोत्तम उपयोग करते हैं तो हमारी अर्न्तदृष्टि महत्वपूर्ण, सत्य और मूल्यवान है।

4- पास्टर सकारात्मक अर्न्तदृष्टि रखे :-

एक पास्टर एक परामर्शदाता के रुप में अपनी उपलब्धता एवं विश्वास के लिए महत्वपूर्ण ज्ञान, विश्वास और प्रशिक्षण प्राप्त होता है। दूसरे शब्दो में एक पास्टर के रुप में उसे सकारात्मक अर्न्तदृष्टि रखने की आवश्यकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो वह नहीं है उस रुप में अपने को प्रस्तुत करे। एक अच्छी अर्न्तदृष्टि रखने का अर्थ यह नहीं है कि वह अपनी कमजोरी को छिपाये। इसका अर्थ यह है कि सत्य-तथ्य को वह स्वीकार करे। तभी वह सफलतापूर्वक अपनी सीमितताओं के साथ कार्य कर सकता है और अपनी योग्यता का उपयोग कर सकता है।

5- अर्न्तदृष्टि स्वयं जाँच एवं स्वयं मूल्यांकन पर आधारित हो :-

एक अच्छी अर्न्तदृष्टि के लिए आवश्यक है कि वह ईमानदारीपूर्वक स्वयं जाँच और स्वयं मूल्यांकन पर आधारित हो।

यह स्वयं मूल्यांकन मान्य सूचनाओं पर आधारित मूल्य पर आवश्यक है । हम तीन मुख्य स्रोतों से सूचना प्राप्त कर सकते हैं-

(क) हम स्वयं अपने विषय में क्या जानते हैं।-स्वयं का मूल्यांकन
(ख) हमारे विषय में दूसरे क्या जानते हैं।- औरों द्वारा मूल्यांकन
(ग) हमारे जीवन के विषय में परमेश्वर का मूल्यांकन।

स्रोत 'क' और 'ख' दोनों विषय मानवीय रिक्तता के हैं और इनका मूल्यांकन सावधानी पूर्वक करना आवश्यक है। स्रोत 'ग' मानवीय रिक्तता का विषय नहीं है। परमेश्वर ने मानक के रुप में प्रभु यीशु का जीवन दिया है, जिसके द्वारा सही तरीके से अपने स्वयं के ज्ञान और अपने बारे में दूसरों के विचारों का मूल्यांकन कर सकते हैं।

साकारात्मक रुप से सोच-विचार करें :-

नकारात्मक और गलत अर्न्तदृष्टि से मान्य और सकारात्मक अर्न्तदृष्टि की तरफ कैसे बदल सकते हैं? इसके लिए निम्नलिखित छः सुझाव है।-

1- अपने जीवन के विषय में सही और स्पष्टता से सोचें :-

स्वयं के विषय में न अधिक सोचें अथवा न कम, न ऊँचा सोचें अथवा न ही नीचा । न अपने को ज्यादा महत्व दें और न ही निरन्तर अपनी कमजोरी, पापी और उपलब्धता खोने वाले के रुप में विचार करें। अपने कार्य के अनुसार, उस कार्य के प्रकाश में ईमानदारीपूर्वक अपनी क्षमता का मूल्यांकन करें। इस तरीके से आप अपने जीवन के विषय में अच्छाई और खराबी दोनों के बारे में वास्तविक समझ प्राप्त करेंगे।

2- प्रभु यीशु में परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध के विषय में वचन की शिक्षा का अध्ययन करें और उस विश्वास करें :-

जब आप अच्छा अनुभव नहीं करते फिर भी आप इस तथ्य को स्वीकार करें । यद्यपि आपको सच नहीं लग रहा है। फिर भी आप वचन की शिक्षा को स्वीकार करें। मनुष्य का अनुभव बदल सकता हैं, परन्तु परमेश्वर का प्रेम नहीं बदल सकता। परमेश्वर का प्रेम और वचन अटल है। विशेष रुप से अध्ययन करें रोमि० 5:1, 8:1, 16-17, 2 कुरि० 5:21 और इन खण्डों पर अपने स्वयं के जीवन के लिए मनन करें।

Creation Autonomous Academy

3- जीवन जीने के एक तरीके का अभ्यास करें : परमेश्वर के साथ कैसे खुले और विश्वासयोग्य हो, अपने साथ और दूसरों के साथ कैसे खुले और विश्वासयोग्य हों :-

परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध से आरम्भ करें। भय, आशा, असफलता और सफलता में अपने व्यक्तिगत संघर्ष को जबाब दें। सफलताओं से अति उत्साहित न हों असफलताओं से निराश न हो जाएं। भूतकाल को जानें और नये अवसर तक पहुँचें। (भजन 32:1-5, फिलि० 3:13-14)

अपने आप को जानें एवं अंगीकार करें, और यीशु मसीह में दया और चंगाई से भरें। परमेश्वर ने आपको उत्साहित करने के लिए स्वीकार किया है। दूसरे के साथ अधिक खुलें और त्यागने के भय से बाहर आएं। स्वयं को अच्छा समझने के द्वारा, आप दूसरे लोगों को अच्छी तरह से समझेंगे।

4- जब आप असफल हो जाते हैं तब भी आप परमेश्वर के लिए मूल्यवान हैं इस तथ्य को स्वीकार करें। :-

सफलता की अपेक्षा उसकी विश्वासयोग्य सेवा अधिक महत्वपूर्ण है। यदि आप अपने द्वारा किए गए कार्य के मूल्य की गिनती द्वारा अपने मूल्य को मापते हैं, उस धन के द्वारा जो आप कलीसिया के लिए एकत्र करते हैं। अथवा अपने कलीसिया के आकार द्वारा अपने मूल्य को मापते हैं। तो आप अपने आप को दूसरों से तुलना करते हुए पाएँगे । आपका अपने आपको मापने का यह तरीका आपके अपने पास्टर मित्रों के साथ अच्छे सम्बन्ध को बिगाड़ सकता है। जब आप कार्य में असफल हो जाते हैं तब भी आप परमेश्वर के लिए मूल्यवान हैं।

5- परमेश्वर के पहले अपनी उपलब्धता और सफलताओं को नम्रता एवं धन्यवाद सहित प्रतिउत्तर दें।

आप ऐसा न समझें कि आपके पास उपलब्धता और वरदान नहीं हैं। यह देखने का प्रयास करें कि परमेश्वर ने आपको यह शक्ति क्यों दी और कैसे आप अपनी इस क्षमता का उपयोग परमेश्वर की सेवा में करते हैं। आपके पास ऐसे शक्ति और स्रोत हैं जिसे आप उपयोग नहीं करते हैं अथवा ऐसी नयी चीजें हैं जो आप परमेश्वर के लिए उपयोग कर सकते हैं। (इफि० 3:20)

6- यदि आप की इच्छा है कि आपकी सेवा अधिक प्रभावशाली हो तो उसके विषय में रचनात्मक रुप से खोजें, पाएँ, सोचें और प्रार्थना करें। :-

जो आप स्वयं के लिए चाहते हैं उसके लिए प्रभु यीशु के उदाहरण एवं उसकी शिक्षाओं के अनुसार अपनी दृष्टि को निश्चित करें। अपनी विशेष कठिनाइयों को सामने लाने का प्रयास करें। उदाहरण के लिए यदि आप लोगों से बातचीत करने में अपने आप को कठोर पाते हैं। तब आप वास्तविक रुप से लोगों के पास जाएं और उनसे बातचीत करें। परमेश्वर की सहायता से अपनी नयी अर्न्तदृष्टि बनाने का प्रयास करें। अपने जीवन में वास्तविकता लाने का प्रयास करें।

प्रभु यीशु मसीह में परमेश्वर के साथ और दूसरे लोगों के साथ एक नये सम्बन्ध द्वारा जीवन जीने के लिए जिनके पास स्पष्ट समझ है। ऐसे अन्य मसीहियों के उदाहरण जो स्मरणीय हैं हमारे लिए सहायक हैं। नयी सम्भावनाएं एवं नये तरीके देखने के लिए समझ के तीन उदाहरण है जो लोगों द्वारा प्राप्त किए गये हैं।

(1) मसीह ने मुझे एक सही पहचान दिया है :-

मैं परमेश्वर का एक पुत्र हूँ। परमेश्वर के एक पुत्र के रुप में मेरे पास सभी अधिकार और प्रबन्ध हैं, जो इस श्रेणी के हैं। मेरे पास एक पहचान है जो परमेश्वर के परिवार के सदस्य बनने से आती है।- टाम स्कीनर (अमेरिकन नीग्रो)

(2) मैं परमेश्वर का हूँ। :-

यीशु मसीह जीवित है और उसका आत्मा मेरे अन्दर रहता है। उत्साह का कदम प्रारम्भ होता है अधिकारपूर्ण साक्षी को प्राप्त करने के लिए सम्भव बनाता है। परमेश्वर की अर्न्तदृष्टि में एक रचना के रुप में पूर्ण करता है। परमेश्वर के लिए मैं एक अत्यन्त मूल्यवान व्यक्ति हूँ। मैं एक अनोखा व्यक्ति हूँ और अनोखे के रुप में, एक अनोखे कारण से परमेश्वर द्वारा रचा गया हूँ।- जेम्स मेलोरी

(3) मेरे पास सोचने का अवसर है। :-

मेरे पास परमेश्वर के विचार पर सोचने का मौका है। (2 कुरि० 3:4) - जान केपलर

Creation Autonomous Academy

अध्याय -4

परामर्शदान का अर्थ रुप एवं लक्षण

1- परामर्शदान (Counselling) का अर्थ :-

‘‘परामर्श देने का समान्य अर्थ सलाह देना या अच्छी बात बताना है।’’ परामर्शदाता या सलाहकार वह व्यक्ति है जो इस बात के विषय सलाह दे कि किसी स्थिति विशेष या मौके पर क्या और किस दिशा में काम करना चाहिए। जब किसी व्यक्ति का अपनी जमीन जायजाद की सीमा के सम्बन्ध में पड़ोसी से झगड़ा होता है तो वह वकील के पास जाता है जो कानूनी मामलों में विशेषज्ञ है। यदि कोई व्यक्ति विदेश जाना चाहता है तो वह यात्रा प्रबन्धक के पास जाता है कि उससे यात्रा के कागजात और खर्च एवं साधनों के सम्बन्ध में सलाह ले क्योंकि यात्रा प्रबन्धक इस मामलों में विशेषज्ञ है। यदि कोई व्यक्ति देखता है कि उसकी घड़ी ठीक समय नहीं दे रही है तो वह घड़ीसाज के पास जाता है, क्योंकि घड़ी साज घड़ी का विशेषज्ञ है उसी प्रकार जब कोई व्यक्ति आत्मिक जीवन सम्बन्धी शंकाओं और कठिनाइयों का अनुभव करता है तो वह पास्टर के पास जाता है, क्योंकि माना जाता है कि पास्टर जीवन के इस क्षेत्र में उसे सलाह दे सकता है। परामर्श देने के कार्य में पास्टर विशेषज्ञ माना जाता है। ऊपर दिये हुए उदाहरणों में हमें यह दिखाई देता है कि विशेषज्ञ उन क्षेत्रों में सलाह देता है जिसमें उसे विशेष योग्यता है और उस व्यक्ति को जिसे जरुरत है, सलाह मिल जाती है।

विशेषज्ञता की दृष्टि से पास्टर का अपना क्षेत्र है। पास्टर को अपने लोगों को मसीही विश्वास और अभ्यास की जानकारी और शिक्षा देनी पड़ती है।

Creation Autonomous Academy

2- परामर्शदान के विभिन्न रुप :-

आज भारत में ऐसी शासकीय संस्थाएं है जिनमें परामर्शदान का प्रशिक्षण दिया जाता है। अस्पताल में मनोचिकित्सक अथवा मनोवैज्ञानिक, कारखाने में समाज कल्याण अधिकारी, विश्वविद्यालयों में व्यवसाय सम्बन्धी परामर्श केन्द्र, नगरों में विवाह सम्बन्धी परामर्शदान केन्द्र और सामाजिक कार्यकर्ता (Social workers)। सभी का अलग-अलग कार्यक्षेत्र और अलग-अलग विधि है।

उपरोक्त परामर्शदान सेवायें हमारे देश में हाल ही में आरम्भ हुई हैं। हमारे देश का साधारण समाज इन सेवाओं के लाभ से अब परिचित हो रहा है। परामर्शदान की माँग बढ़ रही है। इससे और बहुत लोगों को इस काम के प्रशिक्षण देने की आवश्यकता होगी। परामर्शदान की इस विशाल पृष्ठभूमि में हमें पास्तरीय परामर्शदान पर विचार करना चाहिए।

3- पास्तरीय परामर्श दान के विशिष्ट लक्षणः-

पास्तरीय परामर्शदान के अपने विशिष्ट लक्षण हैं जो निम्नलिखित हैं।-

1. पास्तरीय परामर्शदान का कार्य कलीसिया के विश्वास, उसके पवित्र संस्कार, उसकी सहभागिता, उसकी परम्पराएँ एवं उसके सदाचार के संदर्भ में किया जाता है।:-

पास्टर कलीसिया की सहभागिता का प्रतिनिधि होकर परामर्शदान देता है। वह अपनी मण्डली के लोगों में विशेष तथा महत्वपूर्ण अवसरों पर जैसे जन्म, विवाह तथा मृत्यु के समय भेंट करता है। वह उनके आनन्द और दुःख में उनके साथ होता है इसलिए जब एक व्यक्ति अपने पास्टर के पास जाता है तब वह एक अपरचित व्यक्ति के पास नहीं वरन अपने एक मित्र के पास जाता है। यदि पास्टर वास्तविक रुप में अपनी मंडली के लोगों का मित्र है तो लोग अपनी शंकाओं और कठिनाईयों की परिस्थितियों में बड़े निश्चय और आज्ञा के साथ उससे मिल सकेंगे।

2. वह जीवन को व्यापक रुप में देखता है।:-

पास्तरीय परामर्श का एक और लक्षण यह है कि वह जीवन को बहुत दूर तक अर्थात व्यापक रुप में देखता है। वह जीवन के सिद्ध अर्थ और अभिप्राय के प्रति चिंतित रहता है। हमारी कई समस्याएं आर्थिक और समाजिक कारणों से उत्पन्न होती हैं। जैसे भोजन, वस्त्र, नौकरी की समस्याएं मनुष्य की तात्कालिक आवश्यकताएं हैं। इन तत्वों को कभी भी हल्का नहीं समझना चाहिए। परन्तु कई व्यक्तिगत समस्याएं ऐसी हैं जिनकी उत्पत्ति व्यक्ति के विश्वास और अन्धविश्वास से होती है। कई विश्वास लोगों को स्वस्थ मानसिक जीवन व्यतीत करने में सहायता देते हैं और कई विश्वास उनमें मानसिक रोग उत्पन्न करते या मानसिक रोग बढ़ा देते हैं। बहुत से लोग इसलिए दुःख उठाते हैं क्योंकि वे अपने जीवन जीने के अर्थ और अभिप्राय को समझने में असमर्थ रहे हैं। जब लोग पास्टर के पास आते हैं तो वे अपनी धार्मिकता और नैतिक समस्याओं से बातचीत आरम्भ करते हैं। ऐसे समय पर अवश्य है कि पास्टर उनकी बात सुनकर वहीं से आरम्भ कर इस प्रकार विषय को आगे बढ़ाए कि वे स्वयं जीवन के उन समस्त क्षेत्रों को समझने का प्रयास करें जो उनकी समस्याओं से प्रभावित होते हैं।

3. पास्टर एक व्यक्ति के पूर्ण स्वास्थ्य की चिंता करता है।:-

पास्टर एक व्यक्ति के पूर्ण स्वास्थ्य की अर्थात उसके शरीर, मन और आत्मा की चिंता करता है। इस प्रकार उसके सामने जीवन का कोई भी क्षेत्र गुप्त नहीं रहता है, यद्यपि वह अपने सदस्यों को उन क्षेत्रों में किसी दूसरे स्थान से परामर्श लेने को प्रोत्साहित करेगा जिसमें वह स्वयं को असमर्थ समझता है। उदाहरण के लिए, यदि एक सदस्य डर और चिंता सहित पास्टर के पास आता है तो सम्भव है कि पास्टर को उसे इस बात के लिए प्रोत्साहित करना पड़े कि वह अपनी डॉक्टरी जाँच कराए। बहुत सम्भव है कि उसका डर और उसकी चिंता उसके दुर्बल स्वास्थ्य के कारण हो।

Creation Autonomous Academy

4. पास्तरीय परामर्शदाता परमेश्वर की सामर्थ में विश्वास करता है।:-

वह मानता है कि जो लोग परमेश्वर पर भरोसा रखते है, उनको परमेश्वर सहायता देता और उनको चंगा करता है। परामर्शदान के जो संबंध पास्टर और सदस्य में बन जाते है उन संबंधों की प्रक्रिया से ऐसी स्वास्थ्यप्रद शक्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिनको पास्टर और परामर्श लेने वाला सदस्य दोनों भली-भाँति समझ सकते हैं। शरीर और मन और आत्मा के महान वैद्य प्रभु यीशु मसीह की उपस्थिति के कारण ये शक्तियाँ प्रवाहित होती हैं।

5. परामर्शदान संबंध स्थापित करना :-

पास्तरीय परामर्शदान में एक संबंध बनाना निहित है। अतः इसके लिए कोई अचूक और सुस्पष्ट पद्धति नहीं निकाली जा सकती। परामर्शदान की प्रभाविकता तथा सफलता इस बात पर निर्भर है कि पास्टर और परामर्श लेने वाले के बीच किस कोटी का संबंध स्थापित होता है। फिर भी कुछ तत्व उन पास्तरों के मार्ग-निर्देशन के लिए बताये जा सकते हैं जो परामर्शदान द्वारा अपने सदस्यों की सहायता करना चाहते हैं।

(1) लोगों को यह स्पष्ट ज्ञात हो कि पास्टर लोगों को मिल सकता है।

(2) जब लोग आते हैं तो बड़े स्नेह एवं शिष्टता के साथ उनसे भेंट की जाए।

(3) इस बात का ध्यान रखा जाए कि परामर्शदाता कैसे सुनता है और परामर्श पाने वाला किस प्रकार बात को प्रगट करता है।

(4) परस्पर वार्तालाप और भावनाओं को सहारा।

(5) परामर्श पाने वाले का पुनः शिक्षण।

यदि सही रुप में पास्तरीय परामर्शदान को समझा जाए और उसका उचित उपयोग किया जाए तो भावात्मक आकुलता एवं तनाव से पीड़ित व्यक्ति को पीड़ा से छुटकारा प्राप्त हो सकता है। सही पास्तरी परामर्शदान से व्यक्तियों के पारस्परिक तथा परमेश्वर के साथ संबंधों को बनाने के द्वारा उन व्यक्तियों के जीवन का निर्माण होता है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय -5

परामर्शदान की आवश्यकता

कलीसिया को परामर्शदान की सेवा के लिए जागृत होना है। वर्तमान युग में अच्छी सलाहों तथा सलाहकारों की आवश्यकता है, जिनके द्वारा हम अपनी जिन्दगी में एक ताजापन ला सकते हैं।

वर्तमान समय में कलीसिया में परामर्श कार्य की आवश्यकता है, और इसका विशिष्ट क्षेत्र भी है। पास्टर अपने सेवा काल में विभिन्न प्रकार के विक्षुब्ध, विकृत, रोगी-दुःखी, अपराधी, धर्मभ्रष्ट इत्यादि व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है। अतः यह आवश्यक है कि वह न केवल अपने प्रिय लोगों के साथ किन्तु अन्य जनों के साथ भी परामर्श देने-लेने का आदान-प्रदान करे।

आधुनिक युग की मसीही कलीसिया तथा मसीहियों के सम्मुख अनेक समस्याएं हैं जिनका समाधान करना जरुरी है। इस बड़े काम को करने के लिए कलीसिया, पुरोहित एवं शिक्षकों को तैयार रहना है। समस्याओं का प्रभावपूर्ण हल 'परामर्शदान' के द्वारा सम्भव है।

1- परामर्शदान और मसीही कलीसिया :-

एक प्रश्न पूछा जाता है कि कलीसियाओं में कौन परामर्शदाता बन सकता है? यह भी सच है कि कलीसिया में प्रत्येक व्यक्ति सलाह देने के योग्य भी नहीं है।

परामर्शदान का सेवा-कार्य उन पास्तरों के कंधों पर है, जो कलीसिया में बुलाए गए एवं ठहराए गए हैं। इसका कारण यही है कि स्वयं को परमेश्वर की प्रेरणा से उत्प्रेरित समझते हैं। वे परमेश्वर और उसकी कलीसिया का सेवाकार्य, वचन एवं संस्कारों के द्वारा विश्वासयोग्य तथा आज्ञाकरी पात्र होने के लिए बुलाए गए, चुने हुए तथा भेजे गये समझते हैं। वे स्वयं को परमेश्वर के वचन के अधीन करते हैं, परमेश्वर के वचन का अध्ययन एवं मनन करते हैं और उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए अपने आप को समर्पित करते हैं। इस तरह प्रेम और शांति से मसीह की देह में रहकर मसीही सहभागिता को कार्यरुप में परिणित करते हैं। शिक्षक और अगुवे भी परामर्शदाता बन सकते हैं। बशर्ते उन्हें परामर्शदान का प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा। परामर्शदान की पद्धतियों की जानकारी प्राप्त करना होगा।

2- परामर्शदान कलीसिया के सेवा-कार्य से सम्बन्धित है।:-

परामर्शदान और मनोवैज्ञानिक रोग निर्णय कलीसिया की सेवा से सम्बन्धित हैं। आरंभिक कलीसिया के समय में लोग अपने बिगड़े हुए व्यवहारों, बुरी चाल-चलन से स्वस्थ होने के लिए पुरोहित के पास आया करते थे।

3- मसीही परामर्शदान एक अलग प्रकार का परामर्शदान है।:-

यह चिकित्सा विज्ञान से बिल्कुल भिन्न है। यह विभिन्न मूल्यों का प्रशिक्षण देता है। मसीही परामर्शदान की प्रमुख बात यह है कि सच्चाई लोगों को मुक्त करती है जब वे इस पर विश्वास करते और इसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। (यूहन्ना 8:31-32)

4- कलीसिया में परामर्शदान की आवश्यकता :-

कलीसिया की वर्तमान स्थिति के अनुसार उसके लिए एक उच्च दर्जे के परामर्शदान की आवश्यकता है। परामर्शदान मित्रता का एक विशिष्ट और ध्यानपूर्वक निर्मित या संरचित रुप है जिसमें स्वीकृत जीवन की समस्या पर दोनों अर्थात परामर्शदाता और परामर्श लेने वाले का सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित होता है।

लोग विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त हैं वे उनसे छुटकारा पाना चाहते हैं। उन विभिन्न समस्याओं के निदान के लिए उन्हें परामर्शदान की जरुरत होती है। इसलिए परामर्शदान की सेवा अत्यन्त आवश्यक है जिससे लोगों का परमेश्वर के साथ और सभी मनुष्यों के साथ सम्बन्ध सही हो सके।

Creation Autonomous Academy

अध्याय -6

पास्तर के कार्य में परामर्शदान का स्थान

पास्तर के सेवा कार्य के विभिन्न पक्ष :-

भारत की कलीसिया और उस कलीसिया में काम करने के लिए बुलाए गए पास्तर उसी समय पास्तरीय परामर्शदान को अपने समग्र कार्य का एक आवश्यक अंग स्वीकार करेंगे जब वे पास्तरीय कार्य के माने हुए परंपरागत पक्षों के साथ परामर्शदान के कार्य का स्पष्ट संबंध देखें और समझें। पास्तर के कार्य के अनेक पक्ष हैं। पास्तर पास्तरी कमेटी का अध्यक्ष होता है। वह किसी स्कूल का मैनेजर भी बनता है। वह आराधना का संचालन कर्ता है। वह उपदेशक है। वह प्रचारक भी है। उनके अनेक कार्य हैं। पास्तर का अपने कार्य के विषय में, अपने कार्य के प्रत्येक अंग के विषय में और उन अंगों में पारस्परिक संबंधों के विषय में एक विशालदर्शी दृष्टिकोण होना चाहिए। मण्डली में पास्तर को उन संगठनों और संस्थाओं को भी चलाने में सहयोग देना पड़ता है। जो मण्डली के सदस्यों की उन्नति के लिए हैं। उदाहरणार्थ मण्डली में संडे स्कूल है, युवक संघ है, पुरुषों की गायन-सभा है, महिला मण्ड़ल है, इत्यादि। इन सब संगठनों की कमेटियाँ हैं। योजनाएं हैं, कार्यक्रम हैं, आय-व्यय पत्रक हैं। पास्तर को इनमें से पत्येक संगठन या समूँह के साथ काम करना पड़ता है। उसे पत्येक समूह को समझाना भी पड़ता है कि उस समूह का मण्डली और विशाल कलीसिया के सम्पूर्ण कार्य में क्या योग्यदान और स्थान है। उसे सब संगठनों को प्रेरणा देना पड़ता है जिससे कि वे सब जोश और लगन के साथ अपने कार्य-क्रमों को चला सकें। उसे इन सब संगठनों के कार्य को स्थानीय मंण्डली के जीवन एवं कार्य के साथ सुगठित करना पड़ता है। संगठनों या कमेटियों तथा पास्तर के बीच यदि सुन्दर एवं स्वस्थ अर्न्तव्यक्तिगत संबंध बन जाते हैं तो यह संबंध उन संगठनों या कमेटियों में काम करने वालों के तथा सारी मण्डली के आध्यात्मिक जीवन की उन्नति का एक बहुत बड़ा साधन बन जाता है। यदि पास्तर अपनी मण्डली के सदस्यों में मसीही सहभागिता को सुगठित करने में सफल होता है, यदि वह इस सहभागिता को, जिसमें सद्भावना और निष्ठा व भरोसे की भवनाएं उत्पन्न होती और बढ़ती हैं सुगठित करने में सफल होता है, तो लोग उसे अपना मित्र, पथप्रदर्शक और परामर्शदाता के रुप में स्वीकार करेंगे।

वह पास्तर, जिसमें अपने लोगों के साथ परामर्शदान संबंध स्थापित करने की रुचि, योग्यता और प्रशिक्षण है, यह अनुभव करेगा कि अपने मान्य परंपरागत कार्यों के प्रवाह में उसे वास्तविक परामर्शदान का कोई अवसर नहीं मिलता। इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि इन परंपरागत कार्यों का परामर्शदान से कोई संबंध नहीं है। इन परंपरागत

कार्यों से अनेक प्रकार से पास्तर को और उसके लोगों को बड़ी सहायता प्राप्त होती है। जब पास्तर इन कार्यों को करता है तो उसे अपनी मण्डली के ऐसे लोगों का पता लगता है जिनको किसी न किसी प्रकार के परामर्शदान की आवश्यकता है। पास्तर ऐसे लोगों को प्रोत्साहन दे सकता है कि वे मण्डली में अथवा अन्यत्र उपलब्ध परामर्शदान सेवा से लाभ उठाएं। दूसरी ओर सदस्यों में भी यह योग्यता पैदा हो जाती है कि वे अपने पास्तर के साथ एक विश्वासपूर्ण संबंध स्थापित कर सकें। फलस्वरुप जब उनको किसी प्रकार के व्यक्तिगत परामर्श लेने की आवश्यकता पड़ती है तो वे सहायता के लिए पास्तर के पास जा सकते हैं।

1- कमेटी की बैठकें :-

पास्तर बहुधा मण्डली की और पास्तरीय कमेटी के बैठकों का अध्यक्ष होता है। कमेटियों की इन बैठकों में मंडली के निर्धारित कार्य को उसके सदस्यों द्वारा संपन्न करने के लिए योजनाएं और कार्य क्रम बनाए जाते हैं। बहुधा ऐसी बैठकों में अनावश्यक रुप से बहुत समय लग जाता है। कारण यह होता है कि छोटी-छोटी बातों पर लम्बा-लम्बा वादविवाद होता है और बात का बतंगड़ बनाया जाता है। उदाहरण के लिए कोई सदस्य यह सोचता है कि कार्यविवरण में कोई शब्द ठीक नहीं है, अथवा कार्य सूची पर किसी विषय को उचित स्थान नहीं दिया गया है। बस, वह सदस्य तर्क-वितर्क करने लगता है, सौ बार अपनी बात को घिसता जाता है। दूसरे सदस्य उसके अड़ियलपन से चिढ़ जाते हैं। संभव है कि वह सदस्य मन में कमेटी के सेक्रेटरी या पास्तर से चिढ़ा हुआ है और बैठक में बकवास के द्वारा अपनी चिढ़ को व्यक्त कर रहा है। एक सहृदय और समझदार पास्टर समझ सकता है कि ऐसे व्यक्ति को परामर्शदान की आवश्यकता है। मीटिंग में तो उसे परामर्शदान बुद्धिमत्ता नहीं होगी। वह सदस्य को यह सुझाव दे सकता है कि जब उस सदस्य को सुविधा हो तब पास्तर उससे व्यक्तिगत बातचीत करना चाहता है। बैठक के दौरान में जिस कोटी का संबंध बन जाएगा उस पर यह निर्भर होगा कि वह सदस्य पास्तर से व्यक्तिगत परामर्शदान के लिए मिलेगा अथवा नहीं। यदि पास्तर ऐसे हठी और चिड़चिड़े व्यक्तियों के प्रति अधिकार जतानेवाला है, धौंस जमाने वाला है और सहानभूतिविहीन है, तब तो मंडली के सदस्य उसे अपना परामर्शदाता स्वीकार नहीं करेंगे। इसके विपरीत पास्तर ऐसा हो जो ऐसे व्यक्तियों का भी सम्मान करता है जो उससे असहमत हों, तो वे व्यक्ति भावनात्मक उलझनों में पास्तर के पास अवश्य आएंगे।

2- आराधना का संचालन :-

पास्तर मंण्डली की आराधना में अगुवा होता है। समस्त कलीसियाओं की परंपराओं में पास्तर ही आराधना में अगुवा होता है। पास्तर को आराधना की तैयारी और संचालन के लिए काफी समय देना पड़ता है। परमेश्वर के लोग परमेश्वर के उन सामर्थी कार्यों के लिए जो उसने इतिहास में और जीवन में किये हैं, विशेष कर प्रभु यीशु के जीवन, मृत्यु एवं पुनरुत्थान के लिए धन्यवाद देने को एकत्रित होते हैं। आराधना में वे अपने पापों का अंगीकार करते, परमेश्वर का वचन सुनते तथा स्वयं एवं दूसरों के लिए प्रार्थना करते हैं। पास्तर भी उनके साथ मिलकर प्रार्थना करता है। वह उपदेश भी देता है। उस समय पर न तो पास्तर और न सदस्य ही आराधनालय में व्यक्तिगत परामर्शदान के लिए आते हैं। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मण्डली की आराधना सभाओं का संबंध पास्तरी परामर्शदान से नहीं है। पास्तर का आराधना संचालन एवं उपदेश इस बात का निर्णय करते हैं कि सदस्यगण अपनी उन व्यक्तिगत समस्याओं को, जिन्हें वे स्वयं नहीं हल कर सकते, पास्तर के पास लाएंगे अथवा नहीं। प्रभु की मेज के पास आदर, और नम्रता से पास्तर का आना मंडली के साथ स्तुति एवं प्रार्थना में इन्हीं भावनाओं के साथ अगुवाई करना सदस्यों को इस बात को स्पष्ट समझने में सहायता प्रदान करता है, कि उनका पास्तर शांति एवं निश्चय के स्रोत से परिचित है, तथा वह उनकी कठिनाई के समय उनकी सहायता करने के योग्य है। यदि पास्तर अपने उपदेश में मानव की सही आंतरिक स्थिति का विश्लेषण करता है, यदि वह मानव की महान संभावनाओं एवं विफलताओं का विश्लेषण करता है, तो पास्तर द्वारा प्रस्तुत मानव चरित्र के विश्लेषण पर सदस्यों को भरोसा हो सकेगा। परन्तु इसके विपरीत यदि पास्तर आराधनाओं के

Creation Autonomous Academy

संचालन में अव्यवस्था, तथा उपदेश में निशक्तता प्रकट करता है तो यह नितांत स्वाभाविक है कि सदस्य अपनी उलझनों एवं विफलताओं के समय उसके पास आने का साहस न करेंगे। यद्यपि मंडली की आराधना से प्रत्यक्ष रुप से पास्तरी परामर्शदान का अवसर उपलब्ध नहीं होता तथापि अप्रत्यक्ष रुप से लोग इस बात के लिए तैयार अवश्य हो जाते हैं कि आवश्यकता पड़ने पर वे सहायता हेतु पास्तर के पास जाएं। यह स्वाभाविक है कि जब मंडली के सदस्य शंकाओं और चिंताओं से ग्रसित होते हैं तो उनके विचार पास्तर की ओर ही दौड़ेंगे, क्योंकि वही उनके लिए सहारा एवं बल का स्रोत होगा।

3- सामाजिक अवसर :-

पास्तर के सेवा कार्य में बपतिस्मा एवं विवाह के संस्कारों को सम्पन्न करना भी सम्मिलित है। इन आराधनाओं के बाद समारोह भी हुआ करते हैं। मंडली के सदस्य पास्तर को मंगनी और विवाह के भोज में साधारणतया आमंत्रित करते हैं। पास्तर ऐसे महत्वपूर्ण अवसरों पर लोगों की वास्तविक समाजिक परिस्थितियों से परिचय प्राप्त करता है। लोगों को भी अपने पास्तर के साथ स्वतंत्रतापूर्वक मिलने का अवसर मिलता है। आराधना में पास्तर अपने परिधान में रहता और सब लोग रविवार के अच्छे वस्त्रों और भक्तिभाव में होते हैं। गिरजे में बहुधा लोग इतने अच्छे दिखाई देते हैं जितने शायद वे नहीं हैं। सामाजिक संबंधों में लोग बहुधा अपने वास्तविक रुप में दिखायी देते हैं। कई लोग ऐसे हैं जो इन सामाजिक उत्सवों पर पास्तर से मिलते और अपनी व्यक्तिगत एवं पारिवारिक समस्याओं का वर्णन करते हैं। वे ऐसे अवसरों का लाभ इसलिए उठाते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि पास्तर शांत रहता है, हड़बड़ी में नहीं रहता और किन्हीं अन्य कामों में उलझा हुआ नहीं है। परन्तु इन अवसरों पर भी जब सदस्य उससे समस्याओं का वर्णन करते हैं तो केवल समस्याओं कि भूमिका मात्र ही कह सकते हैं। यदि पास्तर सहृदय और संवेदनशील है, तो वह उसी समय उनसे कोई सुविधाजनक समय ठहरा लेगा जब वह परामर्शदान देने के लिए उनसे भेंट कर सकता है।

4- नेतृत्व प्रशिक्षण :-

लेमनों को नेतृत्व प्रशिक्षण देना पास्तर के सेवाकार्य का प्रमुख अंग है। भारत में कई पास्तर ऐसे हैं जिनको दस से अधिक मंडलियों की देखभाल करनी पड़ती है। इसलिए मंडली की आराधना, संडे स्कूल शिक्षण और तरुण सभाओं के संचालन भार लेमनों के कंधों पर आ पड़ता है जिनको पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं है। इन लेमनों में से अधिकांश लेमनों को यह जानकारी नहीं है कि मानवीय संबंधों की समस्याओं को किस प्रकार हल किया जाए। ऐसी परिस्थितियों में यदि कलीसिया को निर्दिष्ट कार्य को पूरा करना है, तो प्रत्येक पास्तर के लिए यह अनिवार्य हो जाता है कि वह मंडली के स्त्री-पुरुषों को चुने, उनको शिक्षा दे और उनको प्रशिक्षित करे कि वे संडे स्कूल शिक्षक, तरुण सभाओं के अगुवे, सामाजिक कार्यकर्ता और महिला कार्यकर्ता बन सकें। जब पास्तर प्रशिक्षण का काम शुरु करता है तो उसे इस बात का पता चलेगा कि प्रशिक्षण लेने वालों में कई प्रकार की कमियां हैं। उसे पता चलेगा कि उन लोगों में अभिवृत्ति, व्यवहार और चरित्र की समस्याएं हैं जो संबंधित व्यक्तियों के सहयोग से ही दूर की जा सकती हैं। जब तक वे लोग स्पष्ट रुप से इन समस्याओं का विश्लेषण और सामना न करें, तब तक वे उन समस्याओं को हल नहीं कर पाएंगे। यह केवल व्यक्तिगत परामर्शदान स्थिति के माध्यम से ही किया जा सकता है। कभी-कभी सामूहिक परामर्शदान भी उपयोगी सिद्ध हो सकता है। संभव है कि लेमेन, जो अगुवे का प्रशिक्षण लेते हैं, स्वयं ही अपनी व्यक्तिगत समस्याओं अथवा कार्य संबंधी समस्याओं पर विचार विनिमय करने के लिए पास्तर से व्यक्तिगत भेंट की इच्छा व्यक्त करें। बहुधा इन दोनों प्रकार की समस्याओं में घनिष्ठ संबंध होता है। इसलिए नेतृत्व प्रशिक्षण के अध्ययन क्रम में व्यक्तिगत परामर्शदान को भी कुछ स्थान दिया जाना चाहिए। कुछ स्वेच्छिक लेमेन अगुवे इस व्यक्तिगत परामर्शदान में बड़ा उत्साह दिखाएंगे और यह दिखाई देगा कि इस विषय में उनसे बहुत आशा की जा सकती है । परन्तु उनमें से कुछ लेमेन अगुवे केवल कलीसिया की नीति एवं कार्यक्रमों की हानिकारक आलोचना ही करेंगे। बहुधा वे यह प्रदर्शन करते हैं कि वे न्याय और निष्पक्षता के समर्थक हैं। परन्तु वास्तव में यह उनके मन में छिपी हुई व्यक्तिगत कटुता और क्रोध का आवरण मात्र है।

Creation Autonomous Academy

उनको मंडली में सम्मान नहीं दिया जाता, कोई मान्यता नहीं देता, उनसे कोई सलाह नहीं लेता, उनकी उपेक्षा की जाती है और वे उत्साह दिखाकर या आलोचना करके अपनी इन भावनाओं को व्यक्त करते हैं। उनको परामर्शदान की आवश्यकता है जिससे वे अपने आप को पहिचान सकें और अपनी अभिवृत्तियों को सुधार सकें।

5- पास्तरीय भेंट :-

प्रत्येक पास्तर कुछ ऐसे व्यक्तियों को जानता है, जो उसके पास अपनी कठिनाइयों और समस्याओं को लेकर आते हैं। इन व्यक्तिगत संपर्कों द्वारा ही पास्तर परामर्शदान आरंभ कर सकता है। मंडली के सदस्यों से पास्तर की व्यक्तिगत भेंट या तो उस समय होती है जब पास्तर उन सदस्यों के घर जाता है अथवा जब वे पास्तर के पास आते हैं।

अनेक अवसरों पर पास्तर को अपने कमेटी के सदस्यों से या संपत्ति रक्षक से या सचिव से या कोषाध्यक्ष से मंडली के कार्य के संबंध में या कार्य को चलाने के लिए धनराशि जमा करने या कार्यकर्ता खोजने के संबंध में चर्चा करना पड़ता है। चर्चा के दौरान में सदस्यों की ओर से विरोध या उदासीनता, स्वीकृति या अस्वीकृति पास्तर के समक्ष उपस्थित होती है। कभी-कभी उसे ऐसा भान होता है कि कुछ सदस्यों के मन में प्रस्तावों के प्रति अथवा कमेटी के किसी सदस्य के प्रति अथवा स्वयं पास्तर के प्रति असंतोष या कटुता है।

यदि कमेटी का कोई सदस्य उदासीन या असंतुष्ट हो तो मंडली के कार्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे उस सदस्य की आत्मिक और भावात्मक अस्वस्थता का भी बोध होता है पास्तर को चाहिए कि वह यह समझे कि ऐसे व्यक्ति को परामर्श की आवश्यकता है और उसे परामर्श देने की योग्यता पास्तर में होना चाहिए।

पास्तर को चाहिए कि वह मंडली के प्रशासन संबंधी विषयों पर चर्चा हेतु केवल मंडली के पदाधिकारियों से ही भेंट न करे। उसे चाहिए कि वह सब सदस्यों से नियमित योजना के अनुसार भेंट करे। कई मंडलियों में मंडली के सदस्य यह अवश्य अपेक्षा करते हैं कि पास्तर उनसे घर पर भेंट करे, परन्तु वे स्वयं पास्तर के पास नहीं जाते । पास्तर यदि नियमित रुप से सदस्यों से भेंट करता है तो पास्तर को यह मौका मिलता है कि वह अपने सदस्यों को व्यक्तिगत रुप से और निकट से जाने। इस प्रकार भेंट करने से सदस्यों को भी मौका मिलता है कि वे पास्तर से अपनी समस्याओं पर वार्तालाप कर सकें। इस भेंट- मुलाकात में पास्तर को लोगों की समस्याओं का पता चलता है जिसमें उनको परामर्शदान की आवश्यकता है। पास्तर परामर्शदान की सेवा दे सकता है।

रोगियों से भेंट करना भी पास्तर की एक सेवा है। यदि पास्तर इस कार्य में निश्चिन्तता प्रगट करे, तो अवश्य ही उसके सदस्य उससे अप्रसन्न होंगे। यद्यपि सदस्य अस्वस्थ व्यक्तियों के विषय पास्तर को सूचित न करे, तौभी उसे उनके विषय जानकारी प्राप्त करके, उनके घरों या चिकित्सालयों में उनसे भेंट करना चाहिए। पास्तर अपनी भेंट के समय, रोगी तथा परिवार के सदस्यों को परामर्श देने का अवसर प्राप्त कर सकता है।

पास्तर के लिए भेंट का अवसर परिवार में मौत का समय भी होता है। जिस समय किसी मंडली के सदस्य की मृत्यु का समाचार पास्तर को दिया जाता है तो वह तुरन्त उस परिवार में जाता है। परिवार की इस बड़ी हानि को सदस्य किस प्रकार सहन करेंगे, यह जानना बहुत कठिन है। ऐसे अवसर पर मण्डली के सब सदस्यों को चाहिए कि दुःखी परिवार के सदस्यों को भावनात्मक सहारा एवं सहायता दें। सहभागिता का प्रतिनिधि होने के नाते पास्तर को ऐसे अवसर पर उस परिवार में अधिक समय तक रहना अच्छा है। परिवार के सदस्य ऐसे समय पर उन लोगों की उपस्थिति पसंद करते हैं जिनसे वे प्रेम करते और जिनको वे सम्मान देते हैं। ऐसे लोगों की उन्हें आवश्यकता है, जिनसे वे अपनी इस हानि का वर्णन खुलकर कर सकें। ऐसे अवसर पर सब कुछ धीरज से सुनना ही परामर्शदान है। अन्य अवसरों पर भी पास्तर अपने सदस्यों से भेंट करता है। ऐसे सभी अवसरों को वह परामर्श के अवसरों में परिवर्तित कर सकता है। ऐसे अनेक अवसरों की कमी नहीं है।

Creation Autonomous Academy

6- सदस्यों की पास्तर से भेंट :-

मंडली के सदस्य कई अभिप्रायों से पास्तर से मिलने आते हैं। कुछ सदस्य पास्तर से कुछ विशेष जानकारी पाने आते है। जो केवल पास्तर ही दे सकता है। गाँवो में पास्तर ही एक ऐसा व्यक्ति होता है जिसे अन्य लोगों से अधिक जानकारी होती है। इसलिए लोग उससे कुछ बातें पूछने आते हैं। स्कूलों और कालेजों में प्रवेश पाने वाले या नौकरी ढूँढने वाले पास्तर के पास परिचयपत्र और अनुशंसा प्राप्त करने आते हैं। मंडली के सदस्य बपतिस्मा और विवाह के प्रबंध के लिए पास्तर के पास आते हैं। इन सब अवसरों पर वार्तालाप के दौरान में लोग अपनी समस्याएं एवं अन्तर्द्वन्द्वों को व्यक्त करते हैं जिनको सुलझाना आवश्यक होता है। पास्तर को परामर्शदान के योग्य और तत्पर होने की आवश्यता है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय -7

परामर्शदान हेतु लोगों की आवश्यकता का ज्ञान

प्रभावशाली परामर्शदान विधियों को पूर्ण करने के लिए विश्व के विभिन्न भागों में बहुत से अविष्कार हुए हैं। परामर्शदान की बहुत सी विभिन्नताएं विशेषज्ञों द्वारा लायी गयी हैं। वर्तमान विषयों को समझने में आधारभूत तथ्यों की भूमिका कैसे सहायता कर सकती है। यह निम्नलिखित है।-

1-परामर्शदान दो अथवा अधिक लोगों के बीच एक संबंध है।:-

परामर्शदान एक सम्बंध है कि कैसे एक परामर्शदाता सलाह, उत्साह, सहायता और समर्थन दूसरे व्यक्ति अथवा व्यक्तियों जो परामर्श लेने वाले हैं को उनके जीवन की समस्याओं में अधिक प्रभावशाली ढंग से दे सकता है व उनकी समस्याओं का समाधान कर सकता है।

2- परामर्शदान एक व्यक्ति के साथ सीधे सम्बन्ध की गम्भीरता है।

यह उद्देश्य के साथ बदलते व्यवहार और आदतों में सहायता है।

3- परामर्शदान दो लोगों के बीच में एक परिवर्तन और उद्देश्यपूर्ण सम्बन्ध है जिस विधि से परामर्श लेने वाले की आवश्यकता है।:-

Creation Autonomous Academy

इस संबंध में दोनों परामर्शदाता और परामर्श लेने वाला आपस में बातचीत करते हैं, स्थिति को समझने, निर्णय लेने हेतु कि परामर्श लेने वाला क्या करे। कैसे लक्ष्य परामर्श लेने वाले की सहायता कर सकता है।

4- परामर्शदान सक्रिय प्रक्रिया है।:-

कैसे परामर्श लेने वाला और परामर्शदाता मिलते हैं, जब परामर्श लेने वाला सहायता चाहता है और परामर्शदाता इसे देने के लिए उपलब्ध होता है। लक्ष्य आवश्यकता की वास्तविकता के साथ अधिक प्रभावशाली तरीके से सीखने में परामर्श लेने वाले की सहायता करता है।

इस आधार पर हम देख सकते हैं कि परामर्शदान दो अथवा दो से अधिक लोगों के बीच एक सम्बन्ध है। यह कानूनी अथवा वाणिज्यिक सम्बन्ध नहीं, बल्कि एक व्यक्तिगत सम्बन्ध है। यह एक सम्बन्ध है कि कैसे जीवन्त व सक्रिय हों। इसमें परामर्श लेने वाला और परामर्शदाता आपस में बातचीत करते है। परामर्शदान में लक्ष्य अथवा उद्देश्य स्थिति

के अनुसार देखते हैं। यह सहायता करता है लोगों की कठिनाइयों को अच्छी तरह समझने में और प्रभावशाली तरीके से उनका समाधान करने में। यह अन्तिम रुप से व्यवहार एवं आदतों को ढालने में उनकी सहायता करता है। उपयोग की जाने वाली परामर्शदान की विधियाँ परामर्श लेने वाले की आवश्यकता पर निर्भर करेंगी कि कौन सी विधि अपनायी जाए।

विभिन्न स्थितियों में परामर्शदान की विभिन्न विधियाँ आवश्यक होंगी। कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं।-

(क) स्पष्टीकरण परामर्शदान
(ख) शैक्षिक परामर्शदान
(ग) सहायक परामर्शदान
(घ) दुःख-संकट में परामर्शदान
(च) आमने सामने परामर्शदान
(छ) बचाव परामर्शदान
(ज) आत्मिक परामर्शदान

Creation Autonomous Academy

अध्याय -8

परामर्शदान के लिए पास्टर की भूमिका

लोगों की सही समझ और उनकी परिस्थितियों में शामिल समस्याओं को समझे बिना परामर्शदान असम्भव है। इसका अर्थ है दो चीजों के बारे में स्पष्ट समझ प्राप्त करना ! (1) समस्या के तथ्य क्या हैं? क्या हुआ अथवा क्या हो रहा है? (2) क्या करने के लिए व्यक्ति मौजूदा स्थिति में भाग ले रहा है? इस विषय में विचार करें व अनुभव प्राप्त करें। इसका अर्थ है कि जिस परिस्थिति में परामर्श लेने वाला जीवन जी रहा है उसे उसी प्रकार से समझने का प्रयास करें।

कभी-कभी एक पास्तर परिस्थिति को शीघ्र समझ सकता है। वह देख सकता है कि परामर्श लेने वाले का कष्ट क्या है। लेकिन वह समर्थन कर सकता है, बातचीत कर सकता है लोगों के भावनाओं के विषय में परन्तु सहायता करने की बात कठिन है।

1- बोलना और सुनना :-

आवश्यक है कि परामर्श लेने वाला बोले, अपने बारे में बताए और परामर्शदाता उसकी बातों को सुने। प्रभावशाली परामर्शदान दोतरफा संचार बने इस बात का प्रयास करना चाहिए। परामर्शदान और प्रचार के बीच कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएं हैं। प्रचार में एक व्यक्ति प्रचार करता है और दूसरे सुनते हैं। प्रचारक संदेश देने के लिए तैयार होकर आता है कि क्या प्रचार करना है। इसमें श्रोताओं के लिए बहस, समझौता, सहमति अथवा असहमति के लिए कोई मौका नहीं है। अतः प्रचार एक तरफा संचार है।

Creation Autonomous Academy

कुछ सेवक सोचते हैं प्रचार और परामर्शदान के बीच मात्र यह अन्तर है कि प्रचार चर्च के अन्दर किया जाता है और परामर्शदान परामर्श लेने वालों के घर में किया जाता है । वे सोचते हैं कि परामर्शदान प्रचार का दूसरा रुप है। सेवक का बात चीत करना, व्यक्ति कि आवश्यकता को सुनना, जाँचना, सलाह देना और तब यह बताना कि परामर्श लेने वालों को क्या करना है। परन्तु यह सही नहीं है, परामर्शदान में दो तरफा संचार होता है। परामर्शदान लेने वाला बोलता है परामर्शदाता सुनता है। परामर्शदाता बोलता है परामर्श लेने वाला सुनता है। दोनों बोलते हैं और दोनों सुनते हैं बातचीत की यह प्रक्रिया है कि परामर्श लेने वाला उत्साह पूर्वक बोलता है और परामर्शदाता सुनता है यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है आरम्भिक स्थिति में परामर्शदान के लिए।

2- परामर्शदान के लिए बातचीत महत्वपूर्ण है।:-

प्रथम यह कि बातचीत सीधे सोच-विचार के लिए व्यक्ति की सहायता करती है। अच्छे तरीकों को चुनने में व निर्णय लेने में बातचीत सहायता करती है।

द्वितीय जब व्यक्ति बुरी भावनाओं एवं बुरे अनुभवों में फँसा हुआ है तो बातचीत उसे बुरे भावनाओं एवं बुरे अनुभवों को छोड़ने में सहायता करती है। बातचीत एक पम्प अथवा मशीन के सेप्टी वाल्व की तरह है जो लोगों के जीवन में दबाव बनाती है। बातचीत विश्वास एवं बुद्धि प्राप्त करने में व्यक्ति की सहायता करती है।

क्यों कुछ लोग परामर्शदाता से अपनी समस्याओं के विषय में बातचीत करने की आवश्यकता महसूस करते हैं? वे अपने परिवार अथवा अपने मित्रों के पास क्यों नहीं जाते ? क्योंकि उनके पास कोई निकट सम्बन्धी अथवा मित्र नहीं है जिससे वे अपनी बात कह सकें अथवा अपनी भावनाओं को उससे व्यक्त कर सकें। अथवा वे अपने निकट सम्बन्धियों से डरते हैं कि कहीं वे क्रोधित न हो जाएँ। कुछ लोग अपने चारों ओर के लोगों से जो गहराई से उनकी समस्याओं में भाग लेते हैं स्वतंत्रतापूर्वक बातचीत करने में कठिनाई महसूस करते हैं। अथवा वे जानते हैं कि लोग बिना वास्तविकता को जाने सलाह देना चाहते हैं।

3- परामर्श देने से पहले सही तरीके से सुनना और समझना बहुत ही आवश्यक है।:-

परामर्श देने से पहले परामर्श लेने वाले की बातों को सुनना अति आवश्यक है। समस्या पर परामर्श देने से पहले सही तरीके से सुनना और समझना परामर्शदाताओं के लिए आवश्यक है।

परामर्शदान लेने वाले की बात को किसी भी प्रकार से सुनने की अपेक्षा सही प्रकार से सुनना आवश्यक है । इसका अर्थ है परामर्श लेने वाले की भावनाओं और क्रियाओं को समझना।

परामर्शदान लेने वाला अपनी बात को जैसे बताता है उसके शब्द परिस्थिति के तथ्य को समझने में परामर्शदाता की सहायता करेंगे। कभी-कभी परामर्श लेने वाले की क्रियाएं सत्य तथ्य का सही एवं स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करती हैं। यदि एक व्यक्ति निरन्तर सिगरेट पीता है तो यह क्रिया दिखाती है कि वह व्यक्ति द:ुखी चिन्तित है, स्वयं को असुरक्षित महसूस करता है अथवा अपने अतीत में जकड़ा हुआ है। उसका भाव घृणा क्रोध, भय, ईर्ष्या, बोलने अथवा देखने के तरीके के द्वारा प्रतिबिम्बत होता है।

4- अनुशासित रुप से सुनना आवश्यक है।:-

एक परामर्शदाता को परामर्श लेने वाले की बात को अनुशासनपूर्वक सुनना अवश्यक है।

एक परामर्शदाता गहराई से सुनता है, जो कुछ उसने सुना उस पर सोचता है और फिर परामर्श लेने वाले के मस्तिष्क को मोड़ता है। कई पास्टर परामर्शदान को कठिन पाते हैं क्योंकि सुनने और बातचीत करने की अपेक्षा वे अगुवाई करने और प्रचार करने के लिए प्रशिक्षित हैं।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-9
परामर्शदान में आत्मिक साधन

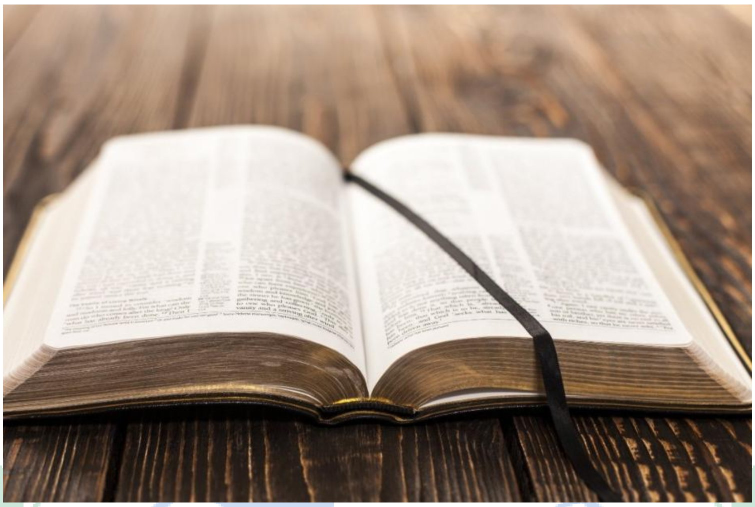

इसके पहले कि हम पास्तरीय परामर्शदान के आत्मिक साधनों का अध्ययन करें, हमारा प्रश्न है कि मसीही पास्तरीय परामर्शदान की विशेषता क्या है? अथवा क्या पास्तरीय परामर्शदान गैरमसीही परामर्शदान की तरह ही है?

कुछ मामले में मसीही पास्तरीय परामर्शदान अन्य परामर्शदान की तरह ही है। कई विचार और सिद्धान्त समान हैं, स्वीकृति की आवश्यकता, अनुशासन पूर्वक सुनना, परिचय इत्यादि । "लोगों की सहायता करना" सभी प्रकार के परामर्शदान का आधार है। जब एक मसीही परामर्शदाता लोगों की सहायता करने का प्रयास करता है तो वह उन सब विधियों का उपयोग करता है जो सभी परामर्शदाता स्वीकार करते हैं, चाहे वे मसीही हों अथवा नहीं। गैर मसीही परामर्शदाताओं से पास्तर कई चीजें सीख सकते हैं।

मसीही परामर्शदान और अन्य परामर्शदान में कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएं है इस बात को कुछ पास्टर नहीं मानते हैं। वे सोचते हैं परामर्शदान का कार्य ठीक वैसे ही है जैसे फिजियोलोजिस्ट अथवा सामाजिक कार्यकर्ता का कार्य है। कुछ सोचते हैं कि वे फिजियोलोजी अथवा सामाज विज्ञान में प्रशिक्षित नहीं हैं इसलिए वे परामर्श नहीं दे सकते । वे सोचते हैं कि परामर्शदान वे दें जो इसके लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित हैं। यदि एक पास्टर लोगों को परामर्श देने का प्रयास करता है तो वे सोचते हैं कि यह पास्टर झूठे रुप से मेडिकल डिग्री का दावा करने वाले डॉक्टर के समान है।

यह सत्य तथ्य है कि बहुत से पास्टर प्रशिक्षित फिजियोलोजिस्ट अथवा सामाजिक कार्यकर्ता नहीं हैं। बहुत सी समस्याओं के समाधान हेतु वे परामर्श लेने वालों को एक प्रशिक्षित डाक्टर, फिजियोलोजिस्ट अथवा वकील के पास स्थानान्तरित करते हैं। लेकिन जो लोग आत्मिक सहायता चाहते हैं पास्टर उन्हें किसी और को नहीं सौंप सकता, विशेषकर उन परामर्शदाताओं को जो मसीही नहीं हैं।

Creation Autonomous Academy

पास्तरीय परामर्शदान में परमेश्वर और मनुष्य के बारे में विचार करते हैं। कुछ सहायक बिन्दु निम्नलिखित हैं।-
(क) परमेश्वर सृष्टिकर्ता है जो सक्रियतापूर्वक अपने संसार और सभी लोगों की देखभाल करता है।
(ख) परमेश्वर के सम्बन्ध में मनुष्य मात्र उसके संबंध से ही सत्य जान सकता है।
(ग) यीशु मसीह में परमेश्वर ने स्वतंत्रता और जीवन का सही अर्थ दिया है।
(घ) संसार के लिए कलीसिया परमेश्वर की योजना का एक भाग है। जो परमेश्वर को सही अर्थ में जानने वालों के लिए देखरेख, सेवा का प्रबन्ध करती है।

(च) पवित्र आत्मा सक्रिय एवं संसार में मौजूद है। जो सही रूप से परमेश्वर की सहायता चाहते है, उन्हें ईश्वरीय सामर्थ और साधन उपलब्ध करता है।

मसीही पास्टर जो इन विचारों को समझते हैं अपनी परामर्शदान की सेवा में इनका उपयोग करते हैं । पास्तरीय परामर्शदान के चार मुख्य आत्मिक सधान हैं।

1 -वचन - बाइबल

2 - प्रार्थना

3 - संस्कार

4 - कलीसिया की संगति

आत्मिक साधन और इनका प्रभावशाली उपयोग हमारे आधारभूत विश्वास पर निर्भर करते हैं । हम पवित्रात्मा की अगुवाई में इनका प्रभावशाली उपयोग कर सकते हैं।

1 - बाइबल का उपयोग

परामर्शदान में बाइबल महत्वपूर्ण औजार है। यह लोगों की आधारभूत आवश्यकताओं की सही समझ और उनका उत्तर देती है। अतः वर्तमान समय में पवित्रआत्मा की अगुवाई में जीवन जीने हेतु लोगों के लिए बाइबल एक जीवित वचन है। जब हम इस लिखित वचन को पढते, मनन करते और इसे अपने जीवन में लागू करते हैं। तब परमेश्वर की उपस्थिति और क्रियाशीलता वास्तविक रूप से हम तक पहुँचती है। वचन परामर्शदान के लिए महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए-

(क) वचन हमारी मानवीय परिस्थितियों में प्रकाश लाता है। (भजन 119:5)

(ख) वचन परमेश्वर के विचार को हमें दिखाता है कि हम अपने विचार परमेश्वर के विचार के अनुसार बनायें (यशा० 55:6-9)

(ग) वचन हमें प्रभु यीशु पर विश्वास करना सिखाता है और उसमें हम नया जीवन पाते हैं। (यूहन्ना 20:30-31)

(घ) वचन निराशा एवं कठिन समयों में हमें आशा, उत्साह और शांति देता है। (रोमियों 15:4)

(च) वचन सही निर्देश व सत्य शिक्षा देता है और जीवन जीने का सही मार्ग दिखाता है। (2 तीमु० 3:15-17)

(छ) वचन हमारे जीवन में गहराई से प्रवेश करता है और हमारे स्वयं के विचार व आवश्यकताओं को मानने एवं समझने के लिए हमारी सहायता करता है। (इब्रा० 4:12)

कई पास्टर अपने परामर्शदान के कार्य में बाइबल को एक प्रभावशाली साधन के रूप में उपयोग करने में असफल हो जाते हैं। कुछ बाइबल का उपयोग ही नहीं करते । इसका कारण है कि कुछ पास्टर सोचते हैं लोगों के आज के जीवन के लिए बाइबल पुरानी है, क्योंकि यह बहुत समय पहले लिखी गयी। उनका विचार है कि यह वर्तमान समय में बहुत कम उपयोगी है। कुछ बाइबल को उपयोग करने का सही तरीका नहीं सीखते इसलिए वे बिना बाइबल के कार्य करते हैं। कुछ लोग बाइबल का उपयोग एक जदुई छड़ी के रूप में करते हैं, तो कुछ झूठे शिक्षकों की पिटाई के लिए एक भारी छड़ी के रूप में बाइबल का उपयोग करते हैं।

Creation Autonomous Academy

जैसे पास्टर लोग बाइबल का उपयोग करते हैं कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं।-

उदाहरण -1: पीटर यौन सम्बन्धी आवश्यकता और विचारों से बहुत कष्ट में था, परीक्षा में था। वह अपनी समस्या के बारे में निर्देश और सहायता पाने की आशा से अपने पास्टर के पास गया। पास्टर ने उसे सावधनीपूर्वक सुना और तब पीटर को सलाह दिया कि कैसे वह अपने विचार एवं व्यवहार पर नियत्रंण करे और यौन आवश्यकता के समय इसे पराजित करे। उसने पीटर को बाइबल की एक प्रति दिया और सलाह दी कि जब उसके सामने यौन सम्बन्धी परीक्षा आती है तो वह कुछ पदों को पढ़े। उसने पीटर को यह भी सलाह दी कि जब वह रात में सोने जाता है बाइबल को अपने

तकिये के नीचे रखे। पास्टर ने कहा, ‘‘यदि आप ऐसे करें तो यह यौन सम्बन्धी दुष्ट विचारों व स्वप्नों को आपसे दूर करेगा और सही ढंग से सोने में आपकी सहायता करेगा।’’ पीटर ने प्रतिज्ञा किया कि वह इस सलाह का अनुसरण करेगा, उसकी समस्या में यह अवश्य उसकी सहायता करेगा।

उदाहरण-2ः सोहन कलीसिया का सदस्य नहीं है परन्तु वह अपनी शराब पीने की समस्या में सहायता पाने लिए पास्टर डेविड के पास आता है। क्योंकि जब वह पी लेता है तो अपनी पत्नी से झगड़ा करता है। थोड़े समय बातचीत करने के बाद अपने पीने की आदत के बारे में सोहन ने पास्टर को बताना आरम्भ किया।

सोहनः मैं अपनी बीबी पर आरोप नहीं लगा सकता कि वह मेरे ऊपर क्रोधित है। आप मेरे जीवन को रसोई में देख सकते हैं।

पास्टरः आप क्यों इतना ज्यादा शराब पीते हैं?

सोहनः मैं नहीं जानता। मैं अपने दोस्तों का अनुसरण करता हूँ क्योंकि मैं डरता हूँ कि मैं उनके साथ पीने से इनकार करूँगा तो वे हमें छोड़कर हमसे दूर चले जाएँगे। परन्तु मैं यह भी महसूस करता हूँ कि यदि मैं उनके लिए शराब न खरीदूँ तो मैं औरों के साथ ऐसा करूँगा।

पास्टरः अच्छा, यह एक समस्या है। बाइबल कहती है मनुष्य का भय मानना तो फंदा है। (नीति० 29:25) जब तक आप यह सोचना बन्द नहीं करेंगे कि लोग आपके विषय में क्या सोचते हैं तब तक आप मजबूत नहीं होंगे।

सोहनः मैं आपकी बात से सहमत हूँ। मैं घर के सभी झगड़ों से घृणा करता हूँ और वास्तव में झगड़ों को रोकना चहता हूँ लेकिन यह मेरे लिए कठिन है।

पास्टर : यदि वास्तव में आप झगड़ों को रोकना चाहते हैं तो परमेश्वर आपकी सहायता करेगा। उसका वचन कहता है, ‘संकट के दिन मुझे पुकार मैं तुझे छुड़ाऊँगा।’

सोहन : यह मात्र शराब पीना ही नहीं है। मेरी पत्नी और दूसरे लोगों की शिकायत है कि जब मैं रात में पीकर जुआ खेलता हूँ और घर नहीं जाता तो मैं अपना सारा रुपया हार जाता हूँ।

पास्टर : हाँ एक चीज दूसरी की तरफ ले जाती हैः पहला शराब पीना और अब धोखा । यह अच्छा नहीं है। बाइबल स्पष्टता से बताती है कि ये दोनों चीजें गलत हैं। जब पौलूस ने कुरिन्थि के मसीहियों को लिखा तो उसने कहा, ‘न व्यभिचारी, न लोभी, न पियक्कड़ ---परमेश्वर के राज्य के उत्तराधिकारी होंगे। (1 कुरिन्थियों 6:9-10) पुनः नीतिवचन में पढ़ते हैं, ‘जो व्यर्थ की बातों में मन लगाता है वह अत्यधिक दरिद्र होगा। परन्तु जो शीघ्र ही धनी बनना चाहता है वह दण्ड पाए बिना न रहेगा (नीति० 28:19-20)

Creation Autonomous Academy

सोहनः हाँ मैं जानता हूँ। नहीं मैं क्यों आपके पास सहायता के लिए आता।

पास्टर : अच्छा है कि आप अपने विषय में सावधानीपूर्वक सोचते हैं। अपनी जीवनशैली एवं गलत तरीके को बदलने का वास्तविक निर्णय लें और तब परमेश्वर से उसकी दया माँगें। सुनें यशा० 55:6-7 ‘जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो, जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो। दुष्ट अपनी चाल-चलन और अनर्थकारी अपने सोच- विचार छोड़कर यहोवा की ओर फिरे और वह उस पर दया करेगा, हाँ हमारे परमेश्वर की ओर, क्योंकि वह पूरी रीति से क्षमा करेगा।’

सोहन : हाँ मैं जानता हूँ कि जो आप कह रहे हैं सत्य है। मैं इन पदों को याद रखने का प्रयास करुँगा और भविष्य में अच्छा प्रबंध करुँगा। क्या मैं फिर कभी इस विषय में आपसे पुनः बातचीत करने के लिए आ सकता हूँ?

पास्टर : अवश्य आपका स्वागत है।

प्रभावशाली तरीके से वचन का उपयोग करना :-

प्रभावशाली बनने के लिए बाइबल का सही तरीके से उपयोग करें। वचन से सीखना प्रत्येक पास्तरीय परामर्शदाता के लिए आवश्यक है। पौलुस तीमुथियुस को सलाह देता है, 'और बचपन ही से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है जो मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा तुम्हें उद्धार पाने के लिए बुद्धि दे सकता है। '' बाइबल के उपयोग करने की कला बाइबल कालेज में बाइबल अध्ययन करने मात्र से नहीं आएगी। यह कला तथ्यों को देखने से कि लेखक कौन है? लिखने की तिथि क्या है? ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है? से भी नहीं आएगी। पास्तरीय कार्य के लिए बाइबल कालेज की परीक्षा पास कर प्राप्त किए गये ज्ञान से भिन्न प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता हैं।

परामर्शदाता के हाथ में बाइबल एक औजार है। इसकी सही उपयोग करने की कला वास्तविक अभ्यास से आती है। जैसे एक बढ़ई को अभ्यास करने की आवश्यकता है इसके पहले कि अपने कार्य में वह स्क्रूड्राइवर का उपयोग करें। अतः एक पास्टर के लिए वचन का उपयोग करने के पहले वास्तविक अभ्यास करना आवश्यक है। यह सब कुछ बाइबल प्रशिक्षण में नहीं पढ़ाया जाता।

पास्तरीय ज्ञान के पीछे बाइबल का प्रभावशाली उपयोग अन्य तथ्यों पर निर्भर करता है:

1)- बाइबल के प्रति परामर्शदाता का स्वयं का व्यवहार :-

क्या व्यवहार होगा यहां कुछ सुझाव हैं।

- वह विश्वास करे कि बाइबल की शिक्षाएं लोगों के आज के जीवन के लिए सत्य और उपयोगी हैं।
- वह अपने स्वयं के जीवन का निर्माण इन शिक्षाओं पर करे।
- वह निरन्तर वचन सीखने का अभ्यास करे और दूसरों की सहायता करने में उसका अच्छी तरह से उपयोग करे।
- वह वचन के खण्डों को याद करे और सही रुप से जाने कि दूसरों को क्या देता है।

कुछ लोगों ने वचन को याद किया है और कुछ ने स्वयं वचन के अच्छे संग्रह किए हैं। मानवीय समस्याओं में कैसे बातचीत करें इस संबन्ध में वे इन्हें सहायक पाते हैं। जब वे दूसरों की सहायता करते हैं तो प्रभावशाली तरीके से बाइबल का उपयोग करते हैं। कई परामर्शदाता यह नहीं जानते हैं कि विश्वासपूर्वक उपयोग के लिए बाइबल पर्याप्त है। जैसे एक सिपाही कि आवश्यकता होती है कि उसके हाथ में तैयार रायफल हो वैसे ही एक पास्तरीय कार्यकर्ता की आवश्यकता है कि उसकी जुबान पर तैयार वचन हो। वचन की तैयारी नियमित रुप से करें तभी यह सम्भव हो सकता है। अचानक समय आने पर खोजने से काम नहीं चलेगा। जैसे कुछ लोग करते हैं बीमार व्यक्ति को विजिट करने से पहले अथवा किसी को परामर्श देने से पहले वे वचन को तत्काल खोजने लगते हैं। प्रभावशाली तैयारी शांति के साथ निरन्तर चलती रहती है।

2)-परामर्शदाता के बाइबल उपयोग करने का तरीका :-

परामर्श लेने वाले की सहायता के विषय में, उसकी समस्या और परमेश्वर से उसके सम्बन्ध के विषय में वचन एक जीवित तरीके से उपयोग किया जाता है। यह व्यक्ति के जीवन को अंधकारमय और कठिन नहीं बनाता बल्कि उसकी वास्तविक स्थिति पर प्रकाश डालता है। जब परामर्शदाता वास्तव में समस्या को समझ जाता है तभी वचन का प्रभावशाली तरीके से उपयोग किया जा सकता है। बाइबल की शिक्षा को लागू करने के पहले समस्या को समझना आवश्यक है। समस्या को समझने के बाद पास्टर निणर्य ले सकता है कि कौन सा खण्ड अथवा वचन चुनकर परामर्श लेने वाले को समझाए।

Creation Autonomous Academy

प्रत्येक परामर्शदाता वचन के प्रस्तुत करने के अच्छे समय का निर्णय ले सकता है। कुछ पास्टर परामर्शदान का आरम्भ एक छोटे बाइबल पाठ अथवा प्रार्थना से करना पसन्द करते हैं। दूसरे प्रतीक्षा करते हैं वे परामर्श पाने वाले की आवश्यकता को समझते हैं। कुछ स्थितियों में वे निर्णय लेते हैं कि वे कोई भी वचन का उपयोग नहीं करेंगे। स्थिति की समझ के साथ जब पास्टर समस्या का सम्बन्ध वचन से स्थापित करता है तो वचन बहुत ही प्रभावशाली होता है। वचन प्रकाश, आशा, उत्साह अथवा एक चुनाव ला सकता है। यह परामर्श लेने वाले के लिए सीधे उपयोगी है। समस्या से सम्बंधित जो भी वचन उपयोग करें आवश्यक है कि वह स्पष्ट हो और समस्या के समाधान हेतु सही अर्थ दे। कठिन पद सहायता की अपेक्षा भ्रम उत्पन करते हैं। पवित्र आत्मा पर भरोसा रखें वह वचन का सही उपयोग करने में आपकी अगुवाई करेगा ।

परामर्श के लिए चुना हुआ खण्ड परामर्शदाता द्वारा अथवा परमर्श लेने वाले के द्वारा पढ़ा जा सकता हैं। कई लोग जब बाइबल को स्वयं के लिए पढ़ते हैं तो वे अपने लिए नया अर्थ पाते हैं। जब वे पहली बार पढ़ ते हैं तो स्वयं की आवाज सुनते हैं, वे व्यक्तिगत रुप से वचन के साथ भाग लेते हैं। जो लोग नहीं पढ़ सकते उनके लिए परामर्शदाता स्वयं खण्ड को पढ़ेगा, एक समय में एक पद और तब परामर्श लेने वाले से कहेगा कि उसके पीछे-पीछे वचन को दोहराए। कुछ परामर्श लेने वाले खण्ड में अपना नाम रखकर, खण्ड को व्यक्तिगत रुप से ले करके पास्टर की सहायता करते हैं। उदाहरण के लिए यूहन्ना 3:16 के साथ ‘‘परमेश्वर ने एलबर्ट से ऐसा प्रेम किया की उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि एलबर्ट विश्वास करे, वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए।’’ इसी प्रकार और खण्डों का उपयोग किया जा सकता है जिनमें परमेश्वर ने सहायता की प्रतिज्ञा दी है।(भजन 23, 1 यूहन्ना 1:7-9)

यदि परामर्शदाता चाहता है कि परामर्श लेने वाले से एक और बार मुलाकात करे तो उससे कहे दिये गये पदों के विषय में वह पढ़े और घर जाकर उन पर विचार करे और अगले सप्ताह आए। कुछ परामर्शदाता वचन के पदों को लिखकर देना पसंद नहीं करते हैं जिससे कि परामर्श लेने वाला इसके विषय में सोचे, विशेष रुप से जो बीमार हैं अथवा जिनके पास स्वयं की बाइबल नहीं है।

कुछ परामर्श लेने वालों की आवश्यकता होती है कि उनके लिए कुछ चुने हुए खण्डों की व्याख्या की जाए। यह विशेष रुप से आवश्यक है जब किसी आत्मिक समस्या पर बातचीत की जा रही हो अथवा गलत शिक्षा का मामला हो जब एक सच्चे अर्थ की गहरी समझ प्राप्त करने की आवश्यकता है। व्याख्या की मात्रा इस बात पर निर्भर करेगी कि परामर्श लेने वाला पहले से कितना जानता है और परामर्शदाता ने स्वयं स्थिति को कितना समझा है। यह अत्यंत आवश्यक है कि परामर्श लेने वाले को भ्रमित न करें। हो सकता है कि जो पास्टर ने बाइबल कालेज में सीखा है विस्तार से पृष्ठभूमि परामर्श लेने वाले की परिस्थिति के लिए उपयोगी न हो परन्तु यह भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि सतही बातचीत न करें, कि परामर्श लेने वाला बच्चा है। कुछ परामर्श लेने वाले पास्टर की अपेक्षा वचन का गहरा अध्ययन किए होते हैं।

वचन का खण्ड बड़ा होने की अपेक्षा छोटा हो। क्योंकि जब लोग कष्ट में होते हैं वे एक समय में एक ही विचार पर केन्द्रित हो सकते हैं। इसलिए बड़े खण्ड उन्हें भ्रमित कर देंगे। विशेषकर बीमार अथवा निराश लोगों को पूरे खण्ड की अपेक्षा कछ सरल पद सहायता करेंगे।

ये सभी सुझाव तभी प्रभावशाली होंगे जब परमर्शदाता स्वयं वचन को जानता है और उन पर निर्भर है। यह पढ़ने, मनन करने और मानव जीवन के लिए उनके अर्थ पर भी निर्भर करता है। जो पास्टर या परामर्शदाता स्वयं के लिए बाइबल का उपयोग नहीं करता, वह दूसरों की सहायता के लिए प्रभावशाली तरीके से बाइबल का उपयोग नहीं कर सकता।

Creation Autonomous Academy

वचन के सहायक संदर्भ :-

आप विभिन्न समस्याओं जैसे आनन्द, निराशा, भय, क्रोध इत्यादि से सम्बन्धित बाइबल पद एकत्र कर सकते हैं। कुछ संग्रह मौजूद हैं उनका उपयोग कर सकते हैं। लेकिन कुछ पास्तरीय परामर्शदाता अपना स्वयं का संग्रह बनाते हैं।

2-प्रार्थना का उपयोग

परामर्शदान की सेवा में प्रार्थना विशेष रुप से महत्वपूर्ण है। यह वचन उपयोग के समान परमेश्वर से निकट सम्बन्ध रखने का मुख्य तरीका है। परामर्श देने के पहले स्थिति को जानकर परामर्शदाता परमेश्वर से इस समस्या के सम्बन्ध में निर्देश पाने के लिए प्रार्थना करे उसके बाद परामर्श दे।

परामर्शदान में प्रार्थना का उपयोग क्यों करें ?:-

प्रार्थना हम इसलिए करते हैं कि यह परामर्शदाता और परामर्श लेने वाले दोनों की सहायता करती है।-

1. प्रार्थना से हमारे जीवन जीने की स्थिति खुलती है। परमेश्वर बुद्धि और सामर्थ्य के गहरे साधनों को हमें देता है।
2. प्रार्थना हमें परमेश्वर के विचार के पास लाती है। अतः हम समस्या को नये और स्पष्ट तरीके से देखना आरम्भ कर देते हैं।
3. प्रार्थना हमें याद दिलाती है कि हमारी स्वयं की समझ और शक्ति सीमित है। यीशु मसीह की शिक्षाओं और उदाहरण में हम अपने जीवन और सम्बन्धों का सही अर्थ पा सकते हैं।
4. प्रार्थना हमारी असफलताओं और समस्याओं में परमेश्वर के अनुग्रह और प्रेम द्वारा सहायता करती है और अनुभव देती है।

कैसे और कब प्रार्थना का उपयोग करें?:-

एक पास्टर परामर्शदान में प्रार्थना का उपयोग करता है, अपने उद्देश्य और जिन परिस्थितियों में वह कार्य कर रहा है।

कुछ परामर्शदाता प्रार्थना का उपयोग परामर्शदान के आरम्भ में करते हैं। दूसरे प्रतीक्षा करते और परिस्थिति को समझते हैं, तब समस्या के समाधान के लिए प्रार्थना करते हैं। अन्य परामर्शदान की वास्तविक स्थिति के अनुसार प्रार्थना का उपयोग करते हैं।

परामर्शदान में कैसे प्रार्थना का उपयोग कर सकते हैं इसके लिए निम्नलिखित निर्देश सहायक होंगे।-

1- इसके विषय में कोई नियम नहीं है। स्थिति के अनुसार परामर्शदाता प्रार्थना का उपयोग करता है। जब आवश्यकता समझता है अथवा परामर्श लेने वाला प्रार्थना के लिए कहता है।

2- कुछ स्थितियाँ हैं जिनमें प्रार्थना सहायक है जैसे बीमार के साथ, निराश लोगों के साथ, विवाह, बपतिस्मा, पुष्टिकरण, आनन्द और धन्यवाद आदि।

3-सुनने से बचने के लिए प्रार्थना का उपयोग न करें। परामर्शदाता और परामर्श लेने वाले के बीच कमजोर सम्बन्ध को छिपाने के लिए भी प्रार्थना का उपयोग न करें।

4- ईश्वरीय साधन और बुद्धि के कार्य करने के लिए स्थिति को स्पष्ट करने में प्रार्थना सहायता करती है। लेकिन याद रखें कि परमेश्वर की बुद्धि और साधन परामर्शदान की स्थिति के द्वारा कार्य करते हैं। अपनी जिम्मेदारी परमेश्वर पर न टालें, प्रार्थना भी करें और परामर्श भी दें।

5- कई लोग चाहते हैं कि पास्टर प्रार्थना करे और यह अच्छा है।

किस प्रकार की प्रार्थना हमें करनी चाहिए?:-

प्रार्थना छोटी और सरल हो जिससे कि परामर्श लेने वाला और अन्य लोग असानी से समझ सकें। परामर्शदान में प्रार्थना के उपयोग के लिए कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं।-

1- परमेश्वर की उपस्थिति के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।
2- समस्या के वास्तविक समाधान पर, सहायता प्राप्त करने वाले की समझ के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें।
3- परमेश्वर के साधन और प्रतिज्ञा का उपयोग करें जो परामर्श लेने वाले के लिए दी गई।
4-समझने में सरल और परामर्श लेने वाले की समस्या से सीधे सम्बन्ध रखने वाले वचन का उपयोग करें।
5-परामर्श लेने वाले की परिस्थिति में परमेश्वर उपस्थित व सक्रिय रहे। परमेश्वर उसके मन, मस्तिष्क को सुनने के लिए खोले।

प्रभु की प्रार्थना आपके साथ मिलकर करने के लिए परामर्श लेने वाले अथवा अन्य लोगों को आमंत्रित करें। परामर्श देना समाप्त करते समय यह सहायक है।

3-कलीसिया की संगति का उपयोग

पास्टर लोगों की आवश्यकता में परामर्श दे सकता है। वह उन्हें उत्साहित करने के द्वारा आनन्द और शक्ति दे सकता है। वह उन्हें उत्साहित कर सकता है कि वे मसीहियों की संगति को स्वीकार करें। दुःखी मसीहियों की सहायता करने का एक विशेष कारण है।, ‘‘जो कोई इन छोटों में से किसी एक को चेला जानकर ठण्डे पानी का एक गिलास भी पीने को दे तो मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह अपना प्रतिफल कदापि नहीं खोएगा।’’ (मत्ती 10:42)

मसीही संगति का अर्थ है यह बताना कि दूसरे लोग भी दुःख में हैं। इसका अर्थ है वास्तविक रूप से दुःख बाँटना। जो आवश्यकता में हैं उनकी सहायता करना। मात्र सांत्वना के शब्दों से नहीं लेकिन व्यवहारिक रूप से सहायता करना। पौलुस द्वारा गलातियों की सहायता करना। मात्र सांत्वना के शब्दों से नहीं लेकिन व्यवहारिक रुप से सहायता करना। पौलुस गलातियों कि कलीसिया को बताता हैः ‘एक दूसरे को सँभालो, एक दूसरे का भार उठाओ और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूर्ण करो।’ (गला० 6:2)

Creation Autonomous Academy

मसीही संगति एक साधन है उनकी सहायता के लिए जो आवश्यकता में हैं। इसलिए जहाँ तक अवसर मिले सबके साथ भलाई करें, विशेषकर विश्वासी भाइयों के साथ। (गला० 6:10) यह संगति प्रत्येक मसीही सेवा का भाग है। प्रेम की सेवा जिसमें कलीसिया का प्रत्येक सदस्य सक्रियतापूर्वक भाग लेता है।

नया नियम कलीसिया में समुदाय की देखरेख का एक स्पष्ट तरीका देता है। व्यक्ति, परिवार, समूह ये सब एक ही संगति में रहते हैं। क्योंकि पवित्र आत्मा की सहभागिता द्वारा ये सभी मसीह में जुड़े हैं।

(क) मसीह की देह(1 कुरि॰ 12:27):-

इसी प्रकार तुम मसीह की देह हो और एक एक करके उसके अंग हो। यीशु ने फिर उनसे कहा, ‘‘तुम्हें शांति मिले, जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।’’ और जब वह यह कह चुका तो उसने उन पर फूँका और उनसे कहा, ‘‘पवित्र आत्मा लो।’’ (यूहन्ना 20:21-22)

(ख) सेवा में प्रत्येक व्यक्ति के लिए करने के लिए एक कार्य है।:-

वरदान तो विभिन्न प्रकार के हैं, पर आत्मा एक ही है। सेवाएँ कई प्रकार की हैं परन्तु प्रभु एक ही है। प्रभावशाली कार्य भी अनेक प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है जो सब में सब कुछ करता है। प्रत्येक को सब की भलाई के लिए आत्मिक वरदान दिया जाता है। (1 कुरि० 12:4-7)

(ग) सम्पूर्ण संगति को कार्यशक्ति पवित्र आत्मा द्वारा दी गयी है।:-

पवित्र आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, दयालुता, भलाई, विश्वस्तता, नम्रता व संयम हैं। ऐसे ऐसे कामों के विरूद्ध कोई व्यवस्था नहीं है। और जो मसीह यीशु के है, उन्होंने अपने-अपने शरीर को दुर्वासनाओं तथा लालसाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम पवित्र आत्मा के द्वारा जीवित हैं तो पवित्र आत्मा के अनुसार चलें भी। हम अहंकारी न बनें, एक दूसरे को न छेंड़े और न ही डाह रखें। हे भाइयों, यदि कोई मनुष्य किसी अपराध में पकड़ा भी जाए तो तुम जो आत्मिक हो नम्रतापूर्वक उसे संभालो, परन्तु सतर्क रहो कि कहीं तुम भी परीक्षा में न पड़ जाओ। एक दूसरे का भार उठाओ और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूर्ण करो। (गला० 5:22-6:2)

(घ)संगति का पास्टर टीम का एक सदस्य है और वह नियुक्त अगुआ है।:-

पास्टर का कार्य है लोगों को उत्साहित करना, सलाह देना और प्रशिक्षण देना। अतः सम्पूर्ण टीम दूसरों की देखरेख करने में सक्रियता से लगी है, प्रत्येक अपना अपना कार्य सही तरीके से कर रहा है। वरन प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है अर्थात मसीह में बढ़ते जाएँ, जिससे सम्पूर्ण देह, प्रत्येक जोड़ में एक साथ बँधकर और सुगठित होकर, प्रत्येक अंग के ठीक ठीक कार्य करने के द्वारा बढ़ती जाती है, और इस प्रकार प्रेम में स्वयं उसकी उन्नति होती है।(इफि० 4:15-16)

किस प्रकार की संगति?:-

पास्टर किस प्रकार से चाहता है कि कलीसिया के सदस्य संगति और देख रेख के साथ परामर्शदान में उसकी सहायता करें? अपनी मृत्यु से पहले प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाते समय ये तरीके दिए। (मत्ती 25:31-46)

(क) भूखे को खिलाना व प्यासे को पानी पिलानाः-

'राजा कहेगा---मैं भूखा था और तुमने मुझे खाने को दिया---प्यासा था और तुमने मुझे पानी पिलाया।' कभी-2 आवश्यकतामंद लोगों के लिए वास्तविक भोजन और पानी संगति के रूप हैं। एक व्यक्ति बहुत ही गरीब है अतः उसके अथवा उसके बच्चों के लिए भोजन की भेंट उसकी सहायता करने का सबसे अच्छा तरीका है। अथवा परिवार सहित उसे घर पर बुलाकर भोजन कराना।

Creation Autonomous Academy

(ख) परदेशी को अपने घर में ठहरानाः-

'मैं परदेशी था और तुमने मुझे अपने घर में ठहराया।' जब घर छोड़ना पड़ता है कई लोग नये मित्र बनाने में कठिनाई महसूस करते हैं। ऐसे लोगों के लिए संगति का अर्थ है मित्रता का अनुभव करने के लिए उन्हें अपने घर में आमंत्रित करें।

(ग) नंगे को वस्त्र पहिनानाः-

'मैं नंगा था तुमने मुझे कपड़े पहिनाए।' जो आवश्यकता मंद हैं व्यवहारिक तरीके से उनकी सहायता करें। लेकिन कभी-2 पैसे से अथवा जैसा सम्भव हो अवश्यकतामंद की सहायता करना।

(घ) बीमारों की सुधि लेनाः-

'मैं बीमार था और तुमने मेरी सुधि ली।' संगति का एक महत्वपूर्ण तरीका है बीमारों की सहायता करना। चाहे वे शारीरिक रूप से बीमार हों, मानसिक रूप से बीमार हों या अत्मिक रूप से बीमार हों। इसका अर्थ है जहाँ वे हैं वहाँ उनसे जाकर भेंट करना, उनके घर अथवा अस्पताल में। आवश्यकतानुसार उनकी संभव सहायता करें। उस बीमारी की हालत में जो वे नहीं कर सकते वह आप उनके लिए करें। जैसे-परिवार की देखरेख अथवा जानवरों या बगीचे की देखरेख इत्यादि।

(ङ) बन्दियों से भेंट करनाः-

'मैं बन्दीगृह में था और तुम मुझसे मिलने आए।' कैदी लोगों से भेंट मुलाकात करें। जहाँ तक संभव हो उनकी उचित और संभव सहायता करें।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-10

परामर्शदाता को विभिन्न प्रकार के दुःखों के ज्ञान की आवश्यकता

दुःख मानव जीवन का सामान्य अनुभव है। विशेष दो प्रकार के दुःख मानव जीवन में होते हैं।-

1-शारीरिक पीड़ाः-

एक दुःख शारीरिक पीड़ा है। यह शरीर के किसी अंग में होती है। कभी-कभी हम यह नहीं बता सकते कि पीड़ा किस अंग में हो रही है। तब हम कहते हैं कि सारे शरीर में दर्द हो रहा है। यदि सिर में या कान में दर्द हो तो दर्द को दवाई से कम किया जा सकता या दूर किया जा सकता है। जब पीड़ा असहनीय हो जाती है तो कभी-कभी प्रकृति बेहोशी लाने से उसका उपचार करती है। शारीरिक पीड़ा बहुधा आंगिक होती है। उदाहरण के लिए हमारा हाथ ब्लेड से कट जाता है, अथवा हम गिर जाएं और हमारी हड्डी टूट जाती है या मांसपेशियों में मोच आ जाती है। ये पीड़ा के सामान्य प्रकरण हैं। परन्तु कई बार पीड़ा के बड़े जटिल कारण होते हैं। उनको केवल एक विशेषज्ञ ही जान सकता है। शारीरिक पीड़ा सरलता से पहचानी जा सकती है। पीड़ित के प्रति सहानुभूति व्यक्त करना भी सरल है। संसार में कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं शारीरिक पीड़ा के निवारण हेतु कार्य कर रही हैं।

2- मानसिक या भावनात्मक पीड़ाः-

Creation Autonomous Academy

एक दूसरा दुःख है जिसके ऊपर कम ध्यान दिया जाता है। यह मानसिक या भावनात्मक पीड़ा है। कई लोग इसे गंभीर बात नहीं मानते। कई लोग हैं जो किसी प्रकार भी शारीरिक पीड़ा पहुँचाना नहीं चाहेंगे, परन्तु दूसरों की भावनाओं को चोट पहुँचाने में उन्हें तनिक भी संकोच नहीं होता। दिल की चोट की पीड़ा शारीरिक पीड़ा से कहीं अधिक स्थायी हानि पहुँचाती है। यदि किसी बालक को चोट लग जाती है तो वह शारीरिक पीड़ा के कारण रोता चिलाता है। यदि किसी बालिका की गुड़िया छीन ली जाती है तो वह रोती है क्योंकि उसकी मनपसंद वस्तु छीन ली गई है। अब इनमें से कौन सी पीड़ा अधिक कष्टप्रद है? यह समझना अति महत्वपूर्ण है कि मानसिक या भावनात्मक पीड़ा शारीरिक पीड़ा से कहीं अधिक तीव्र और कष्टप्रद होती है। एक गहरी चोट ठीक हो जाने पर भी निशान छोड़ जाती है। एक भावनात्मक आघात मनुष्य के व्यक्तित्व पर अपनी गहरी छाप अंकित कर देता है और इस प्रकार व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करता है। व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। उदाहरण के लिए एक मसीही था जो मंडली की महत्वपूर्ण सेवा परिश्रमपूर्वक करता था और उसकी प्रशंसा की जाती थी। उसे एक विशेष पद के लिए नामांकित किया गया। उसने

अनिच्छा प्रकट की परंतु कुछ लोगों ने उसे विवश किया तब उसने नामांकन स्वीकार कर लिया। बाद में विवश करने वाले लोगों ने ही उसे हरा दिया। इससे उसे बहुत गहरा आघात हुआ और उसने मंडली से पूर्ण सम्बन्ध विच्छेद कर लिया।

3- शारीरिक और भावनात्मक व्यवहार एक दूसरे से सम्बन्धित है।:-

शरीर और मन, शारीरिक और भावनात्मक व्यवहार एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। कभी-कभी शारीरिक पीड़ा भावनात्मक पीड़ा का कारण बन जाती है। एक व्यक्ति का पैर काट दिया गया था उसे एक नकली पैर लगा दिया गया था। वह हर प्रकार से स्वस्थ होने पर भी अपने एक पैर के जाने के कारण बहुत दुखी था। इससे उसके बोलने पर प्रभाव आ गया। वह बहुत जल्दी घबरा जाता था।

4-शारीरिक और भावनात्मक पीड़ा के कारणः-

शारीरिक और भावनात्मक पीड़ा के कई कारण होते हैं। एक कारण है व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति न होना। मनुष्य की शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक आवश्यकताएं होती हैं। ये आवश्यकताएं जीवन की अंतः प्रेरणाओं से उत्पन्न होती हैं। दूसरा कारण है मनुष्य के जीवन और व्यक्तित्व का खतरा।

1. व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति न होना।:-

(क) शारीरिक आवश्यकताएंः-

मनुष्य को भोजन, पानी, हवा, तथा गर्मी और ठंड से रक्षा पाने की आवश्यकताएं होती हैं। भूख न मिटने पर पेट में पीड़ा का अनुभव होने लगता है। यह पीड़ा कभी-कभी भंयकर रूप धारण कर लेती है। बच्चे भूखे होने पर शीघ्र ही रोने लगते हैं। बड़े लोग इस पीड़ा को तुरन्त तो नहीं व्यक्त करते परन्तु वे क्रोधित और चिड़चिड़े हो जाते हैं। यदि मनुष्य की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति एक लम्बी अवधि तक न हो तो वह शारीरिक और मानसिक पीड़ा का अनुभव करता है।

(ख) मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएंः-

मनुष्य की न केवल शारीरिक वरन मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं भी होती हैं। ये कई प्रकार की होती हैं। ये उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी शारीरिक आवश्यकताएं। मनुष्य को सुरक्षा की आवश्यकता है। उसे सम्मान की आवश्यकता है। उसे स्वत्रंता, संगति तथा प्रेम की आवश्यकता है। इसके अभाव में वह दुःख का अनुभव करता है।

2. मनुष्य के जीवन और व्यक्तित्व का खतरा :-

दुःख का पहला कारण है व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति न होना। दूसरा कारण है मनुष्य के जीवन और व्यक्तित्व को खतरा। यह खतरा प्रकृति की ओर से या समाज की ओर से हो सकता है। शरीर को चोट लगने का खतरा हो सकता है। व्यक्ति के नाम या समाजिक पद का खतरा हो सकता है। शरीर और मन के लिए खतरा दुःख का कारण होता है। पास्टर यदि दुःख के इन विभिन्न कारणों और आयामों को जानता है तो उनके संदर्भ में परामर्श देकर सहायता पहुँचा सकेगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 11

परामर्शदान की मूल मान्यताएं

दुःखों में परामर्शदान का प्रक्रम या प्रक्रिया क्या होना चाहिए। यह प्रक्रिया व्यक्ति की प्रकृति तथा मानव के व्यवहार तथा परामर्शदाता में पाये जाने वाले गुणों के सम्बन्ध में कुछ मूल मान्यताओं पर आधारित है। परामर्शदान की मूल मान्यताएं निम्नलिखित हैं।-

1- प्रत्येक स्त्री या पुरूष एक अद्वितीय व्यक्ति है।:-

कोई भी दो व्यक्ति पूर्ण रूप से समान नहीं हैं। एक समान जुड़वा बच्चे भी, जिन्हें पहिचानना कठिन होता है अपने व्यवहार की शैली में एक समान नहीं होते। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी विशेष आनुवंशिकता, विशेष वातावरण, विशेष निजी आदर्श, निजी समस्याएं और उनके सुलझाने के निजी उपाय हैं। उसकी स्वयं के प्रति, दूसरों के प्रति तथा संसार के प्रति अपनी अभिवृत्ति है। इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है।

प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है। यह धारणा परामर्शदाता के लिए अधिकतम महत्वपूर्ण है। यदि परामर्शदाता केवल यांत्रिक एवं औपचारिक रूप से लोगों से मिलने जाता है तो वह उनकी समस्याओं का निवारण नहीं कर सकेगा। यद्यपि सुविधा की दृष्टि से व्यक्तियों को बर्हिमुखी और अंतर्मुखी वर्गों में बाँटा जा सकता है, तथापि किसी भी व्यक्ति को स्पष्ट रूप से किसी वर्ग में रखना असभंव है। प्रत्येक व्यक्ति अद्वितीय है। अतएव प्रत्येक के साथ बड़े आदर से मिलना और वार्तालाप करना चाहिए।

2 - व्यक्ति के व्यवहार के पीछे कोई न कोई कारण होता है। :-

व्यक्ति के व्यवहार के पीछे कोई न कोई कारण अवश्य होता है। कोई भी व्यवहार कोरी सनक के कारण नहीं होता। हर व्यवहार का कोई अभिप्राय होता है। यदि हम किसी व्यक्ति के वर्तमान व्यवहार को समझना चाहते हैं तो हमें उसके पूर्ववर्ती संबंधों और अभिप्रेरणों की जानकारी आवश्यक है। हमें यह जानना चहिए कि किसी विशेष प्रकार के व्यवहार का क्या कारण हो सकता है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति फटे कपड़ों की गठरी पीठ पर लिए हुए गंदे और फटे कपड़ों में घूमता फिरता है। इस व्यक्ति को अपने बहुमूल्य धन अर्थात फटे कपड़ों में ही संतोष मिलता है। उसे अच्छे कपड़े देने का तथा गंदे चिथड़ों से मुक्त करने का प्रयत्न किया गया। तब वह उस बच्चे के समान रोने लगा जिसकी गुड़िया खो गई है। शायद ये चरम सीमा के उदाहरण हैं। परन्तु इस से स्पष्ट होता है कि व्यक्तियों के व्यवहारों को समझने के लिए उनके पूर्ववर्ती संबंधों और अभिप्रेरणों की जानकारी आवश्यक है।

बहुधा व्यक्ति स्वयं ही अपने व्यवहार का कारण नहीं समझ पाता है। यदि उसका अभिप्रेरण छिपा हुआ है, तो तर्क या दलील से वह अभिप्रेरण प्रकट नहीं होगा। किसी व्यक्ति का व्यवहार कई जटिल एवं उलझे हुए तत्वों का परिणाम होता है। सात वर्ष की एक बालिका को माँ ने दोपहर को खाने के लिए बुलाया। परिवार के सब सदस्य आ गए। बालिका ने आने से इन्कार किया। उसने कह दिया, "मुझे खाना नहीं चाहिए।" जब उससे खाने के लिए फिर आग्रह किया गया तो उसने कहा, "मुझे भूख नहीं है।" वास्तव में उसे खाना भी चाहिए था और भूख भी लगी थी। परन्तु उसने इस प्रकार का व्यवहार इसलिए किया कि उसे उस समय एक विशेष भावनात्मक आवश्यकता थी। वह आवश्यकता उसके लिए खाने से बढ़कर थी। यदि परामर्शदाता ऐसी बालिका की सहायता करना चाहता है तो उसे इस आवश्यकता को समझना चाहिए। जब कभी परामर्शदाता किसी व्यक्ति के असमाजिक एवं समाजविरोधी व्यवहार के संबंध में उसकी सहायता करना चाहता है तो उसे इस बात को जानना पड़ेगा कि व्यक्ति के उस व्यवहार का कारण क्या है, उसके अभिप्रेरण क्या हैं। व्यक्ति उस समय तक नहीं बदल सकता जब तक उसके अभिप्रेरण को बदला न जाए, क्योंकि अभिप्रेरण ही व्यक्ति की क्रियाओं को उभारते, सहारा देते और आगे बढ़ाते हैं।

Creation Autonomous Academy

3 - भावनाओं के परिवर्तन से व्यवहार में भी परिर्वतन होता है।:-

यदि किसी व्यक्ति के व्यवहार को बदलना है तो उसके मनोभावों को बदलना आवश्यक है। उदाहरणार्थ यदि कोई लड़का अपने माता-पिता से द्वेष करता है और पास्टर को भी यह बात बताता है तो उसे केवल यह उपदेश देने से कि ‘‘तुम्हें अपने माता-पिता को प्यार करना चहिए, क्योंकि आज्ञाकारी पुत्र का यही कर्त्तव्य है और सब आज्ञाकारी पुत्र ऐसा करते हैं’’ वह अपने माता पिता को प्यार नहीं करेगा। प्रवचन से लड़का बदलने वाला नहीं। इसके बदले यदि उस लड़के को अपने माता-पिता के प्रति द्वेष भावना को शब्दों में व्यक्त करने का अवसर दिया जाए तो इससे उसके हृदय में एकत्रित द्वेष की भावना से उसे छुटकारा मिलेगा। जब द्वेष जैसी नकारात्मक भावनाओं से छुटकारा मिल जाता है तब प्रेम और स्नेह जैसी सकारात्मक भावनाओं को पनपाने और बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए।

4- व्यक्तित्व का विकास द्वन्द्वों के रचनात्मक प्रयोग से होता है।:-

द्वन्द्व मानव जीवन में सब स्थानों में, सब समयों में एवं सब स्तरों पर पाया जाता है। यह माना जाता है कि बच्चा जब माँ के गर्भ में रहता है तो उसकी बढ़ती के लिए उसे पूर्णतः स्वस्थ वातावरण मिलता है। जब वह गर्भ की सुरक्षित दुनियां को छोड़कर बाहर निकलता है तो सब प्रकार की समस्याओं में आता है और दूसरे मानवों की सहायता से उसे अपने जीवन यापन के लिए संघर्ष करना पड़ता है। उसे प्रतिकूल भौतिक वातावरण के साथ ही उसे समाजिक वातावरण और अपनी अभिलाषाओं और प्रेरणाओं के बीच संघर्ष का सामना करना पड़ता है। उसके सहज प्रवृत्तिगत अभिप्रेरण एवं समाजिक माँगों के बीच द्वन्द्व का भी संतोषप्रद हल उसे निकालना पड़ता है। एक बच्चा भूखा होने पर खाना माँगता है। वह हर भोजन को अपने ही ढ़ंग से नहीं खा सकता। इसके लिए उसे दूसरों पर निर्भर होना पड़ता है। उसे समंजन सीखना पड़ता है। माँ उसे दाहिने हाथ से खाने को कहती है और बाएं हाथ से खाने को मना करती है। सामाजिक माँगें उसकी प्रेरणाओं की तुरन्त संतुष्टि में बाधा उत्पन्न करती हैं। उसे कई प्रकार के लोगों और उपायों से रोका जाता है। वह एक व्यक्ति के रूप में उसी समय उन्नति करता है जब कि वह अपने द्वन्द्वों का रचनात्मक रूप में सामना करता है और उनका अपने विकास के निमित्त उपयोग करता है।

परामर्शदाता यह प्रयत्न करेगा कि लोगों के अन्दर पाए जाने वाले भावस्रोतों को ऐसा सशक्त करे कि वे व्यक्ति अपनी परिस्थिति को समझ सकें तथा संतोषप्रद समंजन कर सकें।

5 - व्यक्ति किसी परिस्थिति अथवा दूसरे लोगों के प्रति अपने पूर्ण व्यक्तित्व से प्रतिक्रिया करता है।:-

समस्याएं अस्वस्थ भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के कारण उत्पन्न होती हैं। पर्यावरण बदले बिना लोग सुखी नहीं रह सकते। बहुत से लोगों की भलाई के लिए पर्यावरण का परिवर्तन आवश्यक है। जैसे एक छात्रा को स्कूल परिवर्तन के कारण कंपकंपी आने लगी पुनः अपने पूर्व स्कूल में वापस आने पर वह स्वस्थ हो गयी।

Creation Autonomous Academy

6- प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में एक गुप्त कक्ष है।:-

व्यक्ति अपनी गुप्त बातें उस समय तक दूसरे को प्रकट नहीं करता जब तक कि उसे यह निश्चय न हो जाए कि वह व्यक्ति उन बातों को गुप्त रखेगा।

मंडली के सदस्य पास्टर के पास अपने जीवन की गुप्त बातें, आन्तरिक द्वन्द्व और निराशाओं को लेकर केवल उसी समय आते हैं। जब उन्हें अपने पास्टर पर पूर्ण भरोसा रहता है अर्थात उनको निश्चय रहता है वह उनकी समस्या हल करने में समर्थ है और कि सब बातों को अपने तक ही सीमित रखेगा। पास्टर को मानव व्यवहार को समझने और मानवीय संबंधों में भावनात्मक एवं आध्यात्मिक परिपक्वता प्राप्त करने के द्वारा परामर्शदाता के कार्य के लिए सक्षमता प्राप्त करना चाहिए।

अध्याय -12

पास्तरी परामर्शदाता के गुण एवं योग्यताएं

यदि पास्टर एक सफल परामर्शदाता बनना चाहता है तो उसमें विशिष्ट गुण होना चाहिए। यह आवश्यक है कि एक परामर्शदाता के गुणों और उसकी योग्यताओं की सूची बनाई जाए जिससे पास्टर उनको प्राप्त करने और उनमें उन्नति करने का सफल प्रयास कर सके।

1 - पास्तरी परामर्शदाता एक परिपक्व व्यक्ति होना चाहिए ।:-

एक पास्तरी परामर्शदाता मसीह यीशु द्वारा प्राप्त सिद्ध मनुष्यत्व को धारण करने का प्रयास करने वाला व्यक्ति है। इब्रानियों की पत्री का लेखक ऐसे विकसित मसीहियों का वर्णन करता है जिनकी ज्ञानेन्द्रियां ''अभ्यास के कारण भले-बुरे की पहिचान में निपुण हो गयी हैं। (इब्रा० 5:14) केवल वही व्यक्ति, जिसने मानसिक, भावनात्मक और आत्मिक परिपक्वता पर्याप्त मात्रा में प्राप्त कर ली है, किसी व्यथित व्यक्ति में शांति और संतुलन का संचार करने में परामर्शदान संबंधों का उपयोग कर सकेगा।

(क) एक परिपक्व व्यक्ति का गुण यह है कि उसमें पूर्ण मानसिक संतुलन रहता है।
(ख) वह उन लोगों के साथ रहने और, काम करने के योग्य है, जो स्वभाव, आदर्शों व आकांक्षाओं में उससे भिन्न हैं।
(ग) उसमें अपने को और अन्य व्यक्तियों को, उनकी दुर्बलताओं एवं सबलताओं को समझने की अर्न्तदृष्टि होती है।

परामर्शदाता को यह प्रयत्न करना चहिए कि वह सदा दूसरों को ग्रहण करने वाला और समझने वाला हो। वह अपने में तथा परामर्श लेने वालों में सकारात्मक गुणों को विकसित कर सकता है।

2 - पास्टर की अभिरूचियाँ व्यापक या बहुमुखी हों।:-

एक पास्तरी परामर्शदाता अपने सदस्यों की ठीक सहायता उसी समय कर सकेगा जब उसकी अभिरूचियाँ व्यापक या बहुमुखी होंगी।

मण्डली के सदस्य और वे जो परामर्श पाने उसके पास आते हैं जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं। उनके जीवन की अपनी विशेष शैली और परिभाषिक शब्दावली होती है। पास्टर यदि ऐसे लोगों को समझने के लिए उदार हो और उनसे उनके विषय तथा उनकी अभिरूचियों के विषय सीखने वाला हो तो अवश्य ही वह उनको समझेगा और उनकी उचित सहायता कर सकेगा। इसका अर्थ है कि पास्टर को संसार के विषय और मनुष्यों के विषय साधारण ज्ञान होना चाहिए। उसे यह भी जानना चाहिए कि वे कौन कौन सी शक्तियाँ हैं, जो जीवन के सब विभिन्न स्तरों के मनुष्यों पर प्रभाव डालती हैं। उदाहरण के लिए उसे मालूम होता है कि किसी कारखाने का एक मजदूर एक समस्या बन गया है और उसे काम पर से निलम्बित कर दिया गया है तो पास्टर को जानना चाहिए कि इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं। सम्भव है कि मजदूर का स्वास्थ ठीक नहीं है। काम करने का वातावरण या मजदूरी उचित नहीं है। उसका निरीक्षक उसके काम की प्रशंसा कभी नहीं करता है। शायद उसे अपनी पत्नी की ओर से कोई कठिनाई है। संभव है उसका विवेक उसे दोषी ठहराता है। उसकी परिस्थिति की कठिनाइयाँ कदाचित उसकी जन्मजात प्रवृत्तियों और उसके अहम की धारणा के बीच आन्तरिक द्वन्द्व के कारण उत्पन्न हुई हों। संभव है कि उसकी परिस्थिति के उत्पन्न होने में अनेक कारण प्रभावक रहे हों। केवल वह पास्टर ही, जिसकी सहानुभूति बहुत व्यापक है, ऐसी अनेक समस्याओं में उलझे हुए मनुष्य को परामर्श दे सकता है।

Creation Autonomous Academy

3 - पास्टर को मसीह में प्रकट जीवन के अर्थ के विषय पूर्ण बोध व निश्चय होना चाहिएः-

पास्टर को जीवन के उस अर्थ और चरमोत्कर्ष के विषय पूर्ण बोध एवं निश्चय होना चाहिए जो युग युग से परमेश्वर मनुष्यों पर प्रकाशित करता आया है और जो पूर्णतः हमारे प्रभु यीशु मसीह में प्रकाशित हुआ है।

पास्टर को जीवन के लक्ष्य के सम्बन्ध में स्पष्ट एवं निश्चित ज्ञान होना चाहिए। साथ ही उसे इस बात का निश्चय भी होना चाहिए कि जीवन के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रतिदिन कदम बढ़ाना आवश्यक है। पास्टर यह भी जानता है कि बिना कठोर परिश्रम और कष्ट के इस संसार में किसी भी सार्थक बात को प्राप्त करना असंभव है। जीवन की कुछ समस्याएं इसलिए उत्पन्न होती हैं कि लोग अपने मानवीय अस्तित्व की वास्तविकताओं का सामना करने को तैयार नहीं होते।

पास्टर मसीह के अनुशासन एवं मार्ग-दर्शन के अधीन रहेगा। यही एक उपाय है जिससे वह यथायोग्य परिपक्व व्यक्ति बन सकेगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय - 13

परामर्शदान हेतु कुछ सामान्य समस्याएं

मानवीय समस्याएं इतनी विविध एवं उलझी हुई होती हैं कि उनको पूर्ण और स्पष्टतः क्रमबद्ध करना, उनका विश्लेषण करना, उनका विवेचन करना असंभव है, और उनके लिए सरलता से उपचार के नुस्खे बताना भी असंभव है। फिर भी हम यहाँ पर कुछ सामान्य समस्याओं का विवेचन करेंगे।

1 - विवाह और पारिवारिक संबंध सम्बन्धी परामर्शदान

विवाह सम्बन्धी परामर्शदान की आवश्यकता :-

पास्टर से विवाह संस्कार के लिए निवेदन किया जाता है। अधिकांश विवाहों के सम्बन्ध में इस निवेदन से पहले पास्तर को कोई जानकारी नहीं दी जाती। कई विवाहों में विवाह करने वालों से केवल विवाह के विधि के समय ही पास्तर की भेंट होती है। बहुत से विवाहों में दूल्हा दुल्हिन विवाह विधि के समय ही पहली बार एक दूसरे को देखते हैं। उनमें आपस में कोई प्रेम नहीं होता। अधिकांश विवाह सम्बन्धों में समस्या उत्पन्न हो जाती है। कुछ लोग अनुभव करते हैं कि उनका विवाहित जीवन ठीक से नहीं चल रहा है। वे परामर्शदान की आवश्यकता का अनुभव करते हैं। उन लोगों को परामर्शदान की निश्चित आवश्यकता है जिनकी वैवाहिक जीवन नैया तीव्र लहरों में से चल रही है और उन्हें इस खतरे का सामना करना पड़ता है कि कहीं वह डूब न जाए।

Creation Autonomous Academy

सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए अनुकूलता :-

सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए निम्नलिखित बराबरी 'मेल' की स्थितियाँ होना चाहिए।-

1 - वर और वधू शारीरिक दृष्टि से बेमेल नहीं होना चाहिए।

2 - वर और वधू की आयु में मेल होना चाहिए ।

3 - सामाजिक और आर्थिक स्थिति में स्त्री और पुरूष बराबरी वाले होना चाहिए।

4 - साम्प्रदायिक एवं धार्मिक मेल हो।

5 - चरित्र समान हो। दोनों के चरित्र पवित्र हों।

परम्परागत भारतीय विवाह में उक्त अनुकूलता होने पर विवाह के लिए लोग राजी हो जाते हैं।

जब दो जवान जो एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं, प्यार करते हैं और विवाह करना चाहते हैं तब उनकी इस बात में सहायता करना चाहिए कि वे उपरोक्त प्रतिमानों के आधार पर मेल या अनुकूलता की जाँच करें।

सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनः-

विवाह की परंपरागत प्रणाली आज सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों के प्रतिघात से बड़ी शीघ्रता से बदल रही है। पास्तरी परामर्शदाता को इन परिवर्तनों के प्रति सजग और संवेदनशील होना चाहिए। तब ही वह विवाहित जीवन की समस्याओं को समझने में लोगों की सहायता कर सकेंगे।

आज कल लड़के-लड़कियाँ स्कूलों-कालेजों में पढ़ते हैं। स्त्री-पुरूष स्कूलों, कार्यालयों, दूकानों, अस्पतालों, कारखानों और यातायात सेवा में एक साथ कार्य करते हैं। दोनों के आर्थिक स्तर एक समान हैं। जब पुरूष और स्त्रियों को मिलने के अवसर मिलते हैं, तो यह स्वाभाविक है कि परस्पर आकर्षित हों और प्रेम करने लगें। और वे विवाह करना चाहते हैं। काफी जवान लड़के - लड़कियाँ सामाजिक रूढ़ियों के अनुरूप व्यवहार करते हैं और अपने धर्म की रीतियों और विधियों के अनुसार विवाह करते हैं। परन्तु कुछ सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं की उपेक्षा करके विवाह बन्धन में बन्ध जाते हैं। कुछ जवान प्रेमी और प्रेमिकाएं अपने लिए और अपने माता-पिता के लिए समस्याएं उत्पन्न करते हैं।

साहित्य, सिनेमा, पाश्चात्य सभ्यता, यातायात एवं संचार क्रांति के कारण भी परिवर्तन हो रहा है। आजकल रोमांस और प्यार नई पीढ़ी में आसामान्य बात स्वीकृत हो रही है। पश्चिमी सभ्यता में स्त्री-पुरूष के विवाह के पूर्व सम्पर्क और विवाह के बाद जीवन की प्रणाली नई पीढ़ी द्वारा अपनाई जा रही है। परंपरागत प्रबन्धित विवाह की प्रणाली के स्थान पर धीरे-धीरे प्रेम विवाह प्रणाली आती जा रही है। रजिस्टर्ड विवाहों की संख्या बढ़ती जा रही है।

इन परिवर्तनों के कारण, माता-पिता और जवान लोग भी विवाह के सम्बन्ध में गहन सोच-विचार कर रहे हैं। इनके कारण निश्चित रूप से अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसलिए विवाह करने वालों को विवाह सम्बन्धी परामर्श तथा बेचैन माता-पिता को तत्सम्बंधी सहायतार्थ परामर्श देना आवश्यक है।

प्रेम की घटनाएं सामान्य होती जा रही हैं। परन्तु समाज अभी भी विवाह के पूर्व प्रणय-व्यापार का समर्थन नहीं करता। इसलिए जो लड़का-लड़की एक दूसरे के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं उनको अपने भावों को गुप्त रखना पड़ता है। इससे द्वन्द्व उत्पन्न होता है। सामान्य यौन प्रवृत्ति और समाज का विशेषकर परिवार का समर्थन प्राप्त करने की भावना के बीच द्वन्द्व होता है। व्याह होने के बाद भी समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

विवाह के लिए पास्तर का मार्गदर्शन आवश्यक है।:-

यदि लोगों को वैवाहिक जीवन का सुख अपने लिए तथा दूसरों के लिए प्राप्त करना है तो उनको विवाह के पूर्व और विवाह के पश्चात किसी न किसी की सहायता और मार्गदर्शन आवश्यक है। पास्टर इस प्रकार की सहायता कर सकते हैं क्योंकि उनका काम ही ऐसा है कि विवाह के सम्बन्ध में लोग उनके पास विवाह के पहले और कभी-**कभी** विवाह के बाद भी आते हैं। यदि पास्तर परामर्श देना चाहता है तो उसे अपने आपको इस कार्य के लिए तैयार करना होगा।

पास्तर विवाह के उद्देश्य को जाने :-

विवाह सम्बन्धी परामर्शदान के लिए पास्तर को सही रूप में जानना होगा कि मनुष्य के लिए परमेश्वर की योजना में विवाह का क्या उद्देश्य है, कि विवाह में यौन और व्यवहार कैसा होना चाहिए, कि विवाह के सम्बन्ध में कलीसिया और सरकार द्वारा नियम क्या हैं और कि प्रेम का स्वरूप क्या है। विवाह के सब पक्षों के सम्बन्ध में पास्तर को अध्ययन और चिन्तन करना चाहिए। पास्तर को विशेष रूप से उन विवाह विधियों का अध्ययन करना चाहिए जिसमें विवाह सम्बन्धी मसीही मान्यता झलकती है।

Creation Autonomous Academy

विवाह के उद्देश्य :-

1: **सन्तान उत्पत्ति** के लिए ठहराया गया है कि उनका प्रतिपालन परमेश्वर के भय और शिक्षा में और उसके पवित्र नाम की महिमा के लिए हो।

2: विवाह इसलिए ठहराया गया है कि पुरूष और स्त्री के बीच जो **पारस्परिक लगन एवं प्रेम** स्वभाव ही से होता है वह पवित्र किया जाय और कि वे अपने जीवन भर इस दशा में **पवित्रता** से रहें।

3: विवाह उस **परस्पर संगति, सहायता और शान्ति** के लिए ठहराया गया जो सुख में और दुख में भी एक दूसरे से मिलनी चाहिए।

विवाह का निर्धारण समाज ने नहीं किया वरन् सृष्टिकर्त्ता परमेश्वर ने किया। ‘‘सृष्टि के आरम्भ से परमेश्वर ने उन्हें नर और नारी बनाया। इस कारण पुरूष अपने माता -पिता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे। अतः अब वे दो नहीं वरन् एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा उसे मनुष्य अलग न करें।’’ (मरकुस 10:6-9) अतः विवाह एक पवित्र बन्धन है।

पास्तर विवाह सम्बन्धी सरकारी और कलीसियाई कानून को जानेः-

भारत में सब नागरिकों के लिए कोई एक कानून नहीं है। विवाह का हिन्दू कानून अलग है, मुस्लिम कानून अलग है। इंडियन क्रिश्चियन मैरेज एक्ट भी अलग है। फलस्वरूप प्रत्येक धर्मावलम्बी के लिए तलाक का कानून भी भिन्न है। यदि मण्डली के सदस्य पास्तर के पास विवाह सम्बन्धी परामर्श के लिए आते हैं तो पास्तर को विवाह की सारी कार्यवाही के सम्बन्ध में, विवाह में सब कानूनी बाधाओं के और कानूनी अलगाव और विवाह -विच्छेद के विषय पूरी जानकारी उनको देना चाहिए।

(क) समूह के सामने :-

विवाह कभी भी अकेले में नहीं होता। विवाह हो जाने पर गोपनीयता होती है। परन्तु विवाह की धर्मक्रिया जनसाधारण के समक्ष होती है। इसलिए विवाह के स्वरूप को समझते हुए विवाह की पुकार दी जाती है। विवाह के दो या तीन गवाह होते हैं। विवाह को पंजीकृत किया जाता है और विवाह सम्पन्न होने की घोषणा की जाती है। यदि स्त्री -पुरूष चुपचाप रहने लग जाएँ तो उनको शर्म आएगी। विवाह हो जाने के बाद उनको बधाई दी जाती है क्योंकि वे एक दूसरे से घनिष्ट मानवीय सम्बन्ध में जुड़ जाते हैं जिसमें आने वाली पीढ़ी के लिए ऐसे परिणाम निहित रहते हैं जिनके विषय भविष्य कथन नहीं किया जा सकता।

(ख) प्रेम संबंध :-

Creation Autonomous Academy

विवाह प्रेम का संबंध है। उसका सारतत्व है पारस्परिक दान। पति- पत्नी अपने शरीर, मन और आत्मा को एक दूसरे को देते हैं। विवाह में उनका यौन सम्बन्ध उनके पारस्परिक प्रेम की अभिव्यक्ति है और एक दूसरे के प्रेम की वृद्धि का साधन है। पति-पत्नी को यौन-सम्बन्धी शरीर विज्ञान की और यौन व्यवहार की जानकारी होना चाहिए जिससे दोनों को अधिक से अधिक सन्तोष प्राप्त हो सके। यदि उन्हें यौन सम्बन्ध में कोई कठिनाई होती है तो उन्हें किसी सक्षम और सहृदय डॉक्टर से सलाह लेना चाहिए। मनोवैज्ञानिक तत्वों के कारण यौन क्रिया एक या दोनों के लिए सन्तोषविहीन हो सकती है। यदि यौन क्रिया सन्तोषदायक नहीं होती तो जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी असन्तोष फैल जाता है। पारस्परिक संबन्ध में कभी-कभी जो तनाव नगण्य बातों पर प्रकट होने लगता है उसकी जड़ सम्भवतः यौन सम्बन्ध में होती है।

(ग) समंजन :-

वैवाहिक जीवन में कई समंजन करने पड़ते हैं। ये समंजन बड़े उलझे हुए भी होते हैं। पहले पहल तो एक दूसरे के प्रति सभी बातों में समंजन करना पड़ता है। शारीरिक, आर्थिक और सब प्रकार के उत्तरदायित्वों के सम्बन्ध में समंजन करना पड़ता है। एक दूसरे के प्रति प्रेम के द्वारा एक दूसरे को समंजन करने के लिए शक्ति प्राप्त होती है। यदि समंजन में आदतों का टूटना भी सम्मिलित हो जाता है तो इससे एक को या दोनों को दुःख होता है। उदाहरणार्थ, यदि पति बीड़ी, सीगरेट पीने वाला है और पत्नी को यह पसन्द न हो तो वह चाहेगी कि पति बीड़ी-सिगरेट पीना बन्द कर दे। संभव है कि आर्थिक कारणों से ऐसा करना आवश्यक है। पति सच्चा प्रयास कर सकता है। सफल होना न होना दूसरी बात है। यदि वह असफल होता है तो उसे विफलता का अनुभव होता है और पत्नी को बुरा लगता है। इसी प्रकार के अन्य छोटे-मोटे समंजन करने पड़ते हैं। वैवाहिक जीवन की सफलता बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है कि पति-पत्नी आरम्भ में ही कितना पारस्परिक समंजन करते हैं।

विवाह सम्बन्धी परामर्शदान :-

पास्टर यह देख सकते हैं कि किसी के वैवाहिक जीवन में द्वन्द्व पैदा हो रहा है। सदस्य आकर उसके समक्ष विवाह सम्बन्धी समस्याओं का वर्णन करते हैं। पास्तर उनको समझा सकता है। परन्तु वह समस्याओं के सम्बन्ध में बात शुरू करने में हिचकता है क्योंकि वह उनके जीवन के अन्तरतम मन्दिर में उस समय तक प्रवेश न करना चाहेगा जब तक वे स्वयं उसे आमंत्रित न करें। अतः यदि पति-पत्नी स्वयं परामर्श न लें तो विवाह सम्बन्धी परामर्शदान कठिन है।

जब पति या पत्नी वैवाहिक जीवन की समस्या को लेकर आता या आती है तब पास्तर को चाहिए कि सुने और उसे अपनी भावनाओं को पूरी तरह व्यक्त करने दे कि उसका हृदयपात्र खाली हो जाए। संभव है कि इससे उसे यह समझने में सहायता मिले कि दोनों के बीच तनाव में आंशिक दायित्व उसका भी है। परन्तु समस्या उसी समय सुलझ सकती है जब दूसरा साथी भी इस तनाव के सम्बन्ध में अपना दायित्व समझे। इसलिए समस्या प्रस्तुत करने वाले पहले साथी की अनुमति से पास्टर को दूसरे साथी से भी भेंट करना होगा। वह कई बार पहले पति-पत्नी दोनों से अलग-अलग मिलकर समस्या पर विचार-विमर्श करेगा। उसके बाद दोनों से एक साथ भेंट कर यह प्रयास करेगा कि वे किसी निर्णय पर पहुँच सकें जो दोनों को मान्य हों। वे बिना अनुचित मानसिक वेदना के उस निर्णय को कार्यान्वित करेंगे। पास्टर को याद रखना चाहिए कि किसी को दोषी ठहराने या उपदेश देने से उन लोगों को कोई लाभ नहीं होता जो मानसिक वेदना से आक्रांत होते हैं। समस्या समाधान के बाद उन्हें मण्डली की संगति में शामिल करें।

2. विवाह -पूर्व परामर्शदान

Creation Autonomous Academy

यह पास्टर की एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक सेवा है। परन्तु कोई भी पास्तर इस रोग-उपचार कार्य से संतुष्ट नहीं रह सकता। पास्तर जितना रोगोपचार के लिए प्रयत्न करता है, उतना ही या उससे अधिक इस बात के लिए प्रयत्न करेगा कि वैवाहिक संबंध भंग होने की रोकथाम की जाए जैसे आज डाक्टर लोग जनता को रोगों से बचाने के उपायों पर अधिक जोर देते हैं। यह आवश्यक है कि युवक और युवती को विवाह से पूर्व ऐसा तैयार किया जाए कि वे विवाह को सफल बनाने की आकांक्षा एवं योग्यता प्राप्त कर सकें। इस तैयारी के लिए उनको मार्गदर्शन एवं परामर्शदान की आवश्यकता है।

विवाह एक आजीवन संबंध है।:-

विवाह एक आजीवन संबंध है। इस संबंध में दो व्यक्तियों के संपूर्ण व्यक्तित्व का घनिष्ट एवं संगुफित बंधन निहित है। इस संबंध में दोनों एक दूसरे को अपना शरीर, मन और आत्मा निःसंकोच पूर्णरूपेण सौंपते हैं। विवाह संबंध का समाज के वर्तमान और भविष्य पर भी प्रभाव पड़ता है। चूँकि विवाह संबंध का इतना बड़ा महत्व है, इसलिए किसी

को भी बिना उपयुक्त तैयारी के दाम्पत्य जीवन में प्रवेश नहीं करना चाहिए। पास्तर विवाह -विधि सम्पन्न करता है। अतः इस दिशा में पास्तर का अपनी मंडली के सदस्यों के प्रति बड़ा महत्वपूर्ण दायित्व है। अतः पास्तर और मंडली के सदस्यों को मिलकर परामर्शदान के लिए दीर्घकालीन और अल्पकालीन योजनाएँ बनाना चाहिए। इससे पूर्व कि वर और वधू अपनी नौका को जीवन सागर में डाल दें, उनको विवाह के संबंध में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहिए। यह बात विशेष रूप से आज के युग में सत्य है जब समाज का ढांचा टूट रहा है और जीवन के नये मूल्य सामने आ रहे हैं।

विवाह की तैयारी :-

विवाह की तैयारी बहुत पहले से शुरू होना चाहिए। यह तैयारी उस समय से बहुत पहले शुरू होना चाहिए, जब एक युवक और युवती एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। यह निश्चित है कि जब युवक और युवती एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते हैं तब उनको मार्गदर्शन की आवश्यकता है। इस मार्गदर्शन को हम विवाह पूर्व परामर्शदान कहें तो उचित होगा।

वैवाहिक जीवन में समस्याएँ:-

वैवाहिक जीवन में अनेक समस्याएँ उपस्थित होती हैं। यौन विषय के प्रति उचित जानकारी और अभिवृत्ति विवाह की तैयारी का आवश्यक अंग है। अतः मण्डली की मसीही शिक्षा कार्यक्रम में यौन विषय के शिक्षण को भी स्थान मिलना चाहिए । पास्तरी परामर्शदाता को यौन भावना के विकास की जानकारी होना चाहिए।

पास्तर का दायित्वः-

विवाह पूर्व परामर्शदान पास्तर का दायित्व एवं शुभ अवसर है। मसीही-विवाह विधि सम्पन्न किए जाने के लिए वर और वधू को दो चार बार पास्तर से भेंट करना ही पड़ता है। यदि विवाह विधि संपन्न करने से पूर्व वर और वधू से भेंट करने की योजना बनाकर पास्तरी परामर्शदान के विशेष उद्देश्य से उनसे भेंट करता है और विवाह सम्बन्ध के विषय उनको परामर्श देता है, तब विवाह पूर्व परामर्शदान का चलन हो जाएगा। यह निश्चित है कि जवान लोग इस प्रकार के परामर्श और मार्गदर्शन के लिए तैयार हैं और इसकी अपेक्षा करते हैं। अधिकांश कलीसियाओं में विवाह करने वाले दोनों पक्षों (वर और वधू) को विवाह की सूचना की दो प्रतियों पर हस्ताक्षर करके पास्तर को देना पड़ता है। जितना संभव हो सके दोनों से स्वतत्रं और मैत्रीपूर्ण वातावरण में मिल सकता है। उन्हें परामर्श दे सकता है।

3. शोकितों को परामर्शदान

1.मृत्यु का दुःखः-

Creation Autonomous Academy

एक बात मनुष्य निश्चित रूप से कह सकता है। वह यह है कि वह मरेगा। कुछ लोगों की सामान्य रूप से मौत होती है। परन्तु कुछ लोगों की अत्यन्त दुःखपूर्ण स्थितियों में मौत होती है। मौत सबके घर में होती है। इसलिए गमी या शोक का अनुभव सबको होता है। कुछ लोगों को शोक का अनुभव अल्पायु में ही होता है, कुछ को दीर्घायु में। कुछ लोगों को शोक के आने की सूचना पहले से होती है, कुछ पर अचानक शोक का पहाड़ टूट जाता है। परन्तु जब कभी शोक आता है तब वह जीवन पर गहरा घाव कर जाता है। मसीही पास्तर का यह सौभाग्य और कर्त्तव्य है कि शोक संतप्त सदस्यों से उचित पास्तरी व्यवहार करे। पास्तर यीशु मसीह की शान्ति और सांत्वना के साथ ऐसे सदस्यों से भेंट कर सकता है।

2. शोकितों की प्रतिक्रियाः-

शोकितों की भावनात्मक प्रतिक्रिया दो प्रकार की हो सकती है।

(क) प्राकृतिक शोक प्रतिक्रियाः-

जब कोई व्यक्ति अपने प्रिय जन की मृत्यु पर जोर-जोर से रोता और आँसू की धारा बहाता है, तो यह मनुष्योचित बात है। यीशु अपने मित्र लाजरस की कबर पर रोया। जब मित्र और रिश्तेदार संवेदना व्यक्त करने आते हैं तो शोक की धारा फिर उमड़ पड़ती है । जब मृतक के शव को ले जाने लगते हैं तो फिर रोना आ जाता है। शव को घर से निकालने से पहले इस प्रकार के रूदन और शोक की घड़ी में पास्तरों को दुआ- प्रार्थना करना पड़ता है और उनको बड़ी उलझन या परेशानी महसूस होती है।

कुछ शोकित ऐसे होते हैं जिनको ऐसा लगता है कि उनसे कुसूर या अपराध हो गया है। वे यह सोचते हैं कि जो उनका प्रिय उनके बीच से चला गया है उसके लिए उन्होंने ठीक समय पर ठीक बात और ठीक उपाय नहीं किए। एक जवान स्त्री के पति का देहान्त हो गया। वह इसलिए बड़ी दुखित हुई कि बीमारी में उसके पति को वह बिस्कुट न दे सकी जो वह मांगता था।

(ख) रोगग्रस्त शोक प्रतिक्रियाः-

कुछ व्यक्ति अपने प्रिय की मौत पर शोक के कोई चिन्ह व्यक्त नहीं करते। वे तुरन्त तो शोक प्रकट नहीं करते परन्तु बाद में करते हैं। मृत्यु की घटना के बाद ही वे रो नहीं सकते। परन्तु बाद में वे शोक से दब जाते हैं। यह शोक विभिन्न रूपों में प्रकट होता है। शोकित व्यक्ति अकेला रहना चाहता है, वह लोगों से मिलना-जुलना नहीं चाहता और किसी प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध नहीं रखना चाहता।

कुछ शोकित ऐसे हैं जो निर्णय करने और अपने आप कोई काम करने की शक्ति खो बैठते हैं। किसी भी बात के सम्बन्ध में वे निर्णय नहीं कर सकते।

3. शोकितों को परामर्शदान :-

इतना तो निश्चित है कि ज्योंही पास्तर को किसी सदस्य की मृत्यु की सूचना मिलेगी वह उस घराने में तुरन्त जाएगा। यदि पास्तर ने परिवार के सदस्यों से व्यक्तिगत सम्बन्ध बना लिए हैं तो पास्तर की भेंट से सांत्वना और ढाढ़स जरूर प्राप्त होगा। घराने के जिन सदस्यों को मृत्यु से अत्यधिक गहरी चोट पहुँची है वे रोएँगे और अपने शोक को शब्दों में व्यक्त करेंगे। पास्तर शोकित व्यक्ति का हाथ अपने हाथ में लेकर या उसके कन्धे पर हाथ रखकर समवेदना व्यक्त करेगा। यदि पास्तर थोड़ी देर चुप रहे तो शोकित व्यक्ति बताने लगेगा कि किन परिस्थितियों में मृत्यु हुई, कि उसके जीवन में कितना अभाव हो गया है, कि उसने क्या खोया है, और कि उस प्रिय के बिना जीना कठिन होगा। पास्तर के लिए यह उचित है कि उस व्यक्ति को कुछ समय तक बोलने दे। जब वह चुप हो जाए तो पास्तर प्रार्थना करने की इच्छा प्रकट करे। एक भजन या गीत धीरे धीरे गाया जाए और प्रार्थना की जाए। उपयुक्त शब्दों में की गयी छोटी प्रार्थना से विलाप करने वालों पर शान्ति का प्रभाव पड़ सकता है। तब पास्तर मित्रों और रिश्तेदारों को सूचित करने के प्रबन्ध पर विचार कर सकेगा। यदि घर वालों ने अपने मित्रों और रिश्तेदारों को सूचना कर दी है तो पास्तर इस बात की जाँच करेगा कि क्या सबको सूचित कर दिया गया है अथवा नहीं। इसके बाद दफन के इन्तजाम का सवाल आता है। सम्भव है कि घर के लोगों को दफन सम्बन्धी ब्योरों की जानकारी न हो। पास्तर को पता रहना चाहिए कि पेटी बनाने वाले कौन हैं और कहाँ रहते हैं। घर के लोगों की मानसिक हालत ऐसी नहीं रहती कि वे इन व्यवहारिक बातों पर ध्यान दें। यदि पास्तर इन सब व्यवहारिक बातों को संभाल ले तो वह उन लोगों के दिलों में जगह पा सकता है, और वे भावनात्मक रीति से तैयार हो जाते हैं कि बाद में पास्तर से बातें कर सकें और उसकी बात सुन सकें।

Creative Autonomous Academy

पास्तर को चाहिए कि दफन के दूसरे दिन या दो एक दिन बाद घर वालों से भेंट करे और अपनी बात कहने का मौका दे ।

सम्भव है कि शोकग्रस्त व्यक्ति अपने मृत प्रियजन व्यक्ति को आदर्श व्यक्ति माने। सम्भ्व है कि वे उसके बड़े कामों, उसकी भलाई और महानता का वर्णन करें। पास्टर को चाहिए कि बातों को सुने और दो एक प्रशंसा के शब्द अपनी ओर से भी कहे।

शोक संतप्त लोग सम्भव है प्रश्न पूछें। यह शोक मुझ पर ही क्यों आया? परमेश्वर ने मेरे एक ही बेटे को क्यों ले लिया? सम्भव है शोकित व्यक्ति परमेश्वर की संरक्षा और व्यवस्था के सम्बन्ध में शंका करे। सहानुभूति पूर्वक उनकी सुनना, धर्मशास्त्र से उनके प्रश्नों सम्बन्धी अंशों को पढ़ना और प्रार्थना ही वे उपाय हैं जिनके द्वारा पास्टर ऐसे शोकितों की वेदना में सहायता कर सकता है।

4. प्रार्थना और वचन का उपयोगः-

(1)प्रार्थना का उपयोगः-

मृत्यु के बाद के शोक समय में कुछ लोग अपसेट हो जाते हैं वे प्रार्थना नहीं करना चाहते। लेकिन यह मुलाकाती पास्तर के लिए असम्भव नहीं है कि वह जाकर स्वयं शान्ति पूर्वक प्रार्थना करे। यदि पास्तर शोकित परिवार को अच्छी तरह से जानता है तो वह ऐसे समय में लगातार मुलाकात करना चाहेगा और शोकित परिवार के लोगों के लिए प्रार्थना करना चाहेगा। वह स्वयं प्रार्थना कर सकता है और कलीसिया से भी प्रार्थना करने के लिए कह सकता है।

(2)वचन का उपयोग :-

बीमारी के समय में, पास्तर की आवश्यकता है कि वह यह जाने कि ऐसे समय में कैसे वचन का उपयोग करे जो आशा और आराम दे सके। आवश्यक है कि ऐसे खण्ड का चुनाव किया जाए जो उस स्थिति के लिए अनुकूल हो।

1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 (मृत्यु के समय)
मत्ती 5:4 (शोक में)
यूहन्ना 11:28-36,11:21-26 (शोक एवं मृत्यु)
यूहन्ना 12:24-26 (मृत्यु)
रोमियों 8:38-39 (मृत्यु)
प्रका० 14:13 (मृत्यु)
प्रका० 7:15-17 (मृत्यु)

Creation Autonomous Academy

5. शोकितों के लिए व्यवहारिक सहायताः-

शोक के समय में पास्टर शोकितों की व्यवहारिक सहायता कर सकता है। कुछ उदाहरण -एक घर में काम करने वाला व्यक्ति दुर्घटना में मरा। पास्टर ने काफेन का प्रबन्ध किया और लाश को उसके परिवार के पास पहुँचाने का प्रबन्ध किया। एक दूसरा उदाहरण एक समुदाय के छः लोग बर्फ में दब गये, गाँव वाले सही तरह से उन्हें संभालने में अपसेट थे। पास्टर उन्हें खोजकर वहाँ लाया जहाँ उनकी देखभाल की जा सके।

मृतक के दफन का प्रबन्ध करना पास्टर की जिम्मेदारी है।

4. अपराध भावना से आक्रांत लोगों को परामर्शदान

लोग विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों या समस्याओं में अपने पास्तर को सम्भागी करना चाहते हैं। एक ऐसी समस्या है व्यक्ति में अपराध भावना। यह भावना उतनी ही पुरानी है जितनी मानव जाति। उत्पत्ति की पुस्तक के तीसरे अध्याय में अपराध-भावना का बहुत स्पष्ट एवं चित्रमय वर्णन हैः ''तब यहोवा परमेश्वर जो दिन के ठण्डे समय वाटिका में फिरता था उसका शष्द उनको सुनाई दिया। तब आदम और उसकी पत्नी वाटिका के वृक्षों के बीच यहोवा परमेश्वर से छिप गए। तब यहोवा परमेश्वर ने पुकारकर आदम से पूछा, 'तू कहाँ है?' उसने कहा, 'मैं तेरा शष्द बारी में सुनकर डर गया क्योंकि मैं नंगा था; इसलिए छिप गया।' (उत्पत्ति 3:8-10)

अपराध भावना सब कालों में पाई जाती है।ः-

केवल यहूदी और मसीही परम्पराओं में ही अपराध भावना नहीं पाई जाती। यह भावना सब देशों और संस्कृतियों और सब कालों में पाई जाती है। परन्तु सब जातियों तथा सब कालों में इस भावना की एक सी प्रबलता नहीं दिखायी देती। कुछ लोगों में भावना दूसरों की अपेक्षा अधिक प्रबल होती है। इसका कारण कदाचित यह है कि उनमें अधिक भावुक हृदय या विवेक होता है। ऐसे लोग पास्टर के पास सहायता के लिए आते हैं। वे अपराध भावना के कारण उत्पन्न मानसिक पीड़ा से छुटकारा पाना चाहते हैं।

अपराध भावना नैतिकता की मांग का एक पक्ष है।ः-

प्रत्येक व्यक्ति में नैतिकता के प्रति एक आस्था होती है। उसका विवेक नैतिकता का आदेश देता या माँग करता है। अपराध भावना इस नैतिकता की माँग का एक पक्ष है। कोई व्यक्ति जिसमें अपराध भावना होती है वह इस बात का अन्तर पहचानता है कि वह वास्तव में क्या और कैसा है, और क्या और कैसा होना चाहिए। अर्थात अपने स्वरूप की जो कल्पना उसे है उससे वह नीचे गिर गया है। अतः अपराध भावना इस बात पर निर्भर होगी कि मनुष्य ने अपने कर्त्तव्य के विकास की क्या धारणा बनाई है। अपने कर्त्तव्य के विरूद्ध आचरण करने पर अपने को दोषी पाता है। वह अपने को अपराधी अनुभव करता है। यह अनुभव अत्यन्त कष्टदायक अनुभव है। अपराध भावना एक स्वस्थ मानसिक दशा भी मानी जाती है, क्योंकि इससे मनुष्य यह पहचानता है कि उसके जीवन में कोई अनुचित बात पाई जाती है और इसलिए वह अपनी आत्मा के स्वस्थ होने की चिन्ता कर रहा है।

एक युवक सरकारी दफतर में काम करता था। उसे पदोन्नति की एक परीक्षा में बैठना था। उसका एक प्रश्न पत्र बहुत बिगड़ गया था। उसने अपनी उत्तरपुस्तिका को जमा कर दिया, मगर परीक्षक की नजर बचाकर उसने उसे निकाल कर उसके स्थान पर दूसरी उत्तर पुस्तिका रख दी । इस दूसरी उत्तर पुस्तिका में सही उत्तर उसने अपने एक साथी की पुस्तिका से नकल किए थे जो एक तीर्थ यात्रा से सम्बन्धित उपवास में संलग्न था। इससे उस युवक पर यह भय छाया कि कहीं इसका उस पर कोई विनाशकारी प्रभाव न पड़े। इससे उसकी आत्मा को बहुत बेचैनी हुई। उसे नींद नहीं आती थी। उसका मन काम में भी नहीं लगता था। वह अपने भीतर थकान और उदासी का अनुभव करने लगा। उसने दफतर से अवकाश ग्रहण कर लिया। उसके साथियों ने उसमें एक विशेष परिवर्तन देखा। वह अपनी समस्या का वर्णन उनसे करने का साहस नहीं कर सका। वह बहुत दुखी रहने लगा और मानसिक रूप से विक्षिप्त होने की दशा तक पहुँच गया। इसके बाद उसने अपने पास्तर से अपनी समस्या का पूरा वर्णन किया और तब उसे शान्ति मिली। पास्तरों को उनके अभिषेक के समय पश्चाताप करने वालों को पापमोचन घोषित करने का आदेश दिया जाता है तो यह महत्वपूर्ण है कि वे उन लोगों को , जिसमें अपराध भावना होती है, ठीक ढंग से सम्भालने की पद्धतियों को सीखें।

Creation Autonomous Academy

पास्तर अपराध का सामना करने के लिए व्यक्ति को राजी करे।:-

यदि किसी व्यक्ति में किसी निराधार बात के कारण अपराध भावना होती है, तो यह सम्भव है कि उसने अपराध किया है, परन्तु उसका अपराध अचेतन अवस्था का है। इस परिस्थिति में यह अधिक संगत होगा कि उसे कहा जाय कि वह अपराधी है, अपराध की छानबीन की जाय, और अपराध का सामना करने के लिए उसे राजी किया जाय।

पास्तर व्यक्तियों को भावना का वर्णन करने दे :-

कुछ व्यक्तियों में अपराध भावना की धूमिल धारणा उनके विवेक और आवेगों के बीच द्वन्द्व का परिणाम हो सकती है। पास्तर यदि ऐसे व्यक्तियों की अपराध भावना को मानकर चले और उसके निवारण हेतु उन व्यक्तियों को उस भावना का वर्णन करने दे तो पास्तर वास्तव में उनकी सहायता करेगा।

पास्तर व्यक्ति की व्यक्तिगत आवश्यकता अनुसार ही व्यवहार करेः-

पास्तर को ऐसे लोगों की सहायता करने के योग्य होना चाहिए जो अपने विशिष्ट अपराध को प्रकट करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति से जो अपनी यथार्थ अपराध भावना को लेकर आता है, उसकी व्यक्तिगत आवश्यकता अनुसार ही व्यवहार करना चाहिए। परम्परागत नियमानुसार ऐसे व्यक्ति को पाप अपराध स्वीकार करना, उसके लिए अनुताप करना और तब पापों की क्षमा प्राप्त करना आवश्यक है।

पास्तर पाप अंगीकार को सुने :-

यदि पास्तर लोगों के पाप अंगीकार को सुने तो उससे उन लोगों की सहायता हो सकती है।

पास्तर अंगीकार को गोपनीय रखें :-

जो लोग अपने पाप के कारण अपने विवेक में अशान्ति अनुभव करते हैं, उनको यह जानना चाहिए कि पास्टर उनके पापांगीकार को सुनेगा। उनको इस बात का भी निश्चय होना चाहिए कि जो कुछ वे अंगीकार करते हैं उसे गोपनीय रखा जाएगा।

पास्तर की उपस्थिति में व्यक्ति परमेश्वर के समक्ष पापांगीकार करे।:-

पश्चातापी के लिए आवश्यक है कि वह बोले और पाप का अंगीकार करे। यदि पास्तर पापांगीकार सुनता है तो तैयारी के साथ सुने। जो व्यक्ति पापांगीकार के लिए आया है वह पास्तर के सामने घुटने टेके।

पास्तर पाप-मोचन की घोषणा करे।:-

जब व्यक्ति अपने पापों का अंगीकार कर चुकता है तो पास्तर को पाप-मोचन घोषित करना चाहिए। वह इस प्रकार कह सकता है:-

Creation Autonomous Academy

''हमारे प्रभु यीशु मसीह ने कलीसिया को यह अधिकार दिया है कि उन सभों को जो सच्चाई से पश्चाताप करते और उस पर विश्वास करते हैं, पापों की क्षमा घोषित करे। वह अपनी बड़ी दया से तेरे अपराध और पापों को क्षमा करे। उसी अधिकार से जो मुझे दिया गया है मैं तेरे सब पापों की क्षमा घोषित करता हूँ। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में। आमीन।''

पास्तर पाप क्षमा घोषित करने से पूर्व व्यक्तिगत अनुशासन का वर्णन करेः-

पास्तर को चाहिए कि सदस्य को पापों की क्षमा घोषित करने से पूर्व उस व्यक्तिगत अनुशासन का संक्षिप्त वर्णन कर दे जिसका उस सदस्य को अनुसरण करना चाहिए। इस अनुशासन से उस सदस्य को पवित्रता और प्रेम में वृद्धि करने में सहायता मिलेगी तथा वह पुनः उसी पाप में फंसने से अपने को बचा सकेगा।

5. बच्चों की समस्याओं के विषय परामर्शदान

एक समझदार और देखभाल करने वाले पास्तर का उसकी मण्डली के सब सदस्य मित्र और परामर्शदाता के रूप में अपने घरों में आनन्द से स्वागत करते हैं। इस प्रकार का पास्तरी सम्बंध उसे लोगों के जीवन में प्रतिदिन आनेवाली समस्याओं में उचित परामर्श देने का अवसर प्रदान करता है। माता-पिता के सामने जीवन की कुछ सामान्य समस्याएं अपने बच्चों के पालन पोषण के प्रयास से सम्बन्धित हैं।

बाल देखभाल की दस आज्ञाएंः-

1. अपने बच्चों पर अपनी झकों को न थोपिए।
2. याद रखिए कि बालक बालक है,वयस्क नहीं।
3. कठोर व्यवहार मत कीजिए।
4. ऐसा व्यवहार कीजिए कि बच्चा अपने को सुरक्षित अनुभव करे।
5. बच्चे से प्रेम कीजिए।
6. बच्चे को व्यर्थ ही दण्ड न दीजिए।
7. बच्चे को स्वाभाविक रूप से बढ़ने दीजिए।
8. बच्चे के शिक्षण में उतावली न कीजिए।
9. बच्चे के साथ न्यायोचित एवं नम्रतापूर्ण व्यवहार कीजिए।
10. सलाह की अपेक्षा निर्देश अधिक प्रभावशाली होते हैं।

1. खाने और खिलाने की समस्या :-

लगभग सभी माता-पिता बच्चों को खिलाने की समस्या का सामना करते हैं। कुछ समस्याओं का कारण वे परिस्थितियाँ हैं जो उनके वश में नहीं होती हैं। कुछ तो माता-पिता की लापरवाही और अज्ञानता के कारण उठती हैं। माता का दूध बच्चे का स्वाभाविक भोजन है। चिकित्सक बताते हैं कि इसके बदले में और कोई पूर्ण संतोषप्रद भोजन नहीं हो सकता है। बहुत सी माताएं बच्चे को या तो अपना दूध पिलाने में असमर्थ होती हैं अथवा पिलाना नहीं चाहती हैं। स्तन से दूध पिलाने में बच्चा न केवल अपनी भूख मिटाता है पर उससे उसे भावनात्मक सन्तुष्टि भी मिलती है। माता के स्तन पान से बच्चे को एक प्रकार का ऐन्द्रिय संतोष मिलता है। इसलिए बच्चे पेट भर दूध पीने के बाद भी माता की छाती से चिपटे रहना चाहते हैं और अलग किए जाने पर विरोध प्रकट करते हैं। जब बच्चे को स्तन से दूध नहीं पिलाया जाता या नहीं पिलवाया जा सकता है, तो उसके स्थान पर दूसरे प्रकार के भोजन का प्रबन्ध करना पड़ता है।

Creation Autonomous Academy

प्रत्येक बच्चे का दूध पीना छुड़ाना पड़ता है। यदि यह धीमे-धीमें किया जाए तो बच्चा उसे ग्रहण करेगा। कुछ बच्चे होते हैं जो खाने के निर्धारित समय को स्वीकार नहीं करते। कुछ भोजन के गुण तथा कुछ भोजन की मात्रा को ग्रहण नहीं करते हैं।

खाना एक स्वाभाविक और आनन्ददायक क्रिया है। इसलिए साधारणतया बच्चों को इसके लिए न डाँटना -डपटना चाहिए और न इनाम देना चाहिए। यदि बच्चा खाने से इंकार करता है तो कारण पता लगाना चाहिए। संभव है बच्चा बीमार हो अथवा संभव है कि बच्चे को भूख न हो। बच्चों को खाने के लिए कभी जबरदस्ती नहीं करना चाहिए। बच्चे जो कुछ चाहते हैं वह खाएंगे, जितना उनको चाहिए उतना खाएंगे और जब चाहेंगे तब खाएंगे।

2. पेशाब और टट्टी की समस्याः-

बिस्तर गीला करना सब छोटे बच्चों के लिए साधारण बात है। गीला करने पर वे रोते हैं। कपड़ा बदलवाना चाहते हैं। चार बरस की आयु तक गुदा और मूत्रमार्ग की मांस-पेशियाँ विकसित होती हैं। कुछ माता-पिता यह चाहते हैं कि बच्चों की मांस-पेशियाँ विकसित होने के पहले ही बच्चे अपनी पेशाब और टट्टी की क्रियाओं पर नियंत्रण करें।

माता-पिता को निर्णय करना है कि बच्चे का विस्तर भिगाना क्या उसकी किसी आंगिक घटी के कारण है या मनोवैज्ञानिक कारण से है। कारण की खोज करना चाहिए जिससे उचित इलाज हो सके। इस समस्या के निवारण के लिए दण्ड देने और बुरा भला कहने से कोई लाभ नहीं होगा।

3. बाल्यावस्था में ईर्ष्या की समस्या :-

बच्चों में ईर्ष्या या जलन की समस्या निरन्तर देखने में आती है। नव दम्पत्ति हमेशा इसे नहीं समझते और वे इस समस्या को धीरज और बुद्धिमानी से संभालना नहीं जानते हैं। एक, दो या तीन वर्ष के बच्चे के लिए एक और छोटे भाई या बहिन का घर में आ जाना संकट का कारण हो जाता है। अब भाई माँ के प्रेम और देखभाल के लिए प्रतिस्पर्धा का कारण बन जाता है। जब माँ प्रसव के लिए चिकित्सालय जाती है तो वह बच्चा माता की देख रेख से वंचित हो जाता है। विशेषकर यदि वह माँ के साथ सोया करता था। माता के लौटने पर भी उस पर अब पहले के समान ध्यान नहीं दिया जाता है। अब माता के पास दूसरा बच्चा है जिसकी देखभाल करनी आवश्यक है। यदि माता-पिता ने पहले से पहले बच्चे को दूसरे बच्चे के आने के लिए तैयार कर लिया हो तो वह अपने को नई परिस्थिति के अनुकूल शीघ्र और खुशी से बना लेगा। यदि बच्चा अपने छोटे भाई या बहन को ग्रहण नहीं करना चाहता है तो वह अपनी माता से प्रेम और देखरेख पाने के कई बहाने बनाता और हरकतें करता है। वह माँ के बिस्तर में लेट जाएगा और उसके पास ही रहना चाहेगा वह ऐसी कोशिश करेगा कि माँ दूसरे बच्चे की ओर ध्यान न दे। वह उसके स्तन से दूध पीना चाहेगा। यदि ये उपाय काम में नहीं आते तो वह अपने छोटे भाई या बहन को छोड़ने की बात कहता है। वह कहता है,"हमें यह नहीं चाहिए, इसे किसी को दे दो "। कभी-कभी वह अपनी माँ को मारेगा, या काट लेगा। वह छोटे भाई या बहन को भी हानि पहुँचा सकता है। यदि माता-पिता उसके इस आक्रमणशील व्यवहार को सहन नहीं करते तो वह अपने दांवपेंच को बदल सकता है। वह एक ओर बच्चे के प्रति बहुत स्नेह प्रकट करेगा और साथ ही उसे हानि भी पहुँचा सकता है।

यह ऐसी परिस्थिति है जिसमें धीरज और बुद्धिमानी से काम करने की आवश्यकता है। माता-पिता की सहायता की जानी चाहिए कि वे यह समझें कि यह बच्चों की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। जब बच्चा शब्दों या कार्यों द्वारा अपना रोष प्रकट करता है तो माता-पिता को उसका बुरा नहीं मानना चाहिए, परन्तु बच्चे की सहायता करना चाहिए कि नए बच्चे को भाई या बहन के रूप में स्वीकार करे। माता-पिता को यह प्रयत्न करना चाहिए कि बच्चे की असुरक्षा की भावना दूर हो सके। बच्चा प्यार और देखभाल की अपेक्षा करता है और नये रूपों में उसे ये दोनों बातें नये तरीके से दी जानी चाहिए। यदि वह अपने को सुरक्षित अनुभव करता है तो वह धीरे-धीरे दूसरे बच्चे को भाई या बहन के रूप में ग्रहण करेगा। यह उसके सामाजिक सम्बन्ध में बड़ी भारी उपलब्धि होगी।

Creation Autonomous Academy

4. बाल्यावस्था में भय की समस्या :-

सामान्यतया बच्चे जोर की आवाज और अचानक गिर पड़ने से डरते हैं, और किसी बात से नहीं डरते । यदि बच्चा डरता है तो यह समझना चाहिए कि किसी विरोधी पर्यावरण में उसे कष्ट पहुँचा होगा। यदि किसी कुत्ते ने कभी काटा है तो वह उसी कुत्ते से नहीं, सब कुत्तों से डरेगा। कुत्ते को देखते ही उसे अपने कटु

अनुभव का स्मरण होता है। यदि किसी व्यक्ति ने उसे हानि पहुँचाई या धमकाया है तो वह उस व्यक्ति से डरेगा। एक दिन एक डाक्टर किसी घर में बीमार को देखने गये। घर में बच्चा दिखाई दिया। बच्चे से उन्होंने कहा कि वह उसे सूई लगाने आए हैं। उस समय से वह बच्चा केवल उसी डाक्टर से नहीं वरन सब डाक्टरों से डरने लगा। बहुधा माता-पिता जिससे डरते हैं बच्चे भी उससे डरने लगते हैं। कभी-कभी भूत-प्रेत की कहानियां बूढ़े लोग बताया करते हैं। इनसे बच्चों में भय की ग्रंथि बन जाती है। यदि एक बार उनके मानसिक और भावनात्मक जीवन में डर समा जाता है तो फिर उनमें साहस और आत्म विश्वास भरना कठिन हो जाता है। यदि बच्चों को प्रेम और स्वतंत्रता के वातावरण में बढ़ने दिया जाय तो वे अपने को सुरक्षित अनुभव करेंगे और आगे चलकर वे एक साहसी जीवन व्यतीत करने के योग्य होंगे।

5. स्वभाव में चिड़चिड़ापन :-

कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो छोटी ही सी बात पर गुस्सा हो जाते हैं। वे काटते और मारते हैं। अपने माता-पिता और भाई-बहनों को मारते या हानि पहुँचाते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि जो चीज वे माँगते थे वह उन्हें प्राप्त नहीं हुई, या वे किसी काम के करने में असफल रहे हैं। तब वे इतने गुस्से से भर जाते हैं कि अपनी सामर्थ के बाहर भी काम कर बैठते हैं। ऐसे बच्चे आक्रमणशील कामों द्वारा अपने क्रोध को प्रकट करते हैं। कई बच्चे इस आक्रमणशीलता को अपनी ओर मोड़ लेते हैं जमीन पर गिर पड़ते और लोटते हैं या अपने हाथ-पांव भूमि पर पटकते और स्वयं को मारते-पीटते हैं। इस प्रकार वे स्वयं को ताड़ना देते हैं। इस प्रकार के व्यवहार के प्रति बड़ों को धीरज और सहनशीलता धारण करने की आवश्यकता है। यदि बड़े लोग धीरज से काम लें तो बच्चे अपने को वश में करना सीख जाएंगे। आत्म-संयम के लिए उन्हें अपने बड़ों की ओर से सहानुभूति, समझदारी और प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

6. मन्द बुद्धिः-

यदि बच्चा मन्द बुद्धि है तो इससे माता-पिता को न केवल उसके पालन-पोषण में ही कठिनाई का अनुभव होता है, परन्तु वे अपराधी होने का भी अनुभव करते हैं। हमारे साथ ऐसा क्यों हुआ? हमारे किस पाप का यह नतीजा है? वे इस दुर्बलता या घटी का सम्बन्ध किसी धार्मिक या नैतिक नियम के उल्लंघन से जोड़ते हैं। वे स्वयं को क्षमा करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। वे बिना किसी परामर्शदाता की सहायता से स्वयं को तथा बालक को ग्रहण करने को तैयार नहीं होते।

7. विकलांग बच्चा :-

विकलांग बच्चे भी समस्या उपस्थित करते हैं। यदि उन्हें प्रेम से ग्रहण किया जाए, तो वे स्वयं को भी स्वीकार करेंगे और अपने को समाज के अनुकूल बना लेंगे। उदाहरण के लिए, जिन बच्चों का तालू फटा रहता है वे बोलने में कठिनाई का अनुभव करते हैं। शल्य-चिकित्सा द्वारा यह दोष दूर किया जा सकता है। परन्तु सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह है कि उसके माता-पिता, भाई-बहिन उसे सामाजिक रूप से ग्रहण करें, और तब वह भी अपने को स्वीकार कर लेगा।

Creation Autonomous Academy

पास्टर की भूमिका :-

उपरोक्त समस्याओं में पास्टर ही वह स्वभाविक और ग्रहण योग्य व्यक्ति होगा जो माता-पिता को परामर्श दे सकता है। जब माता-पिता इन समस्याओं का वर्णन करते हैं यह सम्भव है कि वे उनके मूलभूत कारणों से परिचित न हों। वे लक्षणों का वर्णन तो करते हैं परन्तु उन्हें यह ज्ञान नहीं है कि यदि वे स्वयं ही अपनी कुछ बातों को ठीक कर लें तो ऐसी समस्याओं का समाधान हो सकता है।

यदि पास्टर प्रत्येक व्यक्ति और परिस्थिति में रूचि लेता है तो ही वह सब व्यक्तियों की सहायता कर सकेगा। पास्टर को यह समझना चाहिए कि जो समस्या प्रस्तुत है उसका माता-पिता और बच्चे से क्या सम्बन्ध है। यदि पास्टर और माता-पिता के सम्बन्ध अच्छे हों तो वे अपने मनों को खोलकर समस्या का ठीक आवलोकन करेंगे और पास्टर से इस बात पर विचार -विमर्श करेंगे कि इस अशान्ति की स्थिति में उनका अपना भाग क्या है। इसी से वे समस्या को ठीक रूप से सुलझाने कि इच्छा और प्रयास करेंगे।

जब पास्टर और माता-पिता के बीच ऐसी समस्याओं पर विचार-विमर्श होता है तो बच्चों को वहां उपस्थित नहीं रहना चाहिए । पास्टर को चाहिए की वर्तालाप के लिए माता-पिता को विश्वास में ले लें।

6. वयोवृद्धों के देख -भाल हेतु परामर्शदान

पास्टर अपनी मंडली के सब लोगों का, चाहे वे किसी भी आयु के हों, रखवाला है। उसे छोटों को प्यार करना और उनको शिक्षण देना है, जवानों का मार्गदर्शन करना और उनको परामर्श देना है और वृद्धों के प्रति सहृदय होना और उनकी सहायता करना है।

वृद्धों के अपने अनुभव हैं जो वे जवानों को बता सकते हैं। परन्तु वृद्ध लोगों की अपनी समस्याएं भी रहती हैं। उनके लिए रचनात्मक कार्य करने का समय मानो चला गया। उनकी शारीरिक और मानसिक शक्तियाँ क्षीण होने लगी हैं। कुछ लोगों का शरीर दुर्बल और मन सजग रहता है। अन्य लोगों का शरीर सबल रहता है परन्तु मानसिक शक्ति क्षीण हो जाती है।

परनिर्भरता :-

वृद्धावस्था में लोग दूसरों पर निर्भर रहते हैं। तौभी वह किसी प्रकार अपनी स्थिति को स्वीकार करने को तैयार नहीं होते। वे बच्चों और नौकरों को आज्ञा देते हैं, परन्तु उनकी आज्ञा का हमेंशा पालन नहीं होता। वे चिड़चिड़े हो जाते हैं। वृद्ध लोग समाज के परिवर्तन के साथ चलने में असमर्थ रहते हैं। वृद्धों को भूतकाल अच्छा लगता है जबकि युवकों को नहीं। इसलिए वे उनकी अनसुनी करते हैं। इससे समस्या खड़ी हो जाती है। वृद्धों को आघात पहुँचता है।

देखभाल :-

कर्त्तव्यपरायण बच्चों को भी वृद्ध लोगों की देखभाल एक बड़ा बोझ लगता है। परिवार के सदस्यों में वृद्ध लोगों की देखभाल करने की कला और भावनात्मक सामर्थ नहीं होती। ऐसी परिस्थिति में बूढ़े लोगों को और उनकी देखभाल करने वालों को बड़े कष्ट का सामना करना पड़ता है।

सेवानिवृत्ति :-

Creation Autonomous Academy

सेवा निवृत्त लोगों को नये आर्थिक और सामाजिक ढाँचे के अनुकूल अपने को बनाना पड़ता है। आमदनी घट जाती है परन्तु खर्च तुरन्त कम नहीं किए जा सकते। पुराने काम-धन्धे और दोस्त बराबर याद आते हैं। ऐसा लगता है कि अब किसी को उनकी आवश्यकता नहीं है।

वयोवृद्धों का उपयोग :-

यदि मंडली ऐसे लोगों की सेवा, उनकी योग्यता और अनुभवों का लाभ उठाकर उन्हें काम में लाए तो इससे उन्हें आनन्द होगा और मंडली मजबूत बनेगी। मंडली को चाहिए कि ऐसे व्यक्तियों की प्रतिभाओं और योग्यताओं का पता लगाकर उनसे उचित सेवा ले। कई लोगों के लिए नए काम सीखना कठिन होगा। परन्तु यदि उनको प्रोत्साहन दिया जाए तो वे मंडली की सहायता कर सकते हैं।

दायित्व की शिक्षा :-

पास्तर को अपने मसीही -समाज को इन वृद्धों के प्रति दायित्व को समझने की शिक्षा देना पड़ेगा।

पास्तर की भूमिका :-

पास्तर वृद्ध लोगों की आवश्यकता समझता है तो वह उनके पास जाएगा और उनसे बराबर संगति रखेगा। वह उनकी सुनेगा और उनकी आवश्यकता का ध्यान रखेगा। वह वृद्धों की आवश्यकताओं, प्रेम की आवश्यकता, संगति की , शान्ति की, अनन्त जीवन की आशा की आवश्यकता के सम्बन्ध में दूसरों से बोल सकता है। पास्तर अपने व्यक्तित्व द्वारा वयोवृद्धों के प्रति मंडली की चिन्ता को व्यक्त कर सकता है। पास्तर ऐसे छोटे समूहों का संगठन कर सकता है जिनमें वृद्ध लोगों को संगति, शान्ति, मनोरंजन और प्रार्थना का अवसर मिल सकता है। परिवार के लोगों को देखभाल के लिए पास्तर प्रोत्साहित करता है।

यदि पास्तर वयोवृद्ध लोगों से मित्रतापूर्ण और प्रेमपूर्ण संबंध बनाने में सफल हो जाता है, तो शांतिपूर्वक प्रभु में सो जाने के निमित्त वह उनकी सहायता करेगा।

7. रोगियों को परामर्शदान

यीशु ख्रिस्त कलीसिया का और संसार का प्रभु है। यीशु को बीमारों की चिंता है। इसलिए कलीसियाओं और कलीसिया के पास्तरों के जीवन में ''बीमारों के लिए विशेष चिंता'' बड़े महत्व का विषय है।

पास्तर के लिए यह आवश्यक है कि वह अस्पताल, डाक्टर, नर्स व अस्पताल में काम करने वालों से परिचित हो।

1. स्वास्थ्य कार्यक्रम :-

स्वास्थ्य और सफाई के कार्यक्रमों और प्रायोजनाओं को शुरू करना और प्रोत्साहन देना आवश्यक है। स्वास्थ्य शिक्षा लोगों तक पहुँचाना चाहिए। टीकाकरण को प्रोत्साहन देना चाहिए।

2. पास्टर अपने पास दवाई की पेटी रखें:-

पास्तर First aid Box सामान्य दवाइयों की पेटी अपने पास रखें। जिससे कि आवश्यकता पड़ने पर उपचार उपलब्ध कराया जा सके।

3. घरों में बीमारों की देखभाल :-

पास्तर को बीमारों से घर पर मिलना चाहिए। बीमारों की हालत के अनुसार पास्तर को कई भूमिकाओं में अपना काम करना पड़ता है। पास्तर को डाक्टर, नर्स, समाज-कार्यकर्ता और पास्तर सब कुछ बन जाना पड़ता है। अभ्यागमन (visit) के सम्बन्ध में कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं।-

1) ज्योंही पास्तर को बीमार के विषय जानकारी मिलती है पास्तर को चाहिए कि जितनी जल्दी संभव हो बीमार से भेंट करे। अच्छा होगा कि ज्यों ही बीमार की सूचना मिलती है पास्तर उसे नोट कर ले ताकि अन्य कामों में लगे रहने में वह मौखिक जानकारी को भूल न जाए।

2) पास्तर स्वयं को बीमारियों से बचाए।

Creation Autonomous Academy

3) पास्तर को चाहिए कि बीमार से मिलने के पहले घर के लोगों से मिल ले और बीमार की बीमारी और किए जा रहे इलाज के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर ले। पास्तर की भेंट न केवल बीमार के लिए वरन परिवार के लिए भी होती है।

4) बातचीत से पास्तर को बीमार की और घर के लोगों की भावनात्मक दशा को समझ लेना चाहिए। तब पास्तर यह विचार कर सकेगा कि उस में इलाज के लिए मार्गदर्शन करना है, अथवा आर्थिक सहायता करना है, अथवा मसीही विश्वास और संगति से प्राप्त होने वाली सहायता करना है। पास्तर की सेवा सम्पूर्ण व्यक्तित्व से संबंधित है, और इसलिए किसी प्रकार की आवश्यकता को छोड़ा नहीं जा सकता।

5) पास्तर की भेंट अल्पकालीन होनी चाहिए और अनेक बार होना चाहिए। यदि बीमार आदमी अपने डर और चिंताओं को समझना चाहता है तो पास्तर उसकी सुने और बीमार आदमी को प्रोत्साहन दे कि वह अपने डर और चिंताओं को बता दे। परन्तु पास्तर को इतनी सतर्कता रखनी होगी कि पास्टर की भेंट के बाद बीमार थक न जाय।

6) घर छोड़ने के पहले पास्तर को प्रार्थना करना चाहिए। यह प्रार्थना बीमार के लिए होगी, तात्कालिक होगी और उन लोगों की आवश्यकता को व्यक्त करेगी।

7) बीमार आदमी कलीसिया का प्रभु भोजी सदस्य है तो उसे प्रभु भोज देने की पास्तर व्यवस्था करे।

8) ऐसे मौके आते हैं जब पास्तर उन बीमारों के बिस्तर के पास होता है जो इस जीवन से बिदा ले रहे हैं। बीमार को और उसके रिश्तेदारों को उसकी मौत के लिए तैयार करना जरूरी होता है। पास्तर के कान उन शब्दों को सुनने को तैयार रहें जो मरने वाला व्यक्ति कहना चाहता है। पास्तर को चाहिए कि वह मरणासन्न व्यक्ति की अनसुलझी समस्याओं और द्वन्द्वात्मक भावों को सुलझाने के लिए तैयार रहे। मौत के बिस्तर के पास पास्तर को शान्त और गंभीर रहना चाहिए और उसकी वाणी स्थिर और भरोसापूर्ण होना चाहिए। पास्तर के संपूर्ण व्यक्तित्व से ऐसा व्यक्त होना चाहिए कि वह यीशु के साथ रहा है। पास्तर प्रार्थना करे।

अस्पतालों में बीमारों की पास्तरी देखभाल :-

1 : पास्तर का एक कार्य यह है कि वह चिकित्सा कर्मचारियों को अपना सेवा-कार्य करने के लिए आत्मिक और भावात्मक रूप से समर्थ करे।

2 : पास्तर डॉक्टर और बीमार के बीच में सम्पर्क कराने वाले के रूप में काम कर सकता है।

Creation Autonomous Academy

3 : बीमारों से अस्पताल में भेंट :-पास्तर अस्पताल में जाकर बीमारों से भेंट करे। अस्पतालों में अस्पताल के स्टाप और बीमार लोगों के साथ पास्तर का व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि जब वह भेंट करने जाए तो उसका स्वागत हो। बहुधा ऐसा होता है कि जब डॉक्टर के इलाज से आराम और स्वास्थ्य नहीं मिलता तब विशेष संकट के समय पास्टर को बुलाया जाता है।

अध्याय-14

पास्तरीय देखरेख की हमारी सेवा का मूल्यांकन

पौलुस ने तीमुथियुस से कहा, ''भक्ति के लिए अपने आपको अनुशासित कर--------इनके लिए प्रयत्नशील रह और इन पर अपना पूरा मन लगा, जिससे तेरी प्रगति सब पर प्रकट हो जाए। अपने ऊपर और अपनी शिक्षा पर विशेष ध्यान दे और इन बातों पर स्थिर रह क्योंकि ऐसा करने से तू अपने और अपने सुनने वालों के भी उद्धार का कारण होगा। (1 तीमु० 4:7, 15-16)

हमारी सेवा का मूल्यांकन :-

महत्वपूर्ण कार्यों में एक व्यक्ति के विकास का मूल्यांकन दूसरों द्वारा किया जाता है। उसका नियोजक अथवा सुपरवाइजर उस पर टिप्पणी करता है और यदि वह सोचता है कि उसका कार्य अच्छा है तो वह उसे पदोन्नत करता है अथवा वेतन में बढ़ोत्तरी करता है। एक किसान कि सफलता उसकी फसल की मात्रा और गुणवत्ता से मापी जाती है। एक व्यापारी अपने लाभों के द्वारा मापा जाता है। लेकिन पास्तर के लिए सरल नहीं है कि वह निश्चित हो जाए कि उसकी सेवकाई प्रभावशाली है। उसने अच्छी तरह से अपने समूह की अगुवाई की और उनकी आवश्यकताओं में उनकी देखभाल की है।

एक सेवक जिस कलीसिया में नियुक्त है उसके प्रति वह जबाबदेह है। एक पास्तर अपने उच्च अधिकारी के प्रति जबाबदेह और जिम्मेदार होता है। वह अधिकारी उसके कार्य का मूल्यांकन करता है। विशेषकर जब नए व्यक्ति की नियुक्ति करना होता है अधिकारी उसका मूल्यांकन करता है। समूह स्वयं पास्तर का मूल्यांकन करता है।

कुछ पास्तर 'स्वयं के परीक्षा' करने का एक अभ्यास निरन्तर करते हैं। वे केवल अपने व्यक्तिगत जीवन का ही नहीं बल्कि अपने कार्य का भी स्वयं मूल्यांकन करते हैं। वे यह मूल्यांकन कुछ महीनों में अथवा साल में एक बार करते हैं।

Creation Autonomous Academy

Bibliography

- Tend my ship
- Outline of Pastoral Counseling
- Introduction of Pastoral Counseling
- Pastoralia: Rev.DanielPatlia, Theological Literature Committee, 1017,Napier Town, Pili Kothi, Jabalpur-48001, MP
- Pastoral care and counseling: www.stjohns_nottm.ac.uk
- Pastoral care and counseling: www.esr.earlham.edu
- Anglican Pastoral care: www.pastoralcare.org.uk
- What is Pastoral care: www.pastoralcareact.org
- Introduction to Biblical care and counseling: www.cwr.org.uk
- What does the Bible say About Pastoral care: www.openbible.info
- Biblical Pastoral care and counseling: www.christiantoday.com
- A Biblical Foundation to Pastoral care: www.academia.edu
- What is the value of Pastoral Counseling: www.gotquestions.org
- Counseling: www.tyndale.ca
- Christian Counseling and Pastoral care: www.eauk.org
- Pastoral care and counseling: www.globalconnections.org

Creation Autonomous Academy

परामर्शदान

Counselling

Dr. Ram Raj David

Duluvamai, Manikpur, Pratapgarh,
Uttar Pradesh – 230202

Email: drramraj64@gmail.com

Creation Autonomous Academy